प्रवासी



लेखक—

कमलाकान्त वर्मा

परिचयकार—

श्री ईश्वरदास जालान एम० ए० बी० एल०

एटर्नी-एट-लॉ, एम० एल० ए०

प्रथमावृत्ति] १९९८ वि० [मूल्य १।।)

प्रकाशकः—
तुलसीप्रसाद खेतान बी० ए०
खेतान हाउस
कलकत्ता ।

मुद्रक :—
भगवतीप्रसाद सिंह
न्यू राजस्थान प्रेस,
७३।ए, चासाधोबापाड़ा स्ट्रीट,
कलकत्ता ।

परिचय

मैं अपने को साहित्य की समीक्षा का अधिकारी नहीं मानता और न किसी साहित्यिक 'वाद' के विषय में अपने मत को अधिकार-पूर्वक निर्णयात्मक कहने का दावा ही रखता, फिर भी मेरे जीवन में कानून, राजनीति और व्यवसाय के समन्वय से जनित शुष्कता के वाह्यावरण को छेद कर जब कभी सत्साहित्य की बूँदें चू पड़ती हैं, तब जो एक भावना स्पष्ट हो पड़ती है वह यह कि 'सत्य' वही है, जो 'शिव' है और जो 'शिव' है, वही 'सुन्दर' है। मुझे 'शिव' उस केन्द्र-विन्दु-सा लगता है, जिसके चारों ओर 'सत्य' और 'सुन्दर' एक नियमित संतुलन से मँडराया करते हैं।

स्पष्ट शब्दों में मुझे सत्साहित्य वही जान पड़ता है, जो जीवन के कल्याण के लिए हो।

आज से प्रायः दस वर्ष पहले मुझे अपने देश के व्यवसायी समाज—मुख्यतः राजस्थानी समाज—की नई पौध में फैलते हुए विलास, अकर्मण्यता और दायित्वहीनता के विष के कुरूप चिह्नों को देख कर खयाल हुआ था कि यदि कोई कलाकार इस समस्या को प्रकाश में खींच लाकर इसकी वास्तविकता को चित्रित करे, तो शायद इससे बहुतों का बहुत कुछ उपकार हो।

मेरे कहने का यह अर्थ नहीं कि किसी कलाकार ने अब तक इस समस्या का स्पर्श किया ही नहीं और न मेरी भावना यह है कि किसी

कलाकार की कल्पना के स्पर्श-मात्र से ही इस जटिल समस्या का सुलझाव हो जायगा। फिर भी मेरी मान्यता है कि जीवन का कल्याण ही कला के अस्तित्व का औचित्य है, और तब फिर कोई कारण नहीं कि देश के जीवन में छिप कर सुलगती हुई इस विकृति को चिनगारी को कला अपना शीतल स्पर्श-प्रदान क्यों न करे।

दस वर्षों की इस सञ्चित अभिलाषा को मैंने कितने ही प्रतिष्ठित साहित्यिकों के सम्मुख कितनी ही वार रखा। पर किसी-न-किसी कारणवश बात टलती ही गई। अन्तिम व्यक्ति वर्माजी हुए, जिनके सम्मुख अपना यह विचार मैंने प्रकट किया, और उसी की पूर्ति यह प्रस्तुत पुस्तक है।

इस पुस्तक की सफलता के विषय में मैं मौन रहना ही पसंद करता हूँ। इसका पहला कारण यह है कि मैं इसके समालोचक के ऊपर अपनी प्रशंसा की परछाँही डालना नहीं चाहता, और दूसरा यह कि इस पुस्तक और इसके लेखक को मैं इतने निकट से देख रहा हूँ कि संभव है मेरा दृष्टि-विंदु सम्यक रूप से संतुलित न हो।

फिर भी यही इसका परिचय है, इतना ही इसका इतिहास। और मुझे इससे अधिक कुछ नहीं कहना।

कलकत्ता
चैत्र १९९८ वि०

ईश्वरदास जालान

दो शब्द

रामगढ़ कांग्रेस के अवसर पर स्वागत-समिति की ओर से प्रदर्शनी में मेरा एक नाटक 'कबीर' खेलने का आयोजन किया गया था। कतिपय कारणों से वह नाटक नहीं खेला जा सका। पर उसके सम्बन्ध की एक बात मुझे यहाँ याद आ रही है।

नाटक की व्यवस्था के पूर्व स्वागत-समिति के अध्यक्ष डाक्टर राजेन्द्रप्रसादजी ने यह प्रश्न किया था—और उचित कारणों से ही—कि जब कि कांग्रेस एक राजनीतिक संस्था है और उसके अर्ध-शताब्दी के सुदीर्घ जीवन में कभी उसके अधिवेशनों के अवसर पर कोई नाटक अभिनीत नहीं किया गया, तो क्या विशेष कारण है कि इस बार यह नई परम्परा चलाई जाय ?

इसके उत्तर में मैंने जो निवेदन किया था, उसके शब्द तो मुझे याद नहीं हैं, पर उसका भाव यह था कि अनेक अन्य प्रश्नों की तरह रंगमञ्च का प्रश्न भी राष्ट्रीय महत्व का ही है और जब कि कांग्रेस विशुद्ध राजनीतिक संस्था होते हुए भी, बहुत-से इतर अराजनीतिक विषयों पर प्रकाश डालती और उनका विवेचन करती रहती है, तो

कोई कारण नहीं है कि वह राष्ट्रीय रंगमञ्च जैसे महत्व-पूर्ण प्रश्न के प्रति उदासीन बनी रहे।

आज सभ्य संसार में शिक्षा और मनोरञ्जन के माध्यम के स्वरूप में चित्रपट और रंगमञ्च का कितना प्रमुख और महान स्थान है, इसका अधिक विवेचन शब्दों का अपव्यय ही होगा। पर प्रश्न यह होगा कि इन माध्यमों का विकास भारत में कहाँ तक हो रहा है, और देश की राज्य-सत्ता या उसकी दायित्वपूर्ण राजनीतिक, आर्थिक या शिक्षण-संस्थाएँ इन में कहाँ तक दिलचस्पी ले रही हैं।

इस दिशा में भारत-सरकार की जो अब तक नीति रही है उसे केवल अवहेलनात्मक न कह कर यदि निरो-धात्मक भी कहा जाय, तो शायद कोई अत्युक्ति न होगी। देशी चल-चित्रों के लिए उसकी आर्थिक नीति ऐसी ही रही है, जिससे उनका सम्यक् विकास न हो पाये और उनके मुकाबले में विदेशी चल-चित्र सफलतापूर्वक चल सकें। इसके अतिरिक्त उसके नियुक्त किये हुए सेंसर-बोर्डों के अस्तित्व का मुख्य औचित्य रहा है देश की वास्तविक राजनीतिक और आर्थिक परिस्थितियों और विचारधाराओं को चित्रपट पर आने से समूल रोकना। रंगमञ्च के विषय में तो कुछ कहना ही नहीं। इसे अपने किसी रचनात्मक कार्य-क्रम के किसी कोने में स्थान देकर इसके राष्ट्रीय महत्व को स्वीकार करने का तो किसी

रूप में कभी प्रश्न ही नहीं उठा। रंगमञ्च का भी लोक-जीवन में कोई स्थान है और दैनिक चिन्ताओं और दुःख-दैन्य पिसते हुए जनसमुदाय के लिए यह भी एक मानसिक भोजन बन सकता है, इसकी स्वीकृति वह विदेशी सरकार क्या कर सकती है, जो यही स्वीकार न करे कि जनता को स्वतन्त्र होकर अपनी दाल-रोटी चलाने का अधिकार है?

चित्र-पट और रंगमञ्च की अवहेलना करने वालों में दूसरा स्थान आता है हिन्दुस्तान की यूनिवर्सिटियों का। शायद ही कोई ऐसी भारतीय यूनिवर्सिटी हो, जो साल में लाखों का खर्च करती हुई भी इस बात का गर्व कर सके कि उसने शिक्षणात्मक चल-चित्र तैयार करा कर अपने छात्रों को उनसे लाभ उठाने का अवसर प्रदान किया है। रंगमञ्च-निर्माण के प्रति उसकी उदासीनता एक आश्चर्य जनक जड़ता का ही द्योतक है। जब कि आज यूनिवर्सिटियों में एम० ए० के विद्यार्थियों को विविध वार्तानुरञ्जित विस्तार से यह पढ़ाया जाता है कि चॉसर, शेक्सपीयर या महारानी विक्टोरिया के समय में इंग्लैंड के रंगमञ्च का क्या स्वरूप था, और रोम में अभिनय किस प्रकार होता था, और ग्रीस की ट्रेजिडियाँ कैसी होती थीं और जब कि इन विषयों पर अनुसन्धान करने और थीसिस लिखने के लिए यूनिवर्सिटियाँ डाक्टर की डिग्री प्रदान करती हैं और इन डाक्टर की डिग्री पाये हुए

विदेशी रंगमञ्च के कुशल समीक्षकों को प्रचुर वेतन दे अपने यहाँ अध्यापक नियुक्त करती है, तब यह जानने या बताने की न तो उन्हें इच्छा है न अवकाश कि भारत के राष्ट्रीय रंगमञ्च का आज वास्तविक निर्माण किस प्रकार हो सकता है, और किस प्रकार वह लोक-जीवन की एक दयनीय रिक्तता की पूर्ति कर सकता है। आज भारतीय यूनिवर्सिटियों के विद्वान अध्यापकों में इस बात की होड़ लगी है कि कैसे वे सिद्ध कर दें कि शेक्सपीयर से बढ़ कर संसार में कोई कलाकार नहीं हुआ और बर्नार्ड शॉ का स्थान आने वाली शताब्दियों में शेक्सपीयर से भी ऊँचा हो जायगा। विदेशी कलाकारों की प्रशंसा में नित्य नये शब्दों से नई स्तुतियाँ रचने वाले इन विद्वानों की बौद्धिक घुड़दौड़ में तालियाँ बजानेवाली हैं हमारी यूनिवर्सिटियाँ जो एक हाथ में सम्मान और दूसरे में सम्पत्ति लेकर शेक्सपीयर और शॉ की स्तुति कर के हाँफते और पसीने से लथ-पथ, फिर भी अक्लान्त-अम्लान, नेति-नेति कहने-वाले इन किताबी बहादुरों की पीठ ठोंक कर उन्हें एक के बाद दूसरी घुड़दौड़ के लिए प्रेरित करती रहती हैं।

देशी भाषाओं के उच्च श्रेणी के विद्यार्थियों को भी अंगरेजीवालों की देखा-देखी कुछ नाटक पढ़ाने ही पड़ते हैं, पर यह काम हमारी यूनिवर्सिटियों को जबरन ही करना पड़ता है। देशी भाषाओं में भी नाटक हो सकते हैं, इनके लिखने वाले भी नाटककार कहला सकते हैं और

इनमें भी कोई नाट्य-कला हो सकती हैं, यह बात शेक्स-पीयर और शॉ के स्तुति गायकों को सह्य न हो सके, यह कोई आश्चर्य की बात नहीं। फिर भी, नियम-रक्षा के लिए नाटक नाम की कोई चीज तो पढ़ानी पड़ेगी ही। इसका उपाय यूनिवर्सिटियों की टेक्स्टबुक कमेटियों ने बहुत ही मौलिक ढूँढ निकाला है, जिस से साँप भी मरता है और लाठी भी नहीं टूटती! सरस्वती के इन वर-पुत्रों ने नाटकों के दो विभाग किये हैं, श्रव्य-काव्य और दृश्य-काव्य। श्रव्य-काव्य वह जो सत्साहित्य के रूप में अध्येय हो, जैसे श्री जयशंकर 'प्रसाद' के नाटक, ('प्रसाद' जी के नाटक कैसे हैं, हमें इसकी यहाँ आलोचना नहीं करनी है, हमें तो केवल यही देखना है कि कैसा विभाजन किया गया है) और दृश्य-काव्य वह जो रंगमञ्च पर खेला जा सके। इनमें दृश्य-काव्य तो बिल्कुल ही अध्य-यन के अनुपयुक्त ठहरा दिया गया है और जहाँ तक मुझे मालूम है शायद ही ऐसा कोई नाटक हो जिसे दृश्य-काव्य के रूप में कोई यूनिवर्सिटी अपने उच्च श्रेणी के विद्यार्थियों के अध्ययन के लिए रखती हो। इसका कारण यह है कि यह निश्चित मान लिया गया है कि किसी भी देशी भाषा का कोई दृश्य-काव्य कभी साहि-त्यिक नहीं हो सकता, अतः सरस्वती के मन्दिर में उस अछूत का 'प्रवेशो निषिद्धः' है।

बाकी रहे तथा-कथित श्रव्य-काव्य। सरस्वती-मंदिर के एक कोने में आकर खड़े होने की उन्हें अनुमति तो मिल गई, पर उन्हें रहना पड़ता है उसी तरह, जैसे मुग़ल हरमों में खोजों को रहना पड़ता था। नाटक के रूप में उन्हें कविता इतिहास, दर्शन, धर्मशास्त्र, समाजशास्त्र या अन्य किसी भी शास्त्र का विवेचन और प्रदर्शन करने की पूर्ण स्वतंत्रता है, पर नाट्यशास्त्र को वे स्पर्श तक न करेंगे इसका उन्हें आश्वासन देना पड़ता है। जो नाटक नाट्यशास्त्र की आवश्यकताओं के दृष्टिकोण से रंगमञ्च के लिए लिखे जाते हैं, उनका साहित्यिक होना तो 'न भूतो न भविष्यति' है। इसलिए वायसराय के कौन्सिल के मेम्बरों की तरह नाटक-नामधारी, किन्तु नाटकत्व से कोसों दूर ये 'श्रव्य-काव्य' नाटक-साहित्य का प्रतिनिधित्व करने के लिए यूनिवर्सिटियों में चुने जाते हैं और इन्हें चुनने में अधिक हाथ होता है उन्हीं विविध डिग्री-अलंकृत दुर्दान्त विद्वानों या उनके शिष्यों और पदानुवर्त्तियों का, जो विदेशी रंगमञ्च की विशेषज्ञता का यहाँ तक दावा रखते हैं कि इतना बता सकें कि शेक्सपीयर के समय नाटक देखने आनेवालों के घोड़े कहाँ बाँधे जाते थे और शॉ के किसी नाटक-प्रदर्शन की पहली रात को कितने के टिकट बिके थे।

चित्रपट और रंगमञ्च की उपेक्षा के तीसरे अपराधी हैं देश के वे महान नेता, जो राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और शिक्षण-सम्बन्धी सभी प्रश्नों पर देश को अपना योग्यतापूर्ण नेतृत्व प्रदान करते हुए भी, इस प्रश्न पर अधिकतर मौन ही बने रहते हैं। किसी महत्वाकांक्षी प्रदर्शक के प्रभाव में आकर कोई नेता भले ही किसी चित्र का उद्घाटन कर दे या किसी नाटक को आदि से अन्त तक देखने का भारी कष्ट उठा कर अभिनेताओं को अनुगृहीत करने के लिए प्रशंसा के दो शब्द कह दे, किन्तु यह कभी नहीं सुना गया कि कोई महान नेता भारतीय चित्रपट-व्यवसाय को परिमार्जित करने या राष्ट्रीय रंगमंच का निर्माण करने की कोई सक्रिय गम्भीर योजना देश के सामसे रखे।

मुझे प्रसन्नता है कि रामगढ़ में रंगमंच-निर्माण के पक्ष में पूज्य राजेन्द्र बाबू की सहमति मैं ले सका था। और तभी से यह अभिलाषा मेरे हृदय में उठती रही है कि रंगमंच के उपयुक्त साहित्यिक नाटक लिखने की मैं चेष्टा करूँ और यह प्रस्तुत नाटक उसी अभिलाषा का रूपान्तर है।

यह नाटक श्रद्धेय ईश्वरदासजी जालान की प्रेरणा से उनकी ही सुझाई हुई समस्या को लेकर लिखा गया है, और उनके ही आदेशानुसार इसका प्रथम प्रदर्शन भागलपुर में होनेवाले अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी

सम्मेलन के चतुर्थ अधिवेशन के अवसर पर होनेवाला है। व्यवसायी-जगत् के विषय में मेरा ज्ञान बिल्कुल ही नगण्य है, और बहुत-सी दूसरी ऐसी समस्याएँ हैं, जिन पर मैं अधिक कुशलता से प्रकाश डाल सकता हूँ और शायद कभी डालूँगा भी। पर यह समस्या जालानजी के सुझाने पर ही मैं ने ली, एतदर्थ मैं उनका अत्यन्त ऋणी हूँ।

इस नाटक में कितने ही ऐसे स्थल हैं, जहाँ भारतीय रंग-मंच की परम्पराओं का उल्लंघन हुआ है, पर वह हुआ है जानबूझ कर। इसमें केवल दो ही अंक हैं, जैसा कि और किसी नाटक में अभी तक मैं ने नहीं पाया है। और भी कितनी ही बातें है, जिन पर विस्तार-भय से अधिक प्रकाश अभी नहीं डाल सकता, पर उनके लिए अपने आलोचक मित्रों से मेरा निवेदन है कि वे उन्हें एक नवीन प्रयोग के रूप में देखें और उनकी वांछनीयता पर विचार करें।

इस नाटक के मुख्यतः रंगमंच की दृष्टि से लिखे जाने के कारण, कलकत्ते के बड़े बाजार की प्रमुख नाट्य-संस्था 'हिन्दी रंगमंच मण्डल' को मैं ने इसके प्रदर्शन की अनुमति दी है। मण्डल के कला-निर्देशक श्री 'नटवर', निर्देशक श्री हरिनन्दनसिंह तथा उसके अन्य प्रमुख सदस्य सर्वश्री शिवचन्द सोनी, बलभद्र चौबे, रामगोपाल बगड़िया, मोतीलाल टीबड़ेवाला आदि जितने उत्साह

से इसके प्रदर्शन के लिये प्रयत्नशील हैं, उससे मुझे आशा होती है इसका सफल प्रदर्शन हो सकेगा।

मेरे धन्यवाद के अन्तिम फिर भी एक मुख्यपात्र हैं मेरे मित्र श्री भगवतीसिंहजी, जिनके सौजन्य से इस पुस्तक को शीघ्र प्रकाशित करने में मुझे पूरी सहायता मिली है।

छपाई में अधिक शीघ्रता करने के कारण प्रूफ की कुछ गलतियाँ रह गई हैं, जिनके लिए पाठकों के सम्मुख मैं क्षमाप्रार्थी हूँ।

नवादा, (गया)
चैत्र सं० १९९८

कमलाकान्त वर्मा

* *
*

पात्र-परिचय

पुरुष

मनोहर—पहले एक ग्रामीण युवक, पीछे कलकत्ते का एक करोड़पती।

हरदत्तराय—एक धनी व्यापारी और मनोहर का पथ-प्रदर्शक।

विमल—हरदत्तराय का पुत्र और मनोहर का पोष्य-पुत्र।

श्यामल—मनोहर का पुत्र।

राजाराम वग्गड़—श्यामल का कुचक्री मित्र और एक डाकू-सरदार का लड़का।

डाक्टर वागची—विष-विज्ञान का एक प्रकांड विशेषज्ञ।

शंकर—मनोहर का लंगोटिया मित्र और पीछे उसका मुनीम।

दामोदर—शंकर का मित्र।

स्त्री

सोना—मनोहर की स्त्री।

कृष्णा—मनोहर की पुत्री।

चंचला—एक वेश्या।

प्रथम अंक

प्रथम दृश्य

(एक देहाती चौपाल के बीचों-बीच लकड़ी का एक मोटा कुंदा जल रहा है। कुन्दे के चारों ओर बैठे हुए कुछ लोग गांजे का दम लगाते हुए इधर-उधर की बातें कर रहे हैं। इन लोगों से ज़रा हट कर बैठा हुआ मनोहर सामने एक चिराग रख कर कोई पुस्तक पढ़ रहा है।).

दामोदर—(गांजे का दम लगा कर खांसता हुआ) पर भैया शंकर, यह जो है—क्या नाम है इसका—कल कल का कत्ता, यह है कहां पर ?

शंकर—कल कल का कत्ता नहीं कलकत्ता कहो कलकत्ता! जैसे शिव के त्रिशूल की नोक पर काशी है, वैसे ही काली मैया के खड्ग की नोक पर है कलकत्ता। जिसे मर कर स्वर्ग जाने की इच्छा हो उसके लिए काशी, जिसे जीते जी स्वर्ग पहुँचना हो उसके लिए कलकत्ता······समझे ? शास्त्र की बात है।

माधो—अच्छा, यह कलकत्ता कोई बड़ा गांव-गिरांव है क्या ?

शंकर—बस, तुम रह गये वही के वही पूरे किष्किधा-निवासी। शास्त्र की बात जानते हो ? त्रेता में सर्व-श्रेष्ठ नगरी थी लंका, कलि में सर्व-श्रेष्ठ नगर कलकत्ता। वह भी सोने की यह भी सोने का··· सो अब तो राम-लक्ष्मण जैसे किसी महा-पुरुष की कृपा हो तो तुम सरीखे रीछ-बानरों को वहां की यात्रा नसीब हो।

दामोदर—ठीक है भैया, अगर यह कल कल का कत्ता सोने का न होता तो शिवदतिया की छोरी झुनिया का छोरा हरदतिया क्या वहाँ से सोने-चाँदी से लद कर सेठ हरदत्तमल बन कर लौटता ?

अल्गू—और वहाँ रहा भी कितना ? एक जुग न दो जुग, सिर्फ सात बरस······सो भैया, सनीचर के चढ़ते-उतरते भी साढ़े सात बरस लगते हैं और यहाँ

सात बरस में सेठ......अंधेर है अंधेर......(मनो-हर उसकी ओर गौर से देखता है, फिर पढ़ने लगता है ।)

दामोदर—और एक यहाँ अपना नसीब है। सात बरस बाबूजी को मरे हुए, जिसमें महाजन की कृपा से आधा घर तो ढह गया और अब बचे हुए आधे घर में घरवाली की कृपा से पाँच लड़कियाँ कायँ-किच कर रही हैं......यह सब भैया अपना अपना करम है।......

माधो—करम की कहते हो तो यह हरदतिया क्या पीतर के करम पर कलकत्ते से सोने का पानी फिरवा लाया है......अरे यह सब अपना अपना उद्योग है।

अलगू—अजी, बड़े आये उद्योग वाले! मालूम है सब कुछ। कहीं किसी की गिरह काट ली होगी, या कहीं बैठे-ठाले जुए पर दाँव हाथ लग गया होगा......और नहीं तो किसी सेठ ने पोसपुत बना लिया होगा। अपने उद्योग से दुनिया में आज तक कहीं कोई सेठ बना है? हुहँ......

दामोदर—भई, मैं तो कहता हूँ भगवान देता है तो छप्पर फाड़ कर देता है, तो फिर अपना देस छोड़ विदेस क्यों जाना? और अगर उसे न देना हो तो मेरी घरवाली जैसी सुलच्छनी गले में बैठे-बिठाये बाँध देता है, जिसके चलते विदेस तो

क्या स्वर्ग जाने की फुर्सत भी न मिले……
सो भैया, यह तो हरदतिया के करम की बलिहारी है।

अलगू—चूल्हे में गया ऐसा करम। देस-विदेस की धूल फाँक कर नदी-पहाड़ लाँघ कर धरम नसा कर पित्तर-पुरखा को नरक में ढकेल कर लौटा, तो उसके करम की बलिहारी हो गई……अरे, मैं तो कहूँ, फूट गया उसका करम और उससे ज्यादा हमारा। अब घबड़ाते क्यों हो, देख लेना, अब कितनों को कलकत्तेबाजी की हवा लगती है और कितने उसकी देखा-देखी तुरुक-ईसाई बनते हैं… (जोर से गांजे का दम लगाता है। मनोहर उसकी ओर देख कर फिर पढ़ने लगता है।)

दामोदर—काहे शंकर भैया, यह तुम्हारा कल कल का कत्ता जब लंका जैसा है, तो यहाँ बसते भी तो होंगे लंका के जैसे ही निसाचर?

शंकर—निशा नाम रात्रि को चर नाम भ्रमण करे सोई निशाचर! शास्त्र की बात है। सो कलकत्ते के निवासी दिन में तो रहते हैं व्यापारी, रात्रि को हो जाते हैं निशाचर, भेद इतना ही है कि लंका के निशाचर काले-कुरूप थे, कलकत्ते के होते हैं सुन्दर—गौरांग………

माधो—भैया, सुना है कलकत्ते में अंगरेज रहते हैं, सो ये अंगरेज होते हैं कैसे ?

शंकर—जो अपने अंग-प्रत्यंग को रंजन नाम रंगे वही अंगरेज ! शास्त्र की बात है। सो ये अंगरेज मर्द-लुगाई सभी गाल में तो लगाते हैं चूना, ओठ में महावर।

माधो—हरे ! हरे ! कैसी शकल लगती होगी इनकी ?

दामोदर—और भैया सुना है इनकी लुगाइयाँ तो परदा का नाम ही नहीं जानतीं। मर्दों के साथ ही खेलती हैं, कूदती हैं, नाचती हैं, घोड़े पर चढ़ती हैं……सो क्या सच है ?

शंकर—शास्त्र की बात तो यह है कि जिस देश में जाकर भीम ने हिडिम्बा राक्षसी से विवाह किया था उसी देश की ये भी हैं। सो भीम ने शान में आकर हिडिम्बा से विवाह तो कर लिया, पर इतनी हिम्मत नहीं हुई कि उसे अपने घर लायें। लेकिन द्वापर में न सही कलियुग में ही सही, हिडिम्बा की संतानें तो आ ही पहुँचीं।

अलगू—सुना ? ऐसा है देश कलकत्ता, जहाँ ऐसी चुड़ैलें बसती हैं। कौरू कामाख्या की स्त्रियाँ तो मर्दों को सिर्फ भेड़-बकरे ही बना कर रखती हैं, ये बना लेती हैं कुत्ते, जिनको दुत्कारो तो भी न

भागें, पीछे पीछे पूँछ डुलाते फिरें……हे नारा-यण, अब तो इस कलकतिया जादू से हमारे देश को तुम्हीं बचाओ। न हमारे देश में जनमता यह हरदतिया और न……आ हा…आ हा… आओ जी सेठ हरदत्तमलजी…बड़ी उमर तुम्हारी, अभी तुम्हारी ही चरचा हो रही थी ? बैठो।

(हरदत्तमल का प्रवेश। मनोहर किताब बन्द कर खड़ा हो जाता है।)

हरदत्त—नहीं भैया, अभी मैं बाहर जा रहा हूँ। अगले रविवार को मुझे कलकत्ते लौटना है, सो उसके लिए गाड़ियों का प्रबन्ध करना है। मनोहर, तुम यहाँ बैठे हो, तुम्हें मैं कहाँ कहाँ खोज आया। क्या निश्चय किया तुमने ?

मनोहर—(किताब को बगल में दबा कर) निश्चय तो वही है, भाईजी, जो मैं आप से कह चुका, आपके साथ कलकत्ते चलूँगा ही।

हरदत्त—तो फिर उसकी तैयारी भी तो कुछ करनी होगी ?

मनोहर—मुझे तैयारी ही क्या करनी है ? और जो कुछ है वह करी-कराई ही समझिए। हाँ, गाड़ी वाले को खबर देनी थी न, वह मैं दे चुका। आप घर चलिए मैं उसे बुला लाता हूँ।

(जाना चाहता है।)

हरदत्त—नहीं, चलो मैं भी चलता हूँ। अच्छा भाइयों, जैरामजी की (दोनों जाते हैं।)

दामोदर—यह मनोहरा भी क्या कल कल का कत्ता जा रहा है ?

माधो—और अभी तक किसी से कहा भी नहीं ?

दामोदर—इसके भी तो लुगाई है, उसे कहाँ छोड़ेगा ?

अल्गू—देखा ? मैं जो डरता था वही हुआ। अब तुम लोग देखते रहो इस कलकत्तेबाजी की हवा में कितने घर उजड़ते हैं !

शंकर—एक हनूमान के लंका सैर कर आने के बाद किष्किधा के सारे रीछ-बानरों को लंका की हवा खानी पड़ी थी। घबड़ाते क्यों हो ? हम सब को भी एक दिन कलकत्ते की हवा खानी ही पड़ेगी। शास्त्र की बात है।

(सभी उठते हैं)



दूसरा दृश्य

(पानी के घड़े लिये हुए कुछ युवतियों के साथ सोना का गाते हुए प्रवेश)

कैसे जिऊँ हे सखि पिया परदेस --
पीतम चले विदेश को, बोले खोलो नैन,
तब नैना उघरे नहीं, अब बरसें दिन-रैन।
अब बरसें दिन-रैन ये, बादर मानत नायँ,
इत नैना उत बादरा, कौन किसे समझायँ।
नदियां चलीं समुद्र को, पंछी अपने देस,
मैं बिरहिन जाऊँ कहाँ, पायों नांहि सँदेस।
पिया परदेस।

(गाती हुई चली जाती हैं)



तीसरा दृश्य

(हरदत्तमल और मनोहर बातें करते हुए एक पगडंडी से चले आ रहे हैं। पगडण्डी के बगल में एक पक्का कुआं है, जिसके साथ एक हौज लगा हुआ है।)

हरदत्त—मनोहर, तुम्हें तो मैं अपना छोटा भाई समझता हूँ, तुमसे छिपाना ही क्या है? मैं इस समय हीरे-जवाहरात के रूप में कई लाख की सम्पत्ति

लेकर कलकत्ते जा रहा हूँ, इसलिए तुम मेरे साथ चल रहे हो इसकी मुझे हार्दिक प्रसन्नता है।

मनोहर—भाईजी, मैं हूँ ही किस योग्य, पर आप विश्वास रखें········।

हरदत्त—विश्वास तो मुझे तुम पर उतना ही है जितना अपने इस दाहने हाथ पर। और इसलिए तुम्हें भी मैं विश्वास दिलाता हूँ, मनोहर, कि तुम्हारी विदेश-यात्रा की यह कठोर तपस्या किसी दिन तुम्हें उत्थान की चोटी पर पहुंचायेगी।

मनोहर—आप ऐसा समझते हैं यह तो आपकी कृपा है···

हरदत्त—जो आज मैं तुम्हारे विषय में समझता हूँ यदि वह किसी दिन अपने लड़के विमल के विषय में भी समझ सकूँ, तो मेरा पिता बनना सार्थक होगा।

मनोहर—अच्छी याद दिलाई आपने विमल की। वह डेढ़ साल का बिना मां का बच्चा इतनी कठिन यात्रा सहन कर सकेगा ?

हरदत्त—पर कोई उपाय नहीं है। उसे यहां अकेला मैं छोड़ नहीं सकता और कलकत्ते इसी सप्ताह मेरा पहुँच जाना आवश्यक है।

मनोहर—पर इतनी जल्दी क्या है? इसी सप्ताह में वर्षा होने की सम्भावना है और हवा में ज़रा-

सी ठंढक आ जाने से फिर विमल को मार्ग में कोई कष्ट नहीं होगा।

हरदत्त—नहीं मनोहर, तुम नहीं जानते। मेरे पास दो ऐसी हीरे की अँगूठियाँ हैं, जो अगर कलकत्ते इस सप्ताह में नहीं पहुंचीं, तो फिर शायद कभी नहीं पहुँच सकेंगी। लेकिन तुम चिन्ता न करो। विमल को कोई कष्ट नहीं होगा। तुम नहीं जानते मैं केवल एक व्यापारी ही नहीं, बहुत बड़ा वैद्य भी हूँ।

मनोहर—यह तो मैं जानता हूँ।

हरदत्त—आज मैं हूँ तो व्यापारी पर सपने उस दिन के देखता हूँ जब मेरा जीवन केवल रोगियों और पीड़ितों की सेवा के लिए होगा। वह दिन······ वह दिन······पर जाने दो, वह दिन अभी बहुत दूर है। अभी तो सामने अपनी यात्रा का दिन है। अच्छा तो मैं चलूँ। तुम संध्या समय घर पर आ जाना, मैं प्रतीक्षा करूँगा, हाँ!······(जाते हैं)

मनोहर—(विमुग्ध-सा खड़ा देखता हुआ) कितनी महान् आत्मा है! लक्ष्मी इसके ऊपर बरसती है, पर इसके हृदय को छू नहीं पाती। क्या जीवन में मैं कभी इसकी धूल को भी छू सकूँगा?

(जाना चाहता है। सामने सोना और उसकी सखियां गाती हुई कुएँ पर पानी भरने आ रही हैं। मनोहर एक बगल छिप कर खड़ा हो जाता है। सोना और उसकी सखियों का गाते हुए प्रवेश। यह गाना पहले गाने का ही अन्तिम भाग है)

गाना

कैसे जिऊँ हे सखी, पिया परदेस।
रिमझिम रिमझिम पड़त फुहार सखी,
झरझर नैना झरे, पायों ना संदेस...
पिया परदेस।

(अकस्मात् मनोहर प्रकट हो जाता है। गाना रुक जाता है। सोना घूँघट काढ़, मुँह फेर कर खड़ी हो जाती है।)

मनोहर—क्यों, मुझे देखते ही गाना बन्द क्यों कर दिया ?

एक सखी—अब गाने की जरूरत नहीं रही, प्रीतम परदेस से लौट आये।

मनोहर—किसके प्रीतम ?

दूसरी—(सोना का घूंघट खींचती हुई) हमारी सखी के।

मनोहर—लेकिन तुम्हारी सखी के प्रीतम कभी परदेस गये हों, ऐसा मुझे तो नहीं मालूम।

पहली—तो तुम्हें मालूम ही क्या है कि यह हमारी सखी के किस प्रीतम परदेसी का गीत है ?

दूसरी—क्या तुम समझते हो हमारी सखी के अकेले तुम्हीं एक प्रीतम हो ?

सोना—(उसे चिकोटी काटती हुई) धुत् !………

मनोहर—ऐसा तो मैं कुछ नहीं समझता, लेकिन हाँ, इस नये प्रीतम की कहानी मुझे नहीं मालूम थी ।

पहली—यह प्रीतम नया नहीं, तुमसे भी पुराना है । इसके साथ सखी का प्रेम तब का है जब तुम से उसकी सगाई भी नहीं हुई थी…उई !…

सोना—(उसे चिकोटी काटती हुई) चुप रह निगोड़ी !

मनोहर—ऐसा ! लेकिन आज तक तो मुझ से किसी ने कहा ही नहीं, नहीं तो……

दूसरी—नहीं तो क्या कर लेते ?

पहली—तलवार से उसका सर उतार लेते ?

मनोहर—नहीं……मैं पूछता क्या ऐसा भी कोई उपाय है जिससे अब उस प्रीतम को भूल कर मेरी याद की जाय……मुझ पर कविताएँ बनें…… मेरे गाने गाये जायँ ।

दूसरी—उपाय तो है पर तुम से होने का नहीं……क्यों सखी !

मनोहर—पर सुनूँ भी तो !

पहली—उपाय तो यही है कि तुम भी घर छोड़ कर पर-देस जाओ ।

दूसरी—घरेलू प्रीतम तो घरेलू जानवर है, जिसे दोनों शाम खाना खिला कर रात को खूँटे पर बाँध दो। लेकिन अगर यह चाहो कि तुम्हारे लिए कोई रोए, तुम्हारे विरह में तड़पे, तुम्हारे वियोग के गाने गाये……तव तो लालाजी……

पहली—परदेस जाओ !

सोना—चुप रहती है चुड़ैल या नहीं ! अब चल यहाँ से !

मनोहर—अगर सचमुच ऐसा है कि मेरे परदेस चले जाने पर मेरे लिए कोई ऐसी ही सरस कविताएँ वनाये, ऐसे ही मधुर गीत गाये, तो मैं तो कसम खाकर कहता हूँ कि मैं आज ही, अभी परदेस चला जाऊँ……

दूसरी—तो फिर जाकर देख ही लो न !

मनोहर—लेकिन चला ही जाऊँ तो फिर देखूँगा कैसे ?

पहली—लौट कर आने पर सुन तो सकते हो ?

मनोहर—अच्छा तो शर्त मञ्जूर रही—मैं जाऊँगा, अवश्य जाऊँगा और शीघ्र जाऊँगा। (वेग से प्रस्थान)

सोना—(घूँघट हटा कर) मुँहजली ! मर्दों से ऐसी बातें करते हुए शर्म नहीं आती ? (पानी से भरा हुआ घड़ा उठाती है।)

दूसरी—इसमें शर्म की क्या बात है री ? हमने क्या कुछ

झूठ कहा है ? बनने को तो प्रीतम और रहने को जिन्दगी भर घुस कर कोने में···हुहँ···

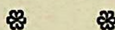
पहली—ऐसा भी मर्द क्या जो दिन भर तो लुगाई का मुँह निहारा करे और रात भर उस पर पहरा दिया करे ! न कहीं आना न कहीं जाना, जब देखो कोल्हू के बैल की तरह लुगाई के पीछे चक्कर काटते रहना ।

सोना—चुप रहो···जब तुम दोनों की शादी होगी तो पता चलेगा । दूल्हे को दिन रात आँचल के खूँट में ही बाँधे रखोगी ।

दूसरी—मैं तो पाँच साल तक दूल्हे को अपने पास भी न फटकने दूँ ··

पहली—और मैं तो शादी के दूसरे ही दिन लालाजी को परदेस का रास्ता दिखाऊँ······

सोना – देखा जायगा, लेकिन याद रखना अगर इन सब बातों को सुन कर इन्होंने कहीं आने-जाने का नाम लिया या परदेस जाने की कोई बात चलाई । तो कहे देती हूँ···तुम दोनों के मुँह में आग लगा दूँगी······(तीनों जाती हैं ।)





चौथा दृश्य

(मनोहर, शंकर और दामोदर का प्रवेश)

दामोदर—बस-बस, रहने दो मैं समझ गया। जो मनोहर लुगाई के डर से दिन का चौपड़ न खेले, रात को कहीं नाच-तमाशा देखने न जाय वह परदेस जायगा, सो भी कल कल का कत्ता! बच्चा······ लुगाई ने ठलुआ बैठने का ताना मारा है।

शंकर—यत्र यत्र धूमस्तत्र तत्र वह्निः। जहाँ धूआँ है, वहाँ आग जरूर होगी। जहाँ बाहर परदेश का जाना, वहाँ भीतर लुगाई का ताना···शास्त्र की बात है।

दामोदर—बस, अब हम से बनो तो मत, सीधी बात बता दो। क्या जरूरत परदेश जाने की? हम तुम्हारी लुगाई को समझा देंगे।

शंकर—अजी, समझाना क्या, डाँट-डपट देंगे। 'ढोल गवार शूद्र पशु नारी, ये सब ताड़न के अधिकारी' ······शास्त्र की बात है।

मनोहर—तुम लोग अपनी ही रटे जाओगे या मैं भी कुछ कहूँ?

दामोदर—कहो! कहो!

शंकर—ज़रूर कहो ·····लेकिन सत्य कहो!

मनोहर—तो देखो बात यह है कि मैं सोचता हूँ, जहाँ जन्मे वहीं कुएँ में के मेढ़क की तरह मर गये और पुरुष होकर संसार में कोई पुरुषार्थ नहीं किया तो यह जन्म व्यर्थ ही गया। इसलिए मैं ने निश्चय किया है कि.........

दामोदर—परदेस जायँ.........

शङ्कर—पर ठहरो, तुम्हारे इस परदेस जाने के निश्चय से तुम्हारी लुगाई का कोई सम्बन्ध नहीं, यह मानने को मैं बिल्कुल तैयार नहीं। बिना किसी लुगाई के सुझाए कोई पुरुष अपने को कुएँ में का मेढ़क समझ ले, ऐसा हो ही नहीं सकता। मैं नहीं समझता, यह नहीं समझता, कोई नहीं समझता, एक तुम्हीं समझते हो...क्यों? बिना लुगाई के ताना मारे तुलसीदास को वैराग्य नहीं सूझा...क्यों? जवाब दो, शास्त्र की बात है।

मनोहर—क्यों, क्या मैं अपने मन से परदेस जाने लायक नहीं हूँ?

दामोदर—यह कौन कह सकता है?

शङ्कर—इतना तो सच है कि तुम्हारी टाँगें तगड़ी हैं—आँख, नाक, कान में भी कोई विकार नहीं है.........

दामोदर—दिमाग़ भी एक बार ही बहुत गन्दा हो ऐसा नहीं कहा जा सकता.........

शङ्कर—और किसी सूक्ष्म शास्त्रीय विषय पर किसी से शास्त्रार्थ भले ही न कर सको, लेकिन कामचलाऊ बातचीत तो कर ही लेते हो और यद्यपि तुम खुद अपने को मेढ़क समझने लगे हो और मालूम नहीं तुम्हारी लुगाई तुम्हें क्या समझती है, पर शङ्क तो तुम्हारी मेढ़क से अच्छी ज़रूर है—क्यों भाई ?

मनोहर—तुम दोनों की सारी दुनिया क्या 'लुगाई' शब्द में ही बसती है ?

दामोदर—हमारी दुनिया नहीं तुम्हारी दुनिया बसती है, जो लुगाई की एक डाँट पड़ते ही, विना दोस्तों से सलाह किये ही घर-गृहस्ती छोड़ परदेस की धूल छानने चल पड़े। बचा···इतनी डाँट अगर तुमने बचपन में गुरूजी की मानी होती तो······

शंकर—आज मुझ जैसे प्रकांड विद्वान हो गये होते। लेकिन अब भूल जाओ उन बातों को। अर्जुन में अपने गुरू द्रोणाचार्य और दादा भीष्म पितामह से लड़ने की हिम्मत तो थी, पर अपनी लुगाई द्रौपदी की डाँट के सामने घर में बैठे रहने की हिम्मत नहीं थी। शास्त्र की बात है। लेकिन अब यह बताओ आखिर लुगाई ने कहा क्या ?

दामोदर—उसने कोई उलाहना दिया ?

शंकर—कोई धमकी दी ?

दामोदर—कुछ शिकायत की ?

शंकर—कोई व्यंग किया ?

दामोदर—कोई चीज़ मांगी ?

शंकर—कोई फ़र्माइश पेश की ?

दामोदर—देखो, सच बताना ! नीचे पृथ्वी है, ऊपर आकाश है......

शंकर—हृदय में तुम्हारी लुगाई है, सामने हम लोग हैं......हाँ......

मनोहर—तो मैं सच बताऊँ ? आज उसने एक गीत गाया।

दामोदर—गीत ?

शंकर—और गाया ?

मनोहर—और पहले जो परदेस जाने का मेरा विचार था वह दृढ़ निश्चय बन गया।

दामोदर—झूठ ! लुगाई का गीत सुन कर तुम......

शंकर—परदेस चल पड़े ? शास्त्रों में ऐसी घटना कभी नहीं हुई......कभी नहीं ......यह झूठ है !

(नैपथ्य में उस गीत का संगीत बजता है।)

मनोहर—और मैं कहता हूँ यह सच है। और तुम्हें विश्वास न हो तो किसी-दिन तुम भी सुन लेना वह गीत—जिसे मेरी प्रियतमा मेरे वियोग में गाती फिरेगी।

(वेग से प्रस्थान। दामोदर और शंकर भी जाते हैं।)

पाँचवाँ दृश्य

(बन का दृश्य। एक पहाड़ की कन्दरा। अंधेरा छाया हुआ है। एक नकाबपोश डाकू बहुत चौकन्ना-सा चारों ओर सतर्क दृष्टि फेकता हुआ आता है और गीदड़ की बोली बोलता है। खोह में से मेढ़क की आवाज आती है। बाहर से डाकू पपीहे की बोली बोलता है। एक धड़ाका होता है। खोह के भीतर से एक हथियारबन्द नकाबपोश डाकू निकलता है। पहला डाकू झुक कर उसका अभिवादन करता है और नकाब हटा देता है।)

सरदार—क्या समाचार है ?

डाकू—सेठ हरदत्तराय कल रात को ही कलकत्ते जा रहा है।

सरदार—कल रात को···किस समय ?

डाकू—आधी रात के एक घड़ी बाद ही प्रस्थान का समय है।

सरदार—अच्छा उसके साथ आदमी कितने होंगे ?

डाकू छः नौकर···सभी हथियारबन्द।

सरदार—और सामान कितना है ?

डाकू—साथ में तीन ऊँट, चार बहलियाँ सब पेटियों से लदी हुई।

सरदार—तो फिर सात आदमी इन पर भी होंगे ?

डाकू—निश्चय !

(बाहर एक जंगली चिड़िये की बोली सुन पड़ती है। सरदार एक विचित्र-सी आवाज करता है। एक दूसरे नक़ाबपोश डाकू का प्रवेश। डाकू अभिवादन करता है और अपना नक़ाब उलट देता है। यह डाकू पहले दृश्य का अलगू है।)

अलगू—वह सेठ हरदत्तराय········।

सरदार—सुन चुका हूँ।

अलगू—लेकिन एक बात और भी है। सुन्दरदास का लड़का मनोहरदास है न······वह भी उसके साथ जा रहा है।

सरदार—वह भी जा रहा है ? कहाँ जा रहा है ?

अलगू—कलकत्ते।

सरदार—किसलिए ?

अलगू—व्यापार-धन्धे की खोज में।

सरदार—हूँ—(पहले से) तुमने तो नहीं कहा ?

डाकू—जी, मुझे यह नहीं मालूम था।

सरदार—तब तो···अच्छा ख़ैर···वे जा रहे हैं किस रास्ते ?

अलगू—सोहना टीले की उधरवाली मोड़ से।

सरदार—सेठ के साथ स्त्रियाँ भी हैं क्या ?

डाकू—उनकी स्त्री तो कभी मर गई! साथ में सिर्फ़ डेढ़ साल का एक बच्चा है। और कोई नहीं। बाक़ी सब नौकर-चाकर।

सरदार—अच्छा तुम जाओ···और सुनो (कान में कुछ

कहता है। डाकू अभिवादन करके जाता है) अलगू, यह लौंडा मनोहर क्या सेठ हरदत्तराय का पहरेदार बन कर जा रहा है ?

अलगू—मनोहर पर सेठ का बहुत बड़ा विश्वास है और मनोहर ऐसा है कि जान देकर भी उनके विश्वास का पालन करेगा।

सरदार—क्या मनोहर सचमुच बहुत बहादुर आदमी है ?

अलगू—सरकार, इस इलाके में तो कोई ऐसे दस आदमी नहीं हैं जो एक साथ मिल कर भी उसे पीछे हटा सकें ·····यही कहने के लिए तो मैं इतनी तेजी से आ रहा हूँ······

सरदार—(उसे एक मोहर देता हुआ) अच्छा किया तुमने कह दिया। क्या तुम ऐसा भी कोई उपाय कर सकते हो जिससे मनोहर साथ में जाये ही नहीं ?

अलगू—ऐसा उपाय मेरे हाथ में नहीं है सरकार। मनोहर को ब्रह्मा भी नहीं रोक सकते।

सरदार—हूँ······अच्छा कोई हर्ज नहीं। अभी मेरे साथ आओ (दोनों गुफा में घुसते हैं। धड़ाका होता है।)

*

* *

छठाँ दृश्य

(मनोहर और सोना का प्रवेश)

सोना—कल ही ?

मनोहर—हाँ सोना, कल ही ?

सोना—लेकिन तुम इतनी जल्दी चले जाओगे यह तो तुमने नहीं कहा था ?

मनोहर—यह तो मैंने भी नहीं समझा था, लेकिन सेठ हरदत्तराय कल ही कलकत्ते जा रहे हैं और परदेस जाते समय ऐसा साथी और सहायक मिल जाय, क्या ऐसा अवसर बार बार आता है ?

सोना—कलकत्ता……कितनी दूर है वह ?

मनोहर—यह तो मैं भी ठीक ठीक नहीं जानता, पर बहुत दूर है।

सोना—और तुम लौटोगे कबतक ?

मनोहर—हो सकता है साल भर में, हो सकता है पाँच साल में, या हो सकता है शायद……

सोना—शायद क्या ?

मनोहर—तुम भूलती हो सोना कि मैं परदेस जा रहा हूँ……कितने बन, नदी, पहाड़ और रेगिस्तान पार

करके मैं वहाँ जा रहा हूँ जहाँ मेरा कोई नहीं, फिर मैं कैसे कहूँ मैं कबतक लौटूँगा ?

सोना—ओ माँ······तब मैं तुम्हें नहीं जाने दूँगी।

मनोहर—पर, पुरुष का जन्म चूड़ियाँ पहन कर घर में बैठने के लिए नहीं होता सोना !

सोना—तो तुमने मेरा हाथ क्या इसी दिन के लिए पकड़ा था—मुझे अकेली छोड़ इतने दिनों के लिए इतनी दूर चले जाने के लिए ?

मनोहर—हाँ······इसलिए कि मैं अपनी सोना को सोना से ढँक दूँ·····

सोना—तुम्हारी सोना सोना की भूखी नहीं है, उसकी तो भूख-प्यास सब कुछ तुम्हीं हो······

मनोहर—किंतु मेरी सोना गुदड़ी में पड़ी रहे, धूल से सनी रहे, यह भी तो मैं नहीं देख सकता।

सोना—नहीं तो फिर मुझे भी अपने साथ ले चलो, तुम मेरी आँखों के सामने रहोगे, इससे अधिक मुझे और कुछ नहीं चाहिए।

मनोहर—किंतु सोना, तुम परदेस जा सकोगी, क्या यह सम्भव है ?

सोना—और तुम परदेस से लौट कर मुझे जीती पाओगे, यह क्या सम्भव होगा ?

मनोहर—पर केवल तुम्हारी ही तो बात नहीं है ? चार-

पाँच महीने में तुम एक बच्चे की माँ होने जा रही हो, उस बच्चे के लिए तुम्हें सब कुछ……जरूरत हो तो मुझे भी भूलना होगा।

सोना—तुम्हें भी भूलना होगा…ईश्वर को धन्यवाद दो कि उसने तुम्हें औरत न बना कर मर्द बनाया… नहीं तो इस ठंढे दिल से तुम आज भूलने की बातें न करते।

मनोहर—लेकिन सोना, मैं परदेस जा रहा हूँ, इसका मतलब यह नहीं कि मैं सदा के लिए ही जा रहा हूँ… एक दिन आयेगा जब हम लोग……

सोना—मालूम नहीं वह दिन कब आयेगा, पर उसके पहले आयेगा कल का दिन…कल का दिन…… उफ …… (जाती है)

मनोहर—सोना! सोना! (जाता है)

* *

*

सातवाँ दृश्य

(वन का दृश्य। झरना झर रहा है, नदी लहरा रही है, चाँद उग रहा है। रह रह कर रात के पशु-पक्षी बोल उठते हैं। नदी-तट पर बैठ कर एक शुभ्र-वसना स्त्री गा रही है। गाड़ियों पर बैठे हुए सेठ हरदत्तराय, मनोहर और नौकरों का प्रवेश।)

गाना

दिन कैसे कटिहें, जतन बताय जइयो।
एहि पार गंगा, ओहि पार जमुना,
ता बिच हमरी मँडइया छवाय जइयो।
अन्तर चीर कागद बनवाइल,
तापर अपनी छुरतिया लिखाय जइयो।
कहत कबीर छुनो हो सन्तो,
बहियाँ पकड़ के रहिया दिखाय जइयो।

सेठ—इस विजन बन में आधी रात को अकेली यह कौन स्त्री गा रही है?

मनोहर—और गले में इतना दर्द भर कर!

सेठ—इधर किसी का घर भी तो नहीं है?

मनोहर—यहाँ से सब से नजदीक जो घर है वह दो कोस पर, और वह भी एक लकड़हारे का।

(सेठ आदि चलना चाहते हैं, इतने में ही स्त्री गाना बन्द करके चिल्ला उठती है। एक विशालकाय मनुष्य काले कपड़े पहने, खंजर लिये उसकी ओर बढ़ता आ रहा है। मनोहर झट गाड़ी से कूद कर उसे बचाने को दौड़ता है। स्त्री पानी में कूदती है. वह आदमी भी कूदता है और पीछे से मनोहर भी कूदता है। इतने में ही कई डाकू निकलते हैं। सेठ हरदत्तराय और उनके नौकरों से डाकुओं की लड़ाई होती है। सेठ के कुछ नौकर घायल होते हैं, कुछ भाग खड़े होते हैं। डाकू गाड़ियों पर से सामान उतारते हैं। दो डाकू सेठ हरदत्तराय को उठा कर चले जाते हैं। इतने में ही पानी से भींगा हुआ, खून से लथपथ मनोहर आता है। डाकुओं से उसका युद्ध होता है। डाकू भाग जाते हैं। गाड़ी पर से सेठजी का बच्चा नीचे गिर कर रो रहा है। मनोहर उसे उठा लेता है और लड़खड़ाता हुआ तलवार टेकता नदी की ओर जाता है।)

(पट-परिवर्त्तन)

परदे पर लिखा है—

'पच्चीस वर्ष बाद'



आठवाँ दृश्य

(कलकत्ते में सेठ मनोहरदास के भवन का एक भाग। एक सोफे पर अध-लेटा-सा विमल अखबार पढ़ रहा है। बगल में रेडियो बज रहा है। विमल की आँखें अखबार पर हैं, लेकिन कान रेडियो पर ही लगे हैं।

गाना

गीत सुना दे कुछ अतीत के हिन्दुस्तान !
सिहर उठें स्वप्निल अम्बर-वसुधा के प्राण,
हिन्दुस्तान !

सुना सुना कुछ कथा-कहानी,
बीते युग की व्यथा पुरानी,
हिम-शिखरों से सागर-तट तक,
बिखरी तेरी कीर्ति-निशानी,
विश्व-सदन के साँध्य-दीप हे, शुचि, अम्लान !
हिन्दुस्तान !

वीर-रत्न कितने उपजाये ?
कितने रक्त-वसन्त मनाये ?
कितनी पद्मिनियों के तू ने
चिता-भस्म के तिलक लगाये ?
कितने कण्ठों से फूटी आहुति की तान ?
हिन्दुस्तान !

(इतने में जूते की टप्-टप् की आवाज आती है। सीटी बजाते हुए श्यामल का प्रवेश। श्यामल के हाथ में टेनिस का रैकेट, स्पोर्टस् कोट, सफेद फ्लैनेल का पैंट, सर पर तिरछा फेल्ट हैट है। कमरे में आकर रेडियो को बजता सुन कर एकाएक ठिठक कर खड़ा हो जाता है। वह गौर से विमल की ओर देखता है, फिर पाकेट से सिगरेट-केस निकाल कर सिगरेट जलाता है, और एक लम्बी फूँक लेकर रेडियो को बन्द कर देता है।)

विमल—क्यों, बंद क्यों कर दिया ?

श्यामल—कृष्णा गा रही है न ?

विमल—हाँ तो ?

श्यामल—अभी तक तो कान्फरेन्सों में ही गाती थी, अब रेडियो पर भी गाना शुरू कर दिया। कृष्णा को इतनी आज़ादी देकर बाबूजी ने उसका सर खराब कर दिया है।

विमल—(रेडियो खोलता हुआ) तुम्हारी बहन इतना अच्छा गा सकती है, तुम्हें तो इसका अभिमान होना चाहिए।

श्यामल—(रेडियो बन्द करता हुआ) मुझे इसका शर्म है। ख़ैर, एक बात सुन लीजिए—

विमल—क्या ?

श्यामल—मैं आपसे यह अर्ज़ करने आया था कि मैं अभी ज़रा क्लब जा रहा हूँ—

विमल—तो इसमें मुझ से क्या पूछना है ?

श्यामल—और निवेदन यह है कि मुझे अभी तुरत पाँच हज़ार रुपयों की सख्त ज़रूरत है।

विमल—रेस के लिए ?

श्यामल—शायद !

विमल—ऐसे खर्चों के लिए रुपये नहीं दिये जा सकते।

श्यामल—मैं कहता हूँ, काज़ीजी को शहर के अंदेशे से दुवले होने की ज़रूरत नहीं। मैं अपने एकाउण्ट के रुपये अपने खर्च के लिए मांगता हूँ—चाहे वह रेस के लिए हो या शराबख़ोरी के लिए।

विमल—मुझे अफ़सोस है बाबूजी ने तुम्हें जो स्वतन्त्रता दी, तुम उसका ऐसा दुरुपयोग कर रहे हो। तुम्हारा एकाउण्ट बन्द कर दिया गया।

श्यामल—कब से ?

विमल—जब से यह मालूम हुआ कि तुम रुपयों से आराम नहीं पाप ख़रीदते हो।

श्यामल—मेरे पापों के लिए किसी दूसरे को तो नरक में नहीं जाना पड़ेगा ? फिर किसी को मतलब ?

विमल—जिन रुपयों से तुम अपने लिए नरक का द्वार खोल रहे हो अगर वे तुम्हें न मिले तो कुछ तो रुकोगे ?

श्यामल—अपने को रोकने और न रोकने की जवाबदेही मुझ पर है, और मैं नहीं चाहता कि मेरी जवाब-

देही को लेकर दूसरे कोई अपने सर में दर्द पैदा करें।

विमल—तुम्हारे लिए सर में दर्द तो सब से ज़्यादा उसी के पैदा होता है, जिसने तुम्हें पैदा किया है। अच्छा हो, इस मामले में तुम खुद बाबूजी से ही बातें कर लो।

श्यामल—बाबूजी के सर में दर्द कहाँ तक पैदा हो रहा है और कहाँ तक पैदा कराया जा रहा है, यह मैं भी, समझ रहा हूँ। ख़ैर, मैं जानना चाहता हूँ आप अभी मुझे पाँच हज़ार रुपये देंगे या नहीं।

विमल—जिस काम के लिए तुम चाहते हो उसके लिए पाँच हज़ार तो क्या पाँच रुपये देने की भी मुझे इजाज़त नहीं।

श्यामल—इजाज़त नहीं! मेरे रुपये, मेरे बाप के कमाये रुपये मुझी को देने की इजाज़त नहीं? जानते हैं (अपनी हीरे की अंगूठी दिखाता हुआ) इसका अंजाम क्या होगा?

विमल—जानता हूँ, बाबूजी की दी हुई यह हीरे की अंगूठी गिरवी रख कर रेस खेलोगे। लेकिन खैर, इसका भी अन्त होगा।

श्यामल—अन्त किस का होगा किस का नहीं, देखा जायगा। (जाना चाहता है। एक नौकर का प्रवेश)

नौकर—वाबूजी की तबियत कुछ ज्यादा खराव हो रही है, उन्होंने आपको बुलाया है (श्यामल से) और आपको भी।

श्यामल—मुझे फुर्सत नहीं—आप जाइए और वाबूजी से कह दीजिए, श्यामल रेस खेलने गया। जहाँ तक नमक-मिर्च लगा कर कह सकिए, मेरे सर की कसम, वहाँ तक कहिएगा ·······मैं आपका शुक्र-गुजार हूँगा ·····extremely thankful...... Cheerio! (जाता है)।

विमल—उफ—व्यसनों में लिपटा हुआ मनुष्य कहाँ तक पशु हो सकता है—चलो—(जाता है)

(शंकर और दामोदर का प्रवेश। दोनों के वेष-भूषा में पहले से बहुत अधिक परिवर्त्तन आ गया है।)

दामोदर—शंकर भैया, मनोहरदास ने इस कल कल के कत्ता में आकर रुपया कमाना तो सीखा, पर उसे रखना नहीं सीखा।

शंकर—और शायद इसी से तुम ने अभी तक कलकत्ते को कलकत्ता कहना नहीं सीखा। तुमने श्यामल के पीछे आदमी लगा दिया ?

दामोदर—हाँ, मालूम हुआ वह अभी राजाराम बग्गड़ के यहाँ जाने वाला था, वहीं गया होगा।

शंकर—उस हीरे की अँगूठी को गिरवी रखने के लिए, जिसकी ताक में राजाराम आज पचीस वर्ष से बैठा हुआ है……हूँ……राजाराम के यहाँ जो तुम्हारा आदमी है उसने क्या खबर दी ?

दामोदर—हाँ, मैं तुम से कहने ही वाला था, उसने राजा-राम के पाकेट में से चुरा कर यह कागज दिया है…

(उसे एक कागज का टुकड़ा देता है)

शंकर—(उसे पढ़ता हुआ) अच्छा यह बात है ? डाक्टर बागची……सोचना होगा। दामोदर, तुम्हारे उस आदमी ने मार्के की जासूसी की है,…डाक्टर बागची …अच्छा ठहरो…(टेलीफोन डाइरेक्टरी खोल कर देखता है, फिर फोन करता है) South 1001...Yes Please...हेलो…डाक्टर शुक्ल…मैं हूँ शंकरमल… जैरामजी की हाँ…हाँ…मैंने अभी आपको कष्ट दिया…एक बात पूछनी थी…बालीगंज में यह जो …क्या नाम है इनका…डाक्टर बागची रहते हैं, उनसे तो आपका परिचय होगा…जी हाँ…जी हाँ…तो वे किस चीज के विशेषज्ञ हैं…जी ?…हाँ …हाँ……अच्छा जी हाँ…ऐसा ? · वाह !… अच्छा…धन्यवाद…नमस्कार। (फोन रख देता है) Toxinology…विष-विज्ञान… डाक्टर बागची विष-विज्ञान का विशेषज्ञ है…कुछ समझे ?

दामोदर—लेकिन यह डाक्टर बागची है कौन ?

शंकर—भेड़ की खाल में भेड़िया···जिसे दुनिया समझती है और मैं भी अब तक समझता आया हूँ एक खब्ती डाक्टर, जिसकी प्रैक्टिस इतनी भी नहीं चलती कि वह अपनी दूकान का किराया अदा कर सके···लेकिन नहीं···डाक्टर बागची बिल में छिपा हुआ सांप है, जिसे राजाराम ने अपने मतलब के लिए अब दूध पिलाना शुरू किया है···।

दामोदर—लेकिन भैया, तुमने तो तिल का ताड़ बना दिया······कहाँ अपने लोग······कहाँ यह डाक्टर बागची······उससे अपने को मतलब क्या ?

शंकर—आसमान में उड़ते हुए बादल और ज़मीन पर बहती हुई नदी का आपस में मतलब क्या ? यह सब एक ही कहानी के अलग-अलग अध्याय हैं, पर अभी तुम नहीं समझ सकोगे दामोदर···यह ज़रा शास्त्र की बात है। अच्छा···मुझे अभी ज़रा डाक्टर बागची से मिलना होगा···तब तक तुम यह पता लो कि श्यामल ने आज क्या-क्या किया।

दामोदर—श्यामल के पीछे इस तरह जासूसी करते फिरने से क्या यह अच्छा नहीं होगा कि उसे घर में बिठा कर ही पूरी नसीहत दी जाय ? वह तो अपने घर का लड़का है···

शंकर—ऐसा ही घर का लड़का विभीषण भी था, जिसने सोने की लंका को खाक में मिला दिया···यह···

दामोदर—शास्त्र की बात है···मान लिया······लेकिन श्यामल को क्या यह ख़याल नहीं होगा कि जिस सम्पत्ति को उसके पिता ने इतनी मिहनत से इकट्ठा किया है, उसे इस तरह नष्ट करना······

शंकर—तुम भूलते हो दामोदर कि जिस सृष्टि को ब्रह्मा चार मस्तिष्क लगा कर रचते हैं और जिसे विष्णु चार भुजाओं से पालते हैं, उसे शिव एक ही मस्तिष्क और दो ही भुजाओं से नष्ट कर देते हैं, पर इसमें न तो उन्हें समय लगता न ग्लानि होती···यह शास्त्र की बात है···लेकिन अभी तुम्हें जो मैंने कहा है वह करो···जाओ···और मैं··· डाक्टर बागची ·····(दोनों दो ओर से जाते हैं।)

* *

*

नवाँ दृश्य

(राजाराम का अखाड़ा। बहुत से लोग तरह तरह के व्यायाम कर रहे हैं। इसी बीच में बाहर मोटर की आवाज सुनाई पड़ती है। एक बार जोर से आवाज कर मोटर की इञ्जिन बन्द हो जाती है। राजाराम बग्गड़ का प्रवेश।)

सभी—आहा! सरकार आ गये···सरकार आ गये। बैठिये सरकार!

(एक आदमी कुर्सी खींच कर राजाराम के सामने रखता है। राजाराम खड़ा ही रहता है।)

राजाराम—नहीं···आज मैं ज़्यादा देर नहीं ठहरूँगा··· (घड़ी देखता हुआ) मुझे एक ज़रूरी काम है। तुम लोग अपना काम करो।

एक—सरकार, अब तो अखाड़े के सालाने जलसे का दिन आ रहा है।

दूसरा—इस बार हम लोग ऐसी-ऐसी करामात दिखायेंगे कि, सरकार, पबलिक दंग रह जायेगी।

तीसरा—पबलिक तो क्या सरकार, आप खुद दंग रह जायेंगे······जी हाँ······क़सम ख़ुदा की······ ऐसे ऐसे करिश्मे हैं।

राजाराम—ऐसा !......(कुर्सी खींच कर बैठ जाता है) तब तो भई, एकाध करिश्मे अभी देख लूँ।

(व्यायाम करनेवाले तरह तरह के व्यायाम दिखाते हैं। राजाराम सब को जी खोल कर दाद देता है। हर खेल के आखीर में नारे लगते हैं—'राजाराम बग्गड़ की जय' 'राजाराम का अखाड़ा जिँदाबाद'।)

राजाराम—वाह ! शाबाश ! सचमुच बहुत अच्छी तैयारी की है तुम लोगों ने।

(एक आदमी छुरे लिये हुए आता है और राजाराम को झुक कर सलाम करता है।)

छुरेवाला—सरकार, अब जरा इस ख़ाकसार को भी इजाज़त बख़्शी जाय......

राजाराम—हाँ, हाँ, शौक़ से !......(एक लकड़ी के तख्ते पर निशान बने हुए हैं। छूरेवाला उन निशानों पर छुरे चलाता है। तालियाँ बजती हैं।)

एक आदमी—(आगे बढ़कर) सरकार, अपने दोस्त की तारीफ़ अपने मुँह से क्या करूँ, लेकिन ऐसे सच्चे निशाने का आदमी इस वख़्त कलकत्ते में नहीं है।

राजाराम—कलकत्ता बहुत बड़ा है मित्र ! ......(पाकेट से पिस्तौल निकाल कर बिना निशाना साधे ही चार-पाँच फायर करता है। तख्ते में जितने छुरे धँसे हुए हैं सभी गिर पड़ते हैं।) लेकिन फिर भी तुम्हारा निशाना

अच्छा है। मैं तुम्हें कुछ काम दूँगा, मेरे साथ चलो। (उठता है)

दूसरा—सरकार एक खेल और बाकी रह गया है, उसे भी ग़ौर फ़रमायें।

राजाराम—क्या ?

दूसरा—(एक मनीवेग निकाल लर) सरकार ने अपने पाकेट में यह मनीबेग रखा था, न जाने किस तरह वह मेरे पाकेट में चला आया। (सभी हँसते हैं)

राजाराम– मित्र! यह खेल भी मेरे अखाड़े में होता है यह मैं पहले से ही जानता था, इसलिए अगर तुम उस मनीवेग को खोलो तो सिवा सादे कागज के उसमें कुछ और नहीं निकलेगा। (मनीवेग खोला जाता है। उसमें सिर्फ सादे कागज निकलते हैं। सभी हँसते हैं। 'वाह सरकार' की धूम मच जाती है।)

राजाराम—(अपना मनीवेग निकालते हुए) यह देखो मेरा मनीवेग···और यह लो (कुछ नोट निकाल कर छींट देता है) अच्छा···अक्लू···मंगरू···जयराम······ तुम लोग मेरे साथ आओ।

(प्रस्थान)

पट-परिवर्तन

(अक्लू, मंगरू और जयराम के साथ राजाराम का प्रवेश।)

राजाराम—क्यों ? मंजूर है ?

अकलू—सरकार, आपके लिए तो जान तक हाजिर है। सब मंजूर ही मंजूर है।

मंगरू—यही है कि काम ज़रा जोखिम का है।

जयराम—यह तो सरकार का इक़बाल है जिस पर भरोसा करके हम लोग ऐसा जोखिम भी अपने सर पर उठा लेते हैं·····नहीं तो·····

राजाराम—मैं जानता हूँ और इसी से तो कहता हूँ कि अगर यह काम हो गया तो फिर तुम लोगों को इस जिन्दगी में दूसरा काम करने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। मैं तुम लोगों को निश्चिन्त कर दूँगा।

अकलू—इसका तो हम लोगों को विश्वास है सरकार!

मंगरू—और न भी हो तो क्या है? इतने दिन सरकार का नमक खाया है···वक़्त पर काम नहीं करेंगे?

जयराम—ज्यादा से ज़्यादा फाँसी ही तो होगी? कोई जान तो मारेगा नहीं! हम लोग राज़ी हैं सरकार!

राजाराम—शाबाश! मुझे तुम लोगों से ऐसी ही उम्मीद थी। अच्छा फिलहाल यह लो, (नोट निकाल कर देता है) और मेरे साथ आओ। (सभी जाते हैं)

* *

*

दसवाँ दृश्य

(सेठ मनोहरदास के सोने का कमरा। सेठजी मसनदों के सहारे अधलेटे-से बैठे हैं। पास में बैठी सोना उनके सरपर पट्टियाँ लगा रही है। बगल में एक रेडियो रखा है। विमल का प्रवेश।)

विमल—कैसी तबियत है बाबूजी ?

सेठ—अच्छी नहीं, और यहाँ इस तरह अच्छी हो सकेगी इसकी उम्मीद भी नहीं···बैठो।

विमल—तो अभी डाक्टर को फोन करूँ क्या ?

सेठ—नहीं नहीं, डाक्टर की अभी कोई जरूरत नहीं, तुम बैठो।

विमल—(बैठते हुए) मेरी तो राय थी कि कुछ दिनों के लिए हवा-पानी बदलने के लिए आप कहीं······

सेठ—इस सम्बन्ध में मैं क्या करना चाहता हूँ यही कहने के लिए तो तुम्हें बुलाया है। कृष्णा कहाँ है ?

विमल—रेडियो पर गाने गई थी, अब लौटती ही होगी।

सोना—इतनी सयानी लड़की है, शादी होने को आई··· उसका रेडियो पर गाने गाना क्या अच्छा लगता है ? तुम मना क्यों नहीं करते ?

सेठ—क्यों, रेडियो पर गाने में बुराई क्या है जो उसे मना करूँ ?

सोना—गाना है तो घर में गाये, रेडियो पर गाने से लोग क्या कहेंगे ?

सेठ—सिर्फ लोगों के कहने पर ही चलना होता सोना. तो आज मैं कलकत्ते में न होता और न तुम यहाँ होती।

सोना—लेकिन तुम्हारी बात और थी, कृष्णा लड़की है।

सेठ—लेकिन लड़की मेरी ही तो है ? (कृष्णा का प्रवेश। वासंती रंग की खद्दर की साड़ी। हाथ में खद्दर का एक झोला, दो-तीन पुस्तकें, आँखों पर चश्मा।)

कृष्णा—कौन कहता है मैं आपकी लड़की हूँ ?

सोना—लो यह सुनो !

कृष्णा—मैं तो भारत माता की लड़की हूँ। हिमालय के शिखरों से लेकर महासागर की लहरों तक फैली हुई गंगा-यमुना का हार, विन्ध्य की मेखला और कृष्णा-कावेरी के नूपुर पहने हुई अपनी सुजला-सुफला-शस्यश्यामला जन्म भूमि की लड़की हूँ। प्राचीन युग में जिसने संसार को अन्धकार से ज्योति का, असत् से सत् का और मृत से अमृत का मार्ग दिखाया, और वर्त्तमान युग में जो मानवता को स्वार्थ के विरुद्ध सेवा-भाव का, हिंसा के विरुद्ध अहिंसा का और युद्ध के विरुद्ध शांति का सन्देश दे रही है मैं उसी आर्य्य-संस्कृति की

लड़की हूँ—बाबूजी आज आपने रेडियो पर का मेरा भाषण सुना ?

सोना—लेकिन इससे पहले बाबूजी की तबियत कैसी है, यह तू ने पूछा ?

कृष्णा—ओह, यह तो पूछना मैं भूल ही गई। इस वक्त तबियत कैसी है आपकी बाबूजी, मैं अभी थर्मामीटर लाती हूँ······

सेठ—नहीं, नहीं, रहने दे ·····मैंने तेरा भाषण सुना, खूब अच्छा था······आ बैठ।

कृष्णा—नहीं बाबूजी, वह तो कुछ भी नहीं था। आप मेरा दूसरा भाषण सुनिएगा। आज योरोप की और उनकी सभ्यता की नकल करने वाली हमारे देश की ये स्त्रियाँ, जो स्वतन्त्रता के नाम पर विलास की आराधना करती हैं, अधिकारों के लिए लड़ने के नाम पर अपने स्त्रीत्व की जवाबदेहियों से छूटना चाहती हैं और अपने भोग के आदर्श को ऊँचा रख कर हमारे त्याग के आदर्श को नीचा दिखाना चाहती हैं, वे क्या जानें क्या है हमारे भारत का स्त्रीत्व ? जो सिर्फ सज-धज कर अप्सराएँ बनी रहना चाहती हैं, वे क्या जानें क्या है मातृत्व ?

सेठ—तू खोज क्या रही है ?

कृष्णा—थर्मामीटर न……

सेठ—(हँसते हुए) रहने दे, रहने दे…तेरा जब भाषण होगा तो मैं जरूर सुनूँगा, अब जो मैं कह रहा हूँ वह सुन……विमल, श्यामल कहाँ है ?

विमल—श्यामल तो……

सेठ—क्यों ? अच्छा आज शनिवार है न ? रेस खेलने तो नहीं गया है ?

विमल—शायद……

सेठ—और उसे रुपये किसने दिये ?

विमल—मुझ से उसने रुपये मांगे थे, पर मैंने नहीं दिये।

सेठ—तब फिर रुपये उसे कहाँ मिले ?

विमल—वह अपनी हीरे की अंगूठी गिरवी रख कर……

सेठ—हीरे की अंगूठी…वही जो उसके जन्म-दिन पर मैंने उसे दी थी ?

विमल—हाँ, वही…

सेठ—उफ……वह मूर्ख क्या जाने वह अंगूठी किसकी निशानी है और मेरी आँखों में उसकी क्या कीमत है…खैर, विमल, आज जो कुछ कहने के लिए मैंने तुम्हें बुलाया है वह सुनो…और कृष्णा, तुम भी।

सोना—तो मोटर भेज कर श्यामल को भी बुलवा लीजिए न !

सेठ—जिसे मेरी बातें सुनने का समय नहीं, उसे अपनी

बातें सुनाने का समय मुझे भी नहीं। यह किसी का दोष नहीं सोना, उसके प्रारब्ध का दोष है।

सोना—तुम्हें ऐसा नहीं कहना चाहिए।

सेठ—(उसका हाथ अपने हाथ में लेकर) पिता जब पुत्र के प्रारब्ध को दोष देता है तो इसका मतलब यह नहीं होता सोना, कि वह उसे शाप देना चाहता है। यदि पिता के आशीर्वाद में बल होता, तो आज यह संसार स्वर्ग और यहाँ के सभी मनुष्य देवता होते···किंतु······।

सोना—किंतु तुम श्यामल के पिता होकर यदि उसे आशीर्वाद नहीं दोगे तो कौन देगा ?

सेठ—सोना, तुम उसकी माँ हो और माँ केवल आशीर्वाद ही दे सकती है, पर मैं उसका पिता हूँ और पिता को केवल आशीर्वाद ही नहीं, समय होने पर दंड भी देना पड़ता है।

विमल—पर बाबूजी, मुझे विश्वास है कि समझा-बुझा कर अभी भी श्यामल को अच्छे रास्ते पर लाया जा सकता है।

सेठ—विमल, आज पच्चीस वर्ष हुए जब पहले-पहल मैंने अपनी जन्मभूमि छोड़ विदेश-यात्रा की थी और तब से आज तक कितने परिश्रम, लगन और तपस्या से मैंने यह सम्पत्ति इकट्ठी की, यह केवल मैं ही

जानता होऊँ सो बात नहीं, तुम लोग भी तो जानते हो ? फिर रेस, फाटके और जुए में धन लुटानेवाला, भोग-विलास में पड़ा हुआ, अपनी आदतों का गुलाम यह श्यामल उस सम्पत्ति की रक्षा कर सकेगा, ऐसा क्या स्वप्न में भी विश्वास किया जा सकता है ?

सोना—पर अभी तो वह बच्चा है !

सेठ—हाँ···और जिस दिन देश-विदेश की ठोकरें खाने मैं निकला था, उस दिन मैं भी बच्चा था, लेकिन खैर, छोड़ो उन बातों को। आज मैं अपने जीवन का सब से महत्वपूर्ण काम करने जा रहा हूँ और वह यह है कि विमल, तुम मेरी सारी सम्पत्ति के सम्पूर्ण अधिकारी होगे······।

विमल—किंतु बाबूजी···

सेठ—ठहरो, मेरी पूरी बात सुन लो। आज से पच्चीस वर्ष पहले तुम्हारे स्वर्गीय पिता सेठ हरदत्तरायजी ने मेरे ऊपर जो उपकार किया था उसका ऋण इस जीवन में मैं नहीं चुका सकता। डाकुओं ने उन्हें मार कर जब उनकी लाश नदी में फेंक दी, तो तुम्हें लेकर मैं भागा और असंख्य मुसीबतों का सामना करता हुआ यहाँ कलकत्ते पहुँचा। तब से मैंने तुम्हें अपने पुत्र के समान पाला है और

मुझे खुशी है कि तुम में भी वे ही सारे गुण हैं, जो तुम्हारे पिताजी में थे।

विमल—बाबूजी, आपने मुझे पढ़ा-लिखा कर सयाना किया, और मुझे इस योग्य बनाया कि मैं अपने पिताजी का योग्य पुत्र कहला सकूँ, मेरे लिए क्या यही कम है?

सेठ—बेटा, तुम जो कुछ हुए स्वयं हुए, नहीं तो मेरे किए अगर कुछ होना होता, तो क्या श्यामल आज ऐसा आवारा निकलता? लेकिन अब तुम यह सब भूल जाओ अब से यही समझो कि तुम हरदत्तरायजी के नहीं मेरे पुत्र हो और मेरी सम्पत्ति तुम्हारी है।

विमल—पर मैं यह स्वीकार नहीं कर सकता बाबूजी, आपकी सम्पत्ति पर श्यामल और कृष्णा का अधिकार होना चाहिए।

सेठ—विमल, तुम मेरी इच्छा के विरुद्ध नहीं जा सकते। अपनी एड़ी-चोटी का पसीना एक कर मैंने सम्पत्ति इसलिए नहीं कमाई है कि मेरे बाद उसका नाश हो जाय। श्यामल कुपुत्र है और कृष्णा अभी बच्ची है और मैं बहुत शीघ्र कलकत्ते से जाने वाला हूँ, न जाने कब तक के लिए···इसलिए······

कृष्णा—आप कहाँ जाने वाले हैं बाबूजी?

विमल—और कब तक के लिए ?

सेठ—इसका ठीक उत्तर मैं अभी नहीं दे सकूंगा। मैं तुम से कह चुका हूँ कि तुम्हारे पिताजी को बचाते समय मुझे डाकुओं से लड़ना पड़ा था। वे डाकू मुझे मार तो नहीं सके, पर उनके हथियार जहरीले थे, जिस का परिणाम यह हुआ कि जहर मेरे खून में मिल गया। तब से मैंने बहुत चिकित्सा कराई, पर कोई डाक्टर इसका इलाज़ न कर सका। अब एक ही अंतिम इलाज मेरे लिए बचा है और वह है हिमालय के एक महात्मा का, जो कैलाश पर्वत के पास रहते हैं। मुझे अब वहीं जाना होगा, और बहुत जल्द······ठहरो···मेरी बात सुन लो। मेरे यहाँ न रहने पर मेरी सारी सम्पत्ति की देख-रेख तुम्हें करनी होगी। यदि मैं जीवित हिमालय से लौट आया तो अच्छा ही है, नहीं तो मेरी सम्पत्ति का और साथ ही कृष्णा का भार तुम्हारे ऊपर होगा···ठहरो···मैं कुछ भी सुनना नहीं चाहता। श्यामल के सम्बन्ध में क्या करना होगा यह भी तुम्हें समझाना होगा मेरे साथ आओ। (प्रस्थान)

(काले कपड़े पहने नकाब डाले अकलू, मँगरू और जयराम का प्रवेश ।)

अकलू—बस, मैदान खाली है । मंगरू तुम वहाँ छिप जाओ और जयराम, तुम वहाँ । मैं यहाँ हूँ, मेरा इशारा पाते ही टूट पड़ना···एक साथ···और बस···
(हाथ का इशारा करता है । तीनों छिप जाते हैं । कृष्णा और विमल का प्रवेश)

विमल—यह कदापि नहीं हो सकता, कृष्णा, बाबूजी की सम्पत्ति पर तुम्हारा और श्यामल का अधिकार होगा ।

कृष्णा—बाबूजी की सम्पत्ति पर उसका अधिकार होगा, जिसे बाबूजी चाहें और बाबूजी तुम्हें चाहते हैं । उनकी इच्छा के विरुद्ध जाना तुम्हारा कर्त्तव्य नहीं है ।

विमल—पर साथ ही मेरा कर्त्तव्य यह भी नहीं है कि मैं श्यामल को उसके अधिकारों से वञ्चित कर दूँ । यदि बाबूजी की कोई इच्छा है तो मेरी भी अपनी कोई इच्छा है···यदि उनका कोई कर्त्तव्य है तो मेरा भी कोई कर्त्तव्य है···और वह क्या है सुनोगी कृष्णा ?

कृष्णा—बताओ ।

विमल—(कृष्णा का हाथ पकड़ते हुए जरा रुक कर) मैं बाबूजी

की केवल एक ही चीज उनसे माँगूँगा और वह होगी उनकी सारी सम्पत्ति से सौगुनी बेशकीमत उनकी एकलौती···लड़की···कृष्णा···

कृष्णा—(अनखाती हुई) तुम बड़े वो हो······

विमल—और इस एक कृष्णा को पाकर मैं अपनी नई जीवन-यात्रा शुरू करूँगा। वैसे ही जैसे आज से पच्चीस वर्ष पहले बाबूजी ने शुरू की थी और तब··· तब·· कौन है ? (आवाज़ होती है, तीनों डाकू बाहर निकलते हैं। कृष्णा चिल्ला उठती है)

अकलू—यात्रा शुरू करने में बहुत विघ्न होते हैं बाबूजी··· चिल्लाओ मत बिटिया···तुम से हम कुछ नहीं बोलते···हमें तो ज़रा इन बाबूजी से निपटना है।

विमल—तुम लोग हो कौन ?

मंगरू—यमदूत···

विमल—अच्छा तो यमलोक जाने की इच्छा है ? (पिस्तौल निकालना चाहता है।)

जयराम—आपको साथ लेकर बाबूजी···(तीनों एक साथ आक्रमण करते हैं। विमल से तीनों की लड़ाई होती है। तीनों घायल होते हैं। शंकर का प्रवेश।)

शंकर—(हाथ में पिस्तौल लिए) शाबश विमल, मुझे खुशी है तुम कृष्णा के योग्य पति हो सकोगे।

कृष्णा—शंकर काका, आप अच्छे मौक़े से आ गये।

शंकर—बेटी, यह न समझना विमल यहाँ अकेला था। यह लड़ाई अगर अभी यहाँ मैंने होने दी, तो सिर्फ़ यह जानने के लिये कि हमारी कृष्णा को लेकर जो अपनी जीवन-यात्रा करना चाहता है, उसके शरीर में बल और हृदय में साहस कितना है और विमल, रामचन्द्र को सीता से विवाह करने के लिए शिव का धनुष तोड़ कर जैसे अपनी शक्ति की परीक्षा देनी पड़ी, वैसे ही इसे भी समझो··· शास्त्र की बात है······(तीनो डाकुओं से) तुम लोग अब जा सकते हो।

अक्लू—सरकार···हम लोगों को माफ़ किया जाय··· हम लोग··· ··

शंकर—नरक के कीड़ो···जाओ···जिसने तुम्हें भेजा है उसे अपनी ये काली शक्लें दिखाओ और उससे कहो, वह एक बार खुद यहाँ आकर अपने दिमाग़ और छाती की ताक़त को तौल जाय···जाओ··· (तीनों जाते हैं)

कृष्णा—उफ़···यह सब श्यामल भैया की ही तो करतूत है ? उनका ऐसा पतन ?

शंकर—कृष्णा, तुम्हें यह जान कर आश्चर्य होगा कि आज की इस घटना की श्यामल को ख़बर तक न होगी, श्यामल निर्दोष है।

विमल—ईश्वर करे ऐसा ही हो।

शंकर—विमल, तुम मनुष्य नहीं देवता हो, लेकिन ..... लेकिन अफ़सोस तो यही है कि यह पृथ्वी बनी है सिर्फ़ मनुष्यों के लिए ही। अगर ऐसा न होता तो शिव को कैलाश, विष्णु को क्षीरसागर और इन्द्र को स्वर्ग में रहने की क्या ज़रूरत पड़ती? शास्त्र की बात है। (तीनों जाते हैं)





ग्यारहवाँ दृश्य

(स्थान कलकत्ते का बाजार। बहुत तरह के फेरी वाले बहुत-सी चीजें बेच रहे हैं। हाथ में सब्जी का झोरा और बगल में मछली दबाये डाक्टर बागची का प्रवेश। दूसरी ओर से एक पापड़ बेचनेवाले का प्रवेश।)

पापड़वाला—पापड़ लो पापड़! पापड़ चाहिए बाबूजी?

डाक्टर—(चश्मा लगाकर उसे गौर से देखता है) नेई......

पापड़वाला—बाबूजी, ज़रा देख तो लीजिए...

डाक्टर—आमी की देखेगा? आमार को दारकार नेई...

पापड़वाला—ठीक है, लेकिन देखने में तो कोई हर्ज नहीं ?

डाक्टर—हाम कौन है तुमी जानी ? हाम डाक्टर हाय, तुम्हारा माफिक हाम को एई खानी ओई खानी बूलने का फुरसत नेई हाय···हमारा ठो Precious time......हम तुम्हारा माफिक सातू नेई खाता······(शंकर का प्रवेश)

शंकर—डाक्टर बागची. जो सत्तू यह खाता है अगर वह संसार के सभी प्राणी खाते होते, तो आज पृथ्वी पर तुम जैसे डाक्टर-नामधारी जीवों की जरूरत नहीं पड़ती। जानते हो गुरु द्रोणाचार्य सत्तू खाते थे, जो बुढ़ापे में कुरुक्षेत्र में सेनापति बने थे और सुग्रीव के सेनापति वृद्ध जामवंत को भी सत्तू विशेष रूप से प्रिय था, जिन्होंने वृद्धावस्था में रावण से मोर्चा लिया था ? शास्त्र की बात है।

डा०—(चश्मे के भीतर से गौर से उन्हें देखता हुआ) हेलो सेठ शांकरमोल जी···Good Morning ! How are you ? आप कैसा है ? (शेक हैंड करने के लिए मछली को दूसरे हाथ में रख कर हाथ बढ़ाता है)

शंकर—द्वापर में एक मत्सगंधा थी कि कलियुग में एक तुम हो, वह स्त्री थी तुम पुरुष हो, बस यही भेद है। बस दूर से ही जयरामजी करो···क्यों पापड़ खरीद रहे हो क्या ?

डाक्टर—पापड़ ठो तो आमी खाता नेई हाय…एई ठो बोहुत गोंदा होता हाय।

शंकर—और तुम्हारी मछली बड़ी पवित्र होती है,, क्यों ?

डाक्टर—माछ का बात तो दूसरा हाय…एई ठो तो पानी का तारकारी हाय।

शंकर—और जानते हो यह पापड़ क्या है ? स्वर्ग में इन्द्र का जो नन्दन-बन है उसमें एक है कल्प-वृक्ष। उसमें गोल-गोल पत्ते होते हैं, जिनका नाम है कल्प-पत्र। उन्हें देवता लोग कच्चे ही खाते हैं, जिसका फल है कि वे अजर-अमर होते हैं। एक बार आजमाने के लिए नारद-ऋषि ने खा लिया था, जिसका परिणाम हुआ कि वे विवाह के लिए पागल हो उठे और उन्हें नारद-मोह हो गया। फिर त्रेता में दशरथ की तीनों रानियों को यज्ञ का हविष्य खिलाने के बाद यही कल्प-पत्र खिलाया गया था, जिस से उन्हें संतानें हुईं……

डाक्टर—एई ठो साच हाय ?

शंकर—और नहीं तो क्या ? कौशल्या और कैकेयी ने एक-एक खाया। सुमित्रा को बहुत अच्छा लगा तो उसने चुरा कर एक और खा लिया, जिससे उन्हें दो पुत्र हुए। फिर द्वापर में भीम ने इस कल्प-पत्र को अपना विशेष भोजन बनाया, सो

एक रोज कृष्णचन्द्र पाण्डवों के मेहमान बने। जब आधी रात हुई तो कृष्णचन्द्र को भूख लगी। उन्होंने किसी को जगाया तो नहीं, अपनी आदत के मुताबिक सोचा चुरा कर ही कुछ खा लिया जाय। बस, क्या था रसोई घर में पहुँचे। पर वहाँ माखन-मिश्री तो मिली नहीं, मिले केवल ये ही थोड़े-से कल्प-पत्र। उन्होंने जो चुपके खाना शुरू किया तो पड़-पड़ की आवाज होने लगी और लोग जग उठे। जब द्रौपदी ने उनकी चोरी पकड़ी तो कृष्णचन्द्र बहुत शर्माये और उसी दिन से इस कल्प-पत्र का नाम पड़ा—'पापड़'! समझे? शास्त्र की बात है!

डाक्टर—ओ···Marvellous!...दारुण!···चोमोत्कार! आप ठो तो बाहुत शास्त्र जानता हाय आमी तो जानता नेई···ता होले आमी ठो पापड़ खोरीदेगा। बाकी आमी तो जानता नेई पापड़ ठो किस माफिक खाया जायगा।

शंकर—इसकी चिंता न करो। तुम पापड़ खरीदो, वह खाया किस तरह जायगा, इसकी शिक्षा तुम्हें मैं दूँगा। तुम मुझे अपने यहाँ निमन्त्रण दो मैं खाकर तुम्हें बता दूँगा।

डाक्टर—वेश···वेश···एई ठो All right···ताहोले आमार

को एक रूपिया का पापड़ दाव रे भाई···हाँ, एक रूपिया का···(पापड़वाला पापड़ तौलता है) आच्छा ···ता होले संझा को आप हमारा बाड़ी ठो आयेगा···हाम आपको invitation देता है··· Just light refreshment.

शंकर—अवश्य ! अवश्य ! प्रत्येक ब्राह्मण का कर्त्तव्य है कि वह वैष्णवधर्म का प्रचार करे, वैष्णवधर्म का मुख्य सिद्धान्त है कि लोग सात्विक भोजन करें और सात्विक भोजन वही है जिसके अन्त में पापड़ खाया जाय। जिस तरह धर्म-संस्थापन के लिए भगवान को बार बार अवतार लेना पड़ता है, उसी तरह पापड़ के प्रचार के लिए ब्राह्मण को बार बार निमन्त्रण स्वीकार करना पड़ता है···शास्त्र की बात है ! मैं अवश्य आऊँगा। जैरामजीकी।

(जाता है—सभी का प्रस्थान)



बारहवाँ दृश्य

(राजाराम बग्गड़ के बैठक के कमरे का दृश्य। एक सेफ को खोल कर उसके सामने कुछ जवाहरात फैलाए हुए बग्गड़ बैठा है—थोड़ी दूर पर बैठा एक बुड्ढा कुबड़ा आँख में शीशा लगाए हथौड़े से कुछ ठोंक रहा है।)

राजाराम—बारह और एक तेरह……दादाजी, जरा इधर आना तो…

कुबड़ा—(नक्की आवाज में) तेरा सत्यानाश हो…कितनी बार कहा तुझ से मैं अब खिसक भी नहीं सकता, मेरे लिए वह हाथ वाली गाड़ी मंगा दे, लेकिन तू क्यों सुनेगा ? मैं नहीं आ सकता……

राजाराम—तुम आ सकते हो !…

कुबड़ा—मैं नहीं आता…

राजाराम—(पैर पटक कर) इधर आओ !…

(कुबड़ा भुन-भुन करता हुआ मेढ़क की तरह उछलता हुआ आता है। राजाराम उसे एक टेबुल पर बैठा देता है।)

राजाराम—मेरे पूज्यपाद दादाजी, ईश्वर की सौगन्ध, तुम भी म्यूजियम में रखी जाने लायक एक चीज़ हो। अब यही बताओ, कौन कह सकेगा कि

सन् सत्तावन के गदर के वख्त तुम पचीस बरस के एक सुन्दर नौजवान थे……

कुवड़ा—सत्ताइस वरस का था मैं और तेरी दादी थी नौ बरस की, और तेरा सत्यानाश हो, क्या कहलाता है कि……

राजाराम—बिल्कुल ठीक…और फिर कौन कह सकेगा कि तुम एक ऐसे जबर्दस्त डाकू थे, जिसके नाम से…

कुवड़ा—डाकुओं का सरदार! तेरा बाप जब जवान हुआ तों मैं पचहत्तर बरस का था, उसी साल तेरी दादी मरी और तेरा बाप सरदार हुआ और मैं……

राजाराम—बिल्कुल ठीक…और फिर बताओ, कौन कह सकता है किसी जमाने में तुम ने अपने इस खूब-सूरत गले में एक हार पहना था, जिसमें तेरह हीरे जड़े हुए थे, जिसमें से ग्यारह तो आज लंडन के राजमहल में रखे हुए हैं और बारहवाँ यह है…पह-चानते हो? (अंगूठी में जड़ा हुआ एक हीरा उसे देता है। कुबड़ा उसे गौर से देखता है।)

कुबड़ा—ऊँ…वही तो है…वही है…बिल्कुल वही है, कहाँ पाया तू ने इसे? तेरा सत्यानाश हो…

राजाराम—पृथ्वी गोली है मेरे पूज्यवर दादाजी! बहुत-सी चीज़ें जहाँ से चलती हैं, फिर वहीं लौट कर आ जाती हैं। अच्छा, यह तो बताओ बाबूजी ने

जब सेठ हरदत्तराय पर हमला किया तो उन्हें कैसे मालूम हुआ कि यह हीरा उनके पास है ?

कुबड़ा—जासूस ने ख़बर दी थी कि एक अंगरेज व्यापारी से हरदत्तराय ने ये दो हीरे ख़रीदे थे, लेकिन उसे मारने पर उसके पास मिला एक भी नहीं। मैं इस हीरे को पहचानता हूँ···पर यह तुझे मिला कहाँ···तेरा सत्यानाश हो ?

राजाराम—अच्छा दादाजी, इसकी कीमत लगा सकते हो ?

कुबड़ा—पचीस हजार ! यह हीरा इतना भाग्यवान है कि जो इसे पहने, दुनिया में कोई उसे जीत नहीं सकता। इसी लिए तो तेरे बाप ने इसे पाने के लिए हरदत्त-राय पर हमला किया था, पर यह उसे मिला नहीं और यह तुझे मिल गया, तेरा सत्यानाश हो···अब यह तो बता···वह दूसरा हीरा कहाँ है ?

राजाराम—वह भी वहीं है जहाँ यह था और वहीं आयेगा जहाँ यह आया है, लेकिन वह हीरा अकेला नहीं आयेगा, उसके साथ एक मणि भी आयेगी और··· क्या है ? (एक नौकर का प्रवेश)

नौकर—श्यामलदासजी आये हैं।

राजाराम—बुला लाओ। (नौकर जाता है) दादाजी, अब तुम अपनी जगह पर जाओ। (कुबड़े को टेबुल पर से उतार देता है)

कुबड़ा—लेकिन तेरा सत्यानाश हो···तू ने बताया नहीं यह तुझे मिला कहाँ···

राजाराम—अभी तुम जाओ···

कुबड़ा—लेकिन मैं पूछता हूँ, तेरा सत्यानाश हो···

राजाराम—जाओ ! (कुबड़ा उचकता हुआ जाता है, श्यामलदास का प्रवेश ।)

श्यामल—राजारामजी, नमस्कार !

राजाराम—नमस्कार भाई श्यामलदास ! बड़ी उम्र होगी तुम्हारी। मैं अभी यही सोच रहा था तुम्हें कहाँ फ़ोन करूँ···मुझे यह सुन कर सख़्त अफसोस हुआ कि कल के रेस में तुम्हें पाँच हजार का नुक़सान हुआ···शायद तुम्हें कोई ग़लत टिप मिल गया···(घंटी बजाता है)

श्यामल—अमाँ यार, हटाओ उस बात को, नुक़सान और फ़ायदा तो लगा ही हुआ है जिन्दगी में। मुझे अब परेशानी जरा यही है कि मैंने स्पोर्टस् कार जो खरीदने का ठीक किया है उसका क्या करना। (नौकर का प्रवेश)

राजाराम—जाओ सोडा और ह्विस्की लाओ और एक पैकेट केवेंडर्स···

श्यामल—अभी रहने दो यार। अभी तुरत होटेल से दो पेग लेकर आ रहा हूँ।

राजाराम—बस, ऐसी बात करते हो तो मेरे बदन में आग लग जाती है। जानते हो दो पेग बीमारों की खूराक है, जैसे बार्ली का पानी या साबूदाना, (नौकर से) जाओ, और देखो पान भी लेते आना। (नौकर जाता है) देखो श्यामल, तुम जैसे एक करोड़पती के लड़के को पाँच हजार की एक स्पोर्टस् कार खरीदने में परेशानी हो यह सुन कर संसार को आश्चर्य होगा, लेकिन मुझे नहीं होता···

श्यामल—भई, बात यह है कि···

राजाराम—कि तुम्हारे श्रद्धेय पिताजी ने तुम्हें एलाउएन्स देना बन्द कर दिया है ? नहीं, नहीं, यह बात नहीं है। (नौकर सोडा और शराब लेकर आता है। राजाराम उसे दो गिलासों में डालता है। एक श्यामल को देता है, एक खुद लेता है) बात यह है मित्र, कि परमात्मा ने जब बहुत-सी विचित्र चीजें बनाईं, उस समय दो बिचित्र प्रकार के प्राणी बनाये। उनमें से एक वे जो अपनी चीज को भी अपनी नहीं बना सकते. जैसे अपनी नाभि में कस्तूरी लिये बन-बन फिरने वाला कस्तूरी-मृग, या जैसे करोड़पती सेठ मनो-हरदास के लड़के तुम श्यामलदास, और दूसरे वे जो दूसरों की चीज अपनी बना कर उन्हें उससे बञ्चित कर दे सकते हैं; जैसे दूसरों के बनाये हुए

बिल में घुस कर रहने वाला साँप, या जैसे मरे हुए हरदत्तराय का कंगाल लड़का विमल······

श्यामल—लेकिन भई, तुम समझ सकते हो, यह दोष तो मेरा नहीं, बाबूजी का है।

राजाराम—इसमें दोष किसी का नहीं है श्यामलदास, यही तो इसकी सबसे बड़ी विचित्रता है। क्योंकि दोष किसी को तभी तक दिया जा सकता है, जब तक यह माना जाय कि वह अपनी इच्छा और अपने विवेक से काम कर रहा है, लेकिन फ़र्ज़ करो, अगर तुम्हें यह मालूम हो कि तुम्हारे पिताजी अपनी सारी सम्पत्ति तुम्हारे बदले विमल को वसीयत करने जा रहे हैं, तो भी क्या सिर्फ़ तुम उन्हें दोष ही देते निष्क्रिय बैठ रहोगे ?

श्यामल—लेकिन···लेकिन···यह असंभव है !

राजाराम—मैं तुम्हारी छाती में झूठमूठ की धड़कन पैदा नहीं करना चाहता, मित्र ! लेकिन मेरा कर्त्तव्य मुझ को बाध्य करता है कि मैं तुम्हें आगाह कर दूँ कि जिसे तुम असंभव कह रहे हो वह केवल संभव ही नहीं, निश्चित है।

श्यामल—लेकिन मैं विश्वास नहीं कर सकता···

राजाराम—तुम विश्वास नहीं कर सकते यही तो तुम्हारी विचित्रता है, लेकिन दुःख तो यह है कि तुम्हारे

विश्वास के लिए संसार का क्रम रुका नहीं रहेगा···तुम जानते हो तुम्हारे पिताजी कहीं जाने वाले हैं ?

श्यामल—न जाने उन्हें कौन-सा रोग है. जिसकी दवा एक हिमालय के संन्यासी से कराने के लिए जा रहे हैं।

राजाराम—जिस रोग की दवा कलकत्ते के बड़े-से-बड़े डाक्टर न कर सके उसकी दवा हिमालय का एक संन्यासी कर सकेगा, यह एक ऐसी बात है जिसे समझने के लिए मेरा दिमाग यथेष्ट नहीं। फिर भी ख़ैर, अगर तुम अपने पिताजी से पूछोगे कि उनके न रहने पर यहाँ सम्पत्ति का सारा प्रबन्ध किसके हाथों में रहेगा, तो तुम्हें मालूम होगा कि सब कुछ विमल के हाथों में होगा और तुम होगे उसके अधीन······

श्यामल—लेकिन तुमने यह कैसे जाना ?

राजाराम—मैं इस लिए सब कुछ जानता हूँ मित्र, कि जानना मेरा कर्त्तव्य है। और तुम्हें भी जना देना इसलिए मेरा कर्त्तव्य है, जिसमें समय रहते अपने अधिकारों की रक्षा करने का तुम यत्न कर सको···(शराब देता हुआ) और लो···

श्यामल—लेकिन फिर कृष्णा भी तो है ? उसका क्या होगा ?

राजाराम—अच्छी याद दिलाई तुमने····· (घड़ी देखता हुआ) ज़रा रुक जाओ···Wait a minute (कुर्सी से उठ कर रेडियो खोलता है, गाने की आवाज आती है)

राजाराम—यह कृष्णा ही है न, तुम्हारी बहन ?

श्यामल—बन्द कर दो इसे···बन्द कर दो !

राजाराम—(बन्द करता हुआ) करोड़पती सेठ मनोहरदास की सयानी इकलौती लड़की रेडियो पर गाती फिरे, इससे क्या सेठ साहब को या जिस समाज में वे हैं उसे विशेष गौरव मिलता है ?

श्यामल—इसका उत्तर मैं नहीं दे सकता।

राजाराम—और कोई नहीं दे सकता। सिर्फ़ वही दे सकता है, जिसके षड़यन्त्र के ये सभी भिन्न-भिन्न पहलू हैं। जो सेठ मनोहरदास को हिमालय-पर्वत पर भेज सकता है, जो उनकी सम्पत्ति का ख़ुद मालिक-मुख़्तार बन उनके लड़के को अपना आश्रित बना सकता है, वह उनकी लड़की को भद्र महिलाओं की तरह घर में चुपचाप बैठा रहने दे, यह सम्भव नहीं। विमल दूरदर्शी है, मैं इसकी तारीफ़ करता हूँ···

श्यामल—क्या तुम्हारे कहने का अर्थ यह है कि विमल कृष्णा पर भी अपना जाल बिछा रहा है ?

राजाराम—मेरा ऐसा कोई अर्थ नहीं है मित्र! यह तो केवल मेरी एक आशंका है, जिस के चिह्न सम्भव है तुम्हें बहुत शीघ्र मिलने शुरू हो जायँ···फिर भी क्षमा करना, सावधान रहना अच्छा होता है।

श्यामल—जब तक मैं जीवित हूँ तव तक देखूँगा यह सब कैसे हो सकता है···अच्छा, अब मुझे इजाज़त दो, मैं चला। (उठता है)

राजाराम—खुशी से··· लेकिन एक चीज······यह अपनी अंगूठी लेते जाओ।

श्यामल—लेकिन यह तो मैं तुम्हें पाँच हजार में बेच चुका!

राजाराम—लेकिन मित्र, इसकी कीमत पाँच हजार नहीं, पचीस हजार है। ऐसी हालत में या तो तुम मुझ से और बीस हजार रुपये ले लो, या अपनी अंगूठी ले जाओ, फिर जब हो सके मेरे पाँच हजार रुपये वापस कर जाना।

श्यामल—तुम सत्य कह रहे हो?

राजाराम—मैंने आज तक कभी तुम से कोई असत्य कहा है?

श्यामल—Rajaram, you are a wonderful guy! a sport! (लिपट जाता है)

राजाराम—(छुड़ाता हुआ) मेरे पूज्यवर दादाजी के सामने इतनी लच्छेदार अंगरेजी न बोलो···नहीं वे समझेंगे,

तुम उन्हें गालियाँ दे रहे हो—लो यह…(अंगूठी पहनाता है)

श्यामल—(अंगूठी निकाल कर) इस अंगूठी की मुझे कोई ज़रूरत नहीं, मुझे तो बीस हज़ार रुपये ही चाहिये।

राजाराम—जैसी ख्वाहिश तुम्हारी…यह चेक लो (चेक लिख कर देता है)

श्यामल—(चेक लेकर) राजाराम, आज की यह घटना मैं उम्र भर नहीं भूलूँगा।

राजाराम— उम्र बहुत लंबी होती है श्यामल।

श्यामल—खैर यह तो भविष्य ही बताएगा, अच्छा, Cheerio ! (जाता है)

राजाराम—भविष्य !…(हँसता है। फिर शराब पीता है) भविष्य !…(हँसता है फिर कुबड़े को उठा कर टेबुल पर रखता है) भविष्य क्या कहता है जानते हो, मेरे कमलचरण पद्मलोचन पूज्य दादाजी ?

कुबड़ा—तेरा सत्यानाश हो, मैं तेरे भविष्य की बात नहीं जानता, तू जा चूल्हे भाड़ में…छोड़ मुझे…

राजाराम—दादाजी ! भविष्य कहता है कि तुम्हारे आशीर्वाद से यह हीरा मेरी इस उंगली में होगा, इसके जोड़ का दूसरा हीरा मेरी इस उंगली में और उसके साथ जो मणि आयेगी वह मेरे हृदय पर होगी, (नौकर का प्रवेश) क्या है ?

नौकर—सरकार !

राजाराम—क्या है ? (नौकर राजाराम के कान में कुछ कहता है)

राजाराम—क्या कहा ? वार खाली गया ? कल का लौण्डा विमल तीन-तीन गुण्डों को पछाड़ मारे… और वह भी खाली हाथ ? वह है कहाँ ?

नौकर—बाहर खड़ा है सरकार…

राजाराम—बुलाओ उस उल्लू के पट्ठे को…लेकिन नहीं. रहने दो। और क्या कहा उसने ?

नौकर—वह जानना चाहता है सरकार, और क्या हुक्म है।

राजाराम—हुक्म…हुक्म ..जाओ कह दो हुक्म है वह अपना काला मुँह मुझे फिर कभी न दिखाये… जाओ (नौकर जाना चाहता है) ठहरो…उससे कह दो अभी मुझे फुर्सत नहीं है…मैं फिर उससे बातें करूँगा…जाओ.. (नौकर जाता है)

राजाराम—(शराब पीता हुआ) विमल…मेरा एक वार खाली गया तो क्या हुआ…देखता हूँ मेरे दूसरे वार से तुम्हें कौन बचाता है ! (प्रस्थान)

कुबड़ा—अरे दुष्ट…तेरा सत्यानाश हो…अरे.. मुझे इस पर से उतारता तो जा…अरे सुनता नहीं…



तेरहवाँ दृश्य

(एक ओर से कृष्णा और दूसरी ओर से शंकर का प्रवेश)

कृष्णा—शंकर काका, कल आपने रेडियो पर मेरा 'भारत माता की पुकार' नामक भाषण सुना ?

शंकर— सुना, अहा···कितना करुण, कितना मर्म-स्पर्शी विलाप था, जान पड़ता था मानों साक्षात् सीता महारानी लंका के निशाचरों से घिरे हुए निबिडांधकारविनिमज्जित अशोकबन में वैठी त्रिजटा आदि राक्षसियों के विकराल रूपों से त्रस्त हो चीत्कार कर रही हों और तब मुझे ध्यान आया कि यदि त्रेतायुग में यह रेडियो यन्त्र होता, तो क्यों रामचन्द्र को इतनी परेशानी होती ? और क्यों सीताजी को खोजने के लिए बिचारे हनूमान को समुद्र पार करने का भारी जोखिम उठाना पड़ता ? शास्त्र की बात है बेटा !

कृष्णा— चूल्हे में गया आपका शास्त्र ! जाइये, मैं आपसे कभी नहीं कुछ पूछूँगी ।

शंकर—बेटा, चूल्हे में शास्त्र डालने की घटना एक बार सत्ययुग में हुई थी, जब दैत्यों के राजा हिरण्य-

कश्यप ने अपने पुत्र प्रह्लाद को राम-नाम लेने के लिए आग में जलाने का हुक्म दिया था। जहाँ तक मुझे मालूम है, उस समय बहुत से शास्त्रों को चूल्हे में डाल कर ही आग जलाई गई थी, लेकिन वह आग कुछ इतनी ठंढी निकली कि प्रह्लाद का एक रोआँ तक न जला। तभी से चूल्हे में शास्त्र डालने की पद्धति उड़ा ही दी गई—यह शास्त्र की बात है।

कृष्णा—उँह···कौन आपसे बहस करे, मैं जाती हूँ···

शंकर—लेनिक एक बात तो सुनती जाओ।

कृष्णा—अगर शास्त्र की नहीं होगी तो सुनूँगी।

शंकर—तुम्हारे हाथकी वह अंगूठी हीरे की है क्या ?

कृष्णा—हाँ।

शंकर—जरा देखें तो।

कृष्णा—(हाथ बढ़ाती हुई) क्यों ?

शंकर—(देखता हुआ) मेरे पास भी एक अंगूठी है, इन दोनों में कोई फर्क बता सकती हो ?

कृष्णा—(शंकर की अंगूठी लेकर) यह तो श्यामल भैया की अंगूठी है। सुना उन्हों ने बेच दिया था, आपने इसे कहाँ पाया ?

शंकर—गौर से देखो, श्यामल भैया की अंगूठी है या कोई दूसरी ?

कृष्णा—मुझे तो वही लगती है, मेरी अंगूठी में और इसमें कोई फर्क नहीं।

शंकर—बस ठीक है। जानती हो, भारत की प्राचीन राजनीति में अंगूठियों का बहुत बड़ा भाग रहा है। मुद्राराक्षस की कहानी पढ़ी है ? शास्त्र की बात है !

कृष्णा—उहँ···फिर वही शास्त्र···मैं चली। (जाना चाहती है। मनोहरदास का प्रवेश) बाबूजी, आपने मेरा कल का···

मनोहर—तेरा कल का रेडियो पर का भाषण सुना, बहुत अच्छा था······और कुछ पूछना है ?

कृष्णा—आप दूर जा रहे हैं, इसलिए मैंने बैटरी वाला एक पोर्टेबुल रेडियो सेट आपके लिए खरीदा है।

मनोहर—बहुत अच्छा किया है। मैं जहाँ भी रहूँगा, उसे अपने साथ रखूँगा, बस यही तो ?

कृष्णा—आप देखेंगे—अभी उसे लाऊँ क्या ?

मनोहर—पीछे देख लूँगा, अभी तू जा।

(कृष्णा जाती है)

मनोहर—शंकर, श्यामल की अंगूठी का कुछ पता लगा ?

शंकर—जो कुछ पता लगा है वह बहुत उत्साहवर्द्धक नहीं है। वह अंगूठी राजाराम बग्गड़ ने पच्चीस हजार में खरीदी है।

मनोहर—पच्चीस हज़ार में ? इसका मतलब यह है कि राजाराम पैसेवाला आदमी है।

शंकर—सिर्फ इतना ही नहीं, उसका मतलब यह भी है कि पच्चीस हज़ार में उसने सिर्फ़ अंगूठी ही नहीं, श्यामल की मित्रता भी खरीदी है।

मनोहर—लेकिन अब श्यामल के हाथ में रह ही क्या गया, जो उसकी मित्रता का इतना बड़ा मूल्य हो ?

शंकर—श्यामल के हाथ में चाहे कुछ भी न हो, पर उसके शरीर में अपने पिता का खून है और उस खून की कीमत राजाराम समझता है।

मनोहर—श्यामल मेरा लड़का है। अगर इस बात का राजाराम गैरमुनासिब फायदा उठाना चाहता है तो फिर मजबूर होकर मुझे श्यामल को घर से बाहर निकाल देना पड़ेगा—

(विमल का प्रवेश)

विमल—बाबूजी, श्यामल के साथ इतनी कठोरता करना उचित नहीं है, क्योंकि श्यामल नहीं समझता वह क्या कर रहा है।

मनोहर—यह सम्भव नहीं है विमल। या तो श्यामल को राजाराम जैसे दुष्ट का साथ छोड़ना होगा, या मेरा घर।

विमल—बाबूजी, मैं श्यामल को आपसे अधिक समझा

हूँ, मुझे विश्वास है उसे यह समझने में अधिक देर न लगेगी कि कौन उसका दोस्त है कौन दुश्मन।

मनोहर—फिर भी राजाराम से हीरे की यह अंगूठी तो लेनी ही होगी। या तो पचीस हज़ार रुपये लेकर वह अंगूठी फेर दे, नहीं तो मैं उस पर मुकदमा करूँगा।

विमल—मुकदमे से कोई लाभ नहीं। और अंगूठी भी उसने इस लिए नहीं खरीदी है कि फिर से बेच दे। इसका तो कुछ दूसरा ही प्रबन्ध करना होगा। पर अब आप चिंता न करें।

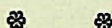
शंकर—और सच बात तो यह है कि इसमें चिंता की कोई ज़रूरत ही नहीं। अंगूठी तो चीज़ ऐसी होती है जो कभी खो ही नहीं सकती। अगर ऐसा न होता तो शकुन्तला के हाथ से नदी में गिरी हुई अंगूठी मछली के पेट में से निकल कर दुष्यन्त के पास वापस न लौटती—शास्त्र की बात है···

मनोहर—बन्द करो अपना शास्त्र! विमल···परिस्थितियाँ ऐसी हो रही हैं कि जान पड़ता है कलकत्ते में मेरा दम घुट रहा है। मैं यहाँ से अब शीघ्र ही जाऊँगा। इन सारी बातों का प्रबन्ध तुम जैसा उचित समझो करो। (एक नौकर का प्रवेश)

नौकर—हुजूर, सालिसिटर साहब आये हैं।

मनोहर—उन्हें आफिस में बैठाओ (नौकर जाता है) वसीयतनामा तैयार हो गया है। श्यामल के सम्बन्ध में क्या करना होगा, इसे अब निश्चित कर लेना होगा। मेरे साथ आओ (दोनों जाते हैं)

शंकर—(अपनी अंगूठी निकाल कर उसे गौर से देखता है, फिर पाकेट में रख लेता है) चोरी करना धर्म चाहे न हो पर नीति तो अवश्य है। यही कारण है कि चोरों के अग्रगण्य कृष्णचन्द्र को परमपुरुष का अवतार माना गया है···शास्त्र की बात है। (प्रस्थान)





चौदहवाँ दृश्य

(डाक्टर बागची के घर का अग्र-भाग। नौकर के वेष में दामोदर झाड़ू देता हुआ आता है। राजाराम का प्रवेश।)

राजाराम—डाक्टर बागची घर पर हैं क्या ?

दामोदर—हजूर, मुदा राउर नावँ का ह ?

राजाराम—हम कोई हों, इससे तुम्हें मतलब ?

दामोदर—जब तक राउर नावँ ना जानी तब तक मुदा हम कइसे बता सकीला हजूर ?

राजाराम—कैसा बेवकूफ़ है ? डाक्टर साहब घर पर हैं या नहीं, इससे और मेरे नाम से क्या मतलब ?

दामोदर—हजूर हम मतलब नइखीं जानत, बाकी मालिक क हुकुम वा कि मुदा नावँ बिना जनले केहू के मत बतइह कि ऊ घर पर बाड़न की ना।

राजाराम—हूँ...अच्छा मेरा नाम है राजाराम और मेरी एक दूकान है जहाँ से डाक्टर साहब अकसर बहुत-सी चीजें उधार लाया करते हैं...और ..

दामोदर—तब हजूर, डाक्टर साहब घर पर नइखन, मुदा रउआ काल कोई टेम में भेंट कर लेइब। (झाड़ू देता है)

राजाराम—पहले मेरी पूरी बात भी तो सुन लो। इस वख्त मैं एक बहुत ज़रूरी काम से आया हूँ। डाक्टर साहब के पुराने बिल के रुपये हैं मैं वही देने आया हूँ। अगर वे हों तो कहो रुपये ले जायँ।

दामोदर—सरकार, सबेरे हम इहाँ रहलीं नाहीं। डाक्टर साहेब जाये के रहलन मुदा गइलन कि नाहीं, मालूम ना, कहीं त अन्दर जाके देखीं......

राजाराम—हाँ देखो, और जल्दी खबर दो (एक अठन्नी फेंकता है। नौकर उसे सलाम करता है और जाता है)

(राजाराम सिगरेट जलाता है। डाक्टर बागची का प्रवेश)

डाक्टर—हेलो.. मिस्टर बगगड़। Good Morning !

How are you ? (दामोदर से) ए की देखता हाय ? कुर्सी ठो लाओ । Unexpected Plea-s..e राजाराम वाबू ! ऐई नौकर ठो आभी ..या है···आपको पाहचाना नेई···आपको कोई ताकलीप तो नेई हुआ ?

राजाराम—मित्र ! जैसे बुद्धिमान तुम खुद हो, वैसा ही बुद्धिमान नौकर भी ईश्वर की कृपा से तुमने पाया है । बलिहारी ! (कुर्सी टेवल लेकर दामोदर का प्रवेश)

डाक्टर—हें···हें···एई नौकर ठो तो आभी बूड़वक हाय, बाकी आदमी ठो ईमानदार हाय···अच्छा जाओ ···साहब को चाय लाओ···एक पैकेट सिगरेट लायगा वर्जीनिया और पान लायगा···जाओ···

दामोदर—(सर खुजलाता है) सरकार···

डाक्टर—की हाय···

दामोदर—सरकार, मुदा ग्वाला आज दूध ना दे गइल ह । ओकर वीस रुपया वारह आना बाकी बा, से मुदा आज बड़ा खिसियात रहल ह···

डाक्टर—की वात वोलता तुमी ? हाम ग्वाला का हिसाब ठीक कोर देगा । आभी माजी से पायसा लेके तुम वाजार से दूध लाव···जाओ···

दामोदर—सरकार, माजी के पास पइसा नइखे, मुदा हम मांगे जाइला त खिसियाली···

डाक्टर— ओफ़ !···तुम किस माफिक बूड़बक हाय···

राजाराम—(पाकेट से रुपया निकाल कर) यह लो जाओ··· और मुझे चाय की ज़रूरत नहीं। होटल से एक बोतल ह्विस्की और सोडा लाओ···जाओ।

डाक्टर—मिस्टर बग्गड़, एई का तो कोई जोरूरत नेई। आप झूठमूठ ताकलीप कोरता हाय···

राजाराम—नहीं मित्र, इसमें तकलीफ क्या है ? तुम्हारे और हमारे घर में फर्क क्या है ? यह भी तो हमारा ही घर है। खैर अब जिस काम के लिए मैं आया हूँ वह सुनो।

डाक्टर—बोलून···

राजाराम—तुम कुछ रुपये कमाना चाहते हो ?

डाक्टर—रुपिया···किस माफिक ?

राजाराम—पहले मैं तुम्हें यह बता दूँ कि मैं जानता हूँ कि वास्तव में तुम उतने मूर्ख I am sorry··· इतने सीधे-सादे नहीं हो, जितना तुम अपने को दिखाने की कोशिश करते हो, और मैं यह भी जानता हूँ कि तुम्हारे कितने ही ऐसे निजी रहस्य हैं, जिनकी वजह से पुलिस दिन-रात तुम्हारी ताक में लगी रहती है और अगर मेरा खयाल ग़लत नहीं है तो दो बार तुम्हारी private laboratory की तलाशी भी हो चुकी है···

डाक्टर—What do you mean ?

राजाराम—कुछ भी नहीं। मैं तो केवल यही बता देना चाहता हूँ मित्र, कि तुम्हारे सामने जो प्रस्ताव मैं रखने आया हूँ वह किसी ग़लतफ़हमी से नहीं, बल्कि यह अच्छी तरह समझ कर कि तुम उसे कहाँ तक पूरा कर सकते हो। (दामोदर शराब लेकर आता है)

दामोदर—सरकार, होटल वाला आइल वा।

डाक्टर—इस टाइम उसको कौन बोला आने को ?

दामोदर—मुदा बिल ले आइल वा हज़ूर……

डाक्टर—Stupid, Nonsense ! इतना शुबू को रूपिया मिलेगा ? बोल दो काल के आशेगा, जाओ !

दामोदर—लेकिन मुदा ऊ मानत नईखे सरकार !

डाक्टर—मानता नेई किस माफिक हाय ? उसको हाम शूट कोर देगा…Devil !

दामोदर—हज़ूर, कहता मुदा तीन महीना के बिल ह… मोकदमा कर देब……

राजाराम—देखें, कितने का बिल है ? दो सौ सत्ताइस बारह आने…(पाकेट से रुपये निकालता है) यह लो दो सौ तीस रुपये उसे दे दो और बाकी जो बचे वह तुम्हारा…चलो !

डाक्टर—मिस्टर राजाराम, आपको बोहुत ताकलीप ठो हुआ…I am really ashamed…

राजाराम—नहीं, नहीं, कोई बात नहीं डाक्टर बागची, अब मैं अपने प्रस्ताव पर आता हूँ।

(शराब ढाल कर देता है)

डाक्टर—बोलून……

राजाराम—कलकत्ते का एक बहुत बड़ा हिस्सा तुम्हें एक ऐसे सीधे-सादे डाक्टर के रूप में जानता है, जिसकी प्रैक्टिस कुछ बहुत अच्छी नहीं चलती, लेकिन कुछ लोग ऐसे भी हैं, और उनमें से मैं भी हूँ, जो यह जानते हैं कि तुम Toxicology…विष-विज्ञान के एक बहुत बड़े विशेषज्ञ हो, जैसा शायद कलकत्ते में और कोई नहीं। और दो-तीन आदमियों को, जिनके नाम अभी मैं लेना नहीं चाहता, तुमने ऐसा ज़हर तैयार करके वेचा है जो तुम्हारा खास आविष्कार है और जिसके इस्तेमाल से पता तक नहीं चलता कि ज़हर दिया गया या नहीं, और चौबीस घंटे में इंसान की मौत हो जाती है।

डाक्टर—Excuse me Mr. Rajaram! हाम आपका बात ठो नेई समझता……

राजाराम—तुरत समझ जाओगे मित्र! मैं भी तुम से एक ज़हर खरीदना चाहता हूँ, लेकिन वह ऐसा हो जिसकी दवा दुनिया में किसी के पास न हो,

और जिसके असर से मौत वैसी ही हो, जैसी दिल की धड़कन बन्द हो जाने से होती है। इस ज़हर का पता बड़े-से-बड़े डाक्टर को नहीं लग सकेगा और मैं जानता हूँ तुम इसे बना सकते हो।

डाक्टर—(शराब पीता हुआ) लेकिन यह काम जोखिम का हाय, मिस्टर राजाराम···great risk...

राजाराम—मित्र! दुनिया में फ़ायदे का ऐसा कोई काम नहीं है जो जोखिम का न हो। मैं तुम्हें दस हज़ार रुपये दूँगा···Hard Cash! और तुम जानते हो राजाराम की जबान पक्की है, अब सौदा पक्का करो!

डाक्टर—दस हजार···कोखुन मांगता हाय?

राजाराम—जितना शीघ्र हो सके···पर देखो, अगर मुझे किसी तरह धोखा देने की कोशिश की, तो मैं वह सजा दूँगा कि तुम्हें अफसोस होगा क्यों तुमने अपनी माँ के पेट से जन्म लिया···मुझ से बड़ा दोस्त नहीं और मुझ से बड़ा दुश्मन भी नहीं।

डाक्टर—ता होले···रूपिया कोखुन देने सकेगा?

राजाराम—आधा पहले और आधा काम हो जाने पर···शर्त पक्की?

डाक्टर—पाक्की!

राजाराम—हाथ मिलाओ (हाथ मिलाता है और शराब का पेग देता है) Your health···

डाक्टर—The same…(दोनों पीते हैं । शंकर का प्रवेश)

डाक्टर—(कुर्सी पर से उठता हुआ) आहा…शांकरमोलजी ! Good Morning ! नोमोश्कार नोमोश्कार… आशून…आशून…वेश तो…

राजाराम—अच्छा मित्र, मुझे इजाज़त दो मैं अव चला… (उठता है)

डाक्टर—बोशून…बोशून…एई ठो तो सेठ शांकरमोलजी, सेठ मानोहरदास का फार्म का म्यानेजार और एई ठो मिस्टर राजाराम वग्गड़ वैंकर…ए भोदूँ, पापड़ ठो ताइयार करो…अच्छा…आपे दोनों वोशून हाम आभी आशता है…(जाता है)

शंकर—आपकी कीर्ति सुनी थी, परिचय नही था। मैं आपके दर्शन करनेवाला ही था।

राजाराम—(वैठता हुआ) अहोभाग्य आपसे मिल कर बड़ी खुशी हुई…अगर मेरी याददाश्त ठीक है तो मैंने अखबारों में पढ़ा था कि सेठ मनोहरदासजी की तवीयत कुछ अर्से से खराब है, जिसकी वजह से वे कहीं वाहर तशरीफ़ ले जाने वाले हैं…

शंकर—राजारामजी, जब तक मनुष्य के सामने जीवन का संग्राम चलता रहता है, तब तक उसकी तवीयत कभी खराब नहीं होती, और जहाँ यह संग्राम समाप्त हुआ और द्रव्य की चिंता दूर हुई, वहाँ

तबीयत को खराब होना ही पड़ता है। यही बात सेठ मनोहरदासजी के साथ हुई है और यही बात द्वापर में धर्मराज युधिष्ठिर के साथ हुई थी, जिन्हें महाभारत लड़ने के लिए तो शरीर में काफी बल था, लेकिन महाभारत समाप्त होते ही शांति की खोज में हिमालय को जाना पड़ा......शास्त्र की बात है।

राजाराम—नहीं, नहीं, यह तो आप अपने शास्त्र-ज्ञान का अनुचित प्रयोग कर रहे हैं श्रीमान्.. शंकर-मलजी। सेठ मनोहरदासजी की तबीयत इस उम्र में अगर कुछ खराब रहती हो तो यह कुछ बड़े आश्चर्य की बात नहीं, और यह भी सही है कि जल-वायु के परिवर्त्तन से उन्हें काफी लाभ पहुँच सकता है, फिर भी मेरा खयाल था कि जितनी अच्छी चिकित्सा उनकी कलकत्ते में हो सकती थी उतनी शायद बाहर कहीं नहीं। इस लिए यहाँ रहना उनके लिए ज्यादा लाभदायक होता।

शंकर—लेकिन आप यह भूलते हैं कि चिकित्सा किसी रोग की ही हो सकती है, संदेह की नहीं। अब यदि उन्हें यह सन्देह हो कि आज से पचीस वर्ष पहले किसी से युद्ध करते समय उसकी तलवार से

लग कर उनके खून में एक ज़हर फैल गया है जो अब तक दूर नहीं हो सका, तो इसकी दवा कलकत्ते के किस डाक्टर के पास है ?

राजाराम—यह तो आपने बड़ी अद्भुत बात सुनाई ! शंकरमलजी !

शंकर—जी हाँ, और गौर कीजिये, यदि उन्हें यह सन्देह हो कि पच्चीस वर्ष पहले जिस व्यक्ति से उनका युद्ध हुआ था, उसका कोई वंशज आज भी कलकत्ते में बैठ कर उनके विरुद्ध षड्यन्त्र कर रहा है, तो इस सन्देह का दवा किस डिस्पेन्सरी में मिलेगी ?

राजाराम—विचित्र बात है…लेकिन खैर ये बातें गुप्त ही रहनी चाहिएँ !

शंकर—नहीं, नहीं…आप तो श्यामलदास के अन्तरंग मित्र हैं, आपसे क्या छिपाना ? और सच तो यह है कि आज या कल तक मैं आपके दर्शन करनेवाला ही था कि यहाँ आज आप अकस्मात मिल गये।

राजाराम—तो फिर कहिए क्या आज्ञा है ?

शंकर—वह तो एकान्त में ही निवेदन कर सकूंगा। शायद अब आप घर चलेंगे ?

(पापड़ लिये हुए वागची का प्रवेश)

राजाराम—हाँ···हाँ चलिए मेरे घर पधारिए, बड़ी कृपा होगी। अच्छा तो डाक्टर, हम लोग चलें···

डाक्टर—ताहोले शांकरमोलजी—बोशून······पापड़ तो खाता जायगा ?

शंकर—आया तो मैं था पापड़ खाने के लिए ही, पर जान पड़ता है विधाता की इच्छा है कि सिर्फ पापड़ ही न खाकर मैं तुम्हारे यहाँ पूर्ण शास्त्रीय भोजन करूँ। क्योंकि भोजन का आदि तो होता है कचौड़ी-सिंघाड़े से और पापड़ से होता है अंत···'पापड़ेन समापयेत्' शास्त्र की बात है।

डाक्टर—ताहोले वेश···Good Bye...(दोनों जाते हैं)

डाक्टर—(कुर्सी पर बैठकर पापड़ खाते हुए) दस हजार! Ten Thousand! Good God! What a chance! (पापड़ खाकर शराब पीता है। श्यामल का प्रवेश) हेलो, श्यामल बाबू, Good Morning, आशून···आशून···बेश तो !

श्यामल—अभी यहाँ राजाराम आया था ?

डाक्टर—हाँ आया तो था···आभी गिया है।

श्यामल—तुम से क्या कह रहा था ?

डाक्टर—कुछ नेई······Friendly visit···बोशून एक पेग लेगा ?···

श्यामल—नहीं···और भी कोई आया था ?

डाक्टर—आपका म्यानेजर ठो आया था ··शांकरमोलजी।

श्यामल—शंकरमल ? वह किस लिये आया था ?

डाक्टर—कुछ नेई···ऐसे ही हाम उसको पापड़ खाने का वास्ते invite किया था·········सोई वोल के आया था।

श्यामल—शंकरमल तुम्हारे यहाँ पापड़ खाने के लिए आयेगा···fool !

डाक्टर—आप ठो खायगा ?

श्यामल—Thanks, no ! वे दोनों साथ ही गये ?

डाक्टर—हाँ।

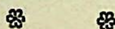
श्यामल—कहाँ ?

डाक्टर—शो तो हाम को बोला नेई।

श्यामल—O. K....(वेग से जाता है)

डाक्टर—(पीकर) Ten Thousand ! दस हजार ! What a Luck !

(जाता है—नौकर कुर्सी ले जाता है)





पन्द्रहवाँ दृश्य

(राजाराम की बैठक। एक कोने में कुबड़ा खुट-खुट कर रहा है। एक टेबुल के सामने राजाराम और शंकरमल बैठे हैं। राजाराम चाय बना रहा है।)

राजाराम—अफ़सोस की बात है, शंकरमलजी, कि आपको शराब से परहेज़ है, जिसकी वजह से मुझे आपकी खातिर सिर्फ चाय से करनी पड़ रही है।

शंकर—राजारामजी, यदि आप जानते होते कि हमारे शास्त्रों ने चाय को कितना महत्व दिया है तो कदाचित् आपको यह अफ़सोस न होता। आपको मालूम होना चाहिए कि अश्विनी कुमारों ने स्वर्ग से कल्प-वृक्ष का रस लाकर च्यवन-ऋषि को पिलाकर उन्हें वृद्ध से जवान बनाया और एक राजकुमारी से उनका विवाह कराया और तभी से उस रस का नाम पड़ा 'चाय'·········शास्त्र की बात है!

राजाराम—ऐसा? (चाय देता है)

शंकर—फिर लक्ष्मण को मेघनाद की शक्ति लगने पर सुषेण वैद्य ने उनके लिए चाय की ही तजबीज की थी। उस समय लंका में चाय नहीं होती थी,

लेहाज़ा हनूमान उसे लाने के लिए हवाई जहाज़ पर बर्मा भेजे गये। वहाँ वह सञ्जीवनी बूटी के नाम से प्रचलित थी। फिर इसी से लक्ष्मण के प्राण बचे और तब से इसका इतना महत्त्व बढ़ा कि महाभारत में बाणों की शय्या पर पड़े हुए भीष्म पितामह को जब प्यास लगी और दुर्योधन ठंढा पानी लेकर दौड़ा, तो पितामह ने उसे डाँट दिया। अर्जुन भी वहीं था। उसने चट बाणों से मार कर ज़मीन में से गरम पानी निकाला और उससे चाय बना कर पितामह को पिला दी, जिससे उनका सारा दर्द क्षणमात्र में दूर हो गया···शास्त्र की बात है।

राजाराम—वाह! खूब! अब इसी बात पर एक कप और लीजिए।

शंकर—धन्यवाद! अफ़सोस इस बात का है कि जब दशरथ बीमार थे, उस समय अयोध्या के किसी वैद्य को चाय के गुण मालूम न थे, अन्यथा उनकी अकाल मृत्यु कदापि न होती और इससे भी ज्यादा अफ़सोस इस का है कि जब पाँचों पाण्डव द्रौपदी के साथ स्वर्ग की खोज में चले, उस समय उन्होंने अपने साथ एक पैकेट चाय न रख ली, नहीं तो हिमालय की बर्फ में उन्हें गल-गल कर मरना न

पड़ता···शास्त्र की बात है·····लेकिन मैं शायद आपका समय नष्ट कर रहा हूँ·········

राजाराम—बिल्कुल नहीं मुझे आपकी बातों से अज़हद ख़ुशी मिल रही है।

शङ्कर—फिर भी आपका समय बहुमूल्य है···मैं अब अपनी बात पर आता हूँ।

राजाराम—शौक़ से···फ़रमाइए!

शङ्कर—मैं जो आपसे निवेदन करने जा रहा हूँ, उसका उत्तर आप केवल एक 'हाँ' या 'ना' से दे सकते हैं। मुझे फिर अधिक कहना न होगा।

राजाराम—मैं सुन रहा हूँ।

शङ्कर—पर उससे पहले मैं एक और बात पूछ लूँ। आपने श्यामलदास से हीरे की कोई अंगूठी खरीदी है?

राजाराम—जी हाँ, मैं ने खरीदी है और मैं कोई वजह नहीं देखता कि आप समझें मैं आप से छिपाने की कोशिश करूँगा।

शङ्कर—किन्तु यह जानने के लिए कि जिस अंगूठी के सम्बन्ध में मैं आपसे बातें कर रहा हूँ, वही है जिसे आपने ख़रीदा है, क्या मैं उसे देख सकता हूँ?

राजाराम—शौक़ से। (अंगूठी सेफ़ से निकाल कर देता है)

शङ्कर—(उस अंगूठी को पहनता हुआ) यह वही अंगूठी है··· धन्यवाद! अच्छा तो राजारामजी, अगर मैं

आप से यह कहने की धृष्टता करूँ कि यह अंगूठी मैं आपको वापस नहीं लौटाना चाहता, तो आपका उत्तर क्या होगा ?

राजाराम—(हँस कर) मेरा उत्तर ? (एक बटन दबाता है, जिससे दीवार का एक दरवाज़ा खुल जाता है, जिसमें एक आदमी रिवाल्वर ताने खड़ा है। वह दूसरा बटन दबाता है और दूसरा दरवाज़ा नज़र आता है, जिसमें आग की एक भट्टी लहक रही है) मेरा उत्तर क्या होगा शायद आपको समझाना न होगा।

(दोनों दरवाजे बन्द होते हैं)

शङ्कर—राजारामजी, आप दूरदर्शी हैं, मैं आपकी हृदय से प्रशंसा करता हूँ।

राजाराम—आप जैसे महानुभावों की सेवा में रहने के कारण कुछ दूरदर्शिता आ ही जाती है, शंकरमलजी ! (अंगूठी ले लेता है और अपनी उँगली में पहन लेता है) एक कप और चाय लीजिए।

शंकर—(चाय लेकर) धन्यवाद ! हाँ तो अब मैं अपने उस प्रश्न पर फिर से आता हूँ। जैसे आज आप इस अंगूठी को अपने से दूर करना नहीं चाहते वैसे ही एक सज्जन और हैं, जो इसे किसी दिन अपने से दूर करना नहीं चाहते थे···और शायद उन सज्जन का नाम भी आप जानते हैं।

राजाराम—उन सज्जन का नाम जानने की मुझे न तो कोई आवश्यकता है, न अभिलाषा।

शंकर—ख़ैर···यह अंगूठी उन सज्जन के बिना जाने ही आपको बेची गई है, जिसका उन्हें दुःख है।

राजाराम—मुझे उनसे पूरी सहानुभूति है, पर अब बीती हुई बातों में मुझे कोई दिलचस्पी नहीं।

शंकर—तो अब उन सज्जन की ओर से मैं आप से यह पूछने आया हूँ कि उनकी भावनाओं का ख़याल करके क्या आप यह अंगूठी उन्हें वापस बेच सकेंगे?

राजाराम—मुझे दुःख है—नहीं!

शंकर—जितनी कीमत पर आपने इसे ख़रीदा है, उसके दुगुने पर भी नहीं (पाकेट से चेक-बुक निकलता है)

राजाराम—उसके सौगुने पर भी नहीं···और वह चेक-बुक आप अपने पाकेट में रख ले सकते हैं।

शंकर—यह आपका अन्तिम उत्तर है?

राजाराम—मेरा प्रत्येक उत्तर अन्तिम उत्तर होता है।

शंकर—(चेकबुक पाकेट में रखता हुआ) बस, इतना ही पूछने के लिए मैंने आपको कष्ट दिया था, अब आज्ञा दें! (उठता है)

राजाराम—(उठता हुआ) कोई योग्य सेवा हो, तो आज्ञा देने में संकोच न कीजिएगा।

शंकर—मैं अनुगृहीत हुआ। आशा है आपके फिर दर्शन होंगे।

राजाराम—और आशा है हमारी आपकी मित्रता बढ़ती ही जायगी।

शंकर—अवश्य·· आपको मेरी याद यह अंगूठी दिलाती रहेगी···और याद दिलाने के लिए अंगूठी से बढ़ कर कुछ नहीं। यही कारण है कि रामचन्द्र ने सीता के पास हनुमान द्वारा अंगूठी ही भेजी थी··· शास्त्र की बात है·· नमस्कार!

राजाराम—नमस्कार! (शंकर जाता है)

राजाराम—(शराब पीता है) अंगूठी! इसे खरीदने के लिए रुपये नहीं बदन में खून चाहिए···(श्यामल का प्रवेश) हेलो श्यामल! मैं तुम्हारा ही इन्तजार कर रहा था··· (शराब देता है)

श्यामल—अभी यहाँ कोई आया था?

राजाराम—हाँ आया था,···तुम्हारे पिताजी का मैनेजर सेठ शंकरमल।

श्यामल—क्या करने आया था?

राजाराम—मुझसे पूछने आया था कि यह हीरे की अंगूठी मैं उसे बेच सकता हूँ या नहीं?

श्यामल—और तब तुमने क्या कहा?

राजाराम—मैंने कहा मुझे सख्त अफसोस है, मैं नहीं वेच सकूँगा।

श्यामल—और तव ?

राजाराम—तव उसने अपना चेकवुक निकाला। मैंने कहा उसे पाकेट में रख लो...और तव वह चला गया।

श्यामल—Splendid ! खूब जवाव दिया तुमने। भई, मैं तो घबड़ा गया कहीं उसने धोखा न दिया हो तुम्हें।

राजाराम—राजाराम को धोखा देने के लिए दिमाग़ में ताक़त चाहिए मित्र !

श्यामल—अच्छा, तो मैं चला। मिस चंचला के साथ जरा एक इंगेजमेण्ट है। सिर्फ़ तुम से यही कहने आया था कि शाम को डैंस में तुम्हें भी invitation है।

राजाराम—वहुत खूव मैं हाज़िर होऊँगा और...by the way...मैंने तुम्हारे लिए पाँच लाख हैशियन लिया था न ? उसे मैंने आज वेच दिया। उस एकाउण्ट में तुम्हें वीस हज़ार का मुनाफ़ा हुआ है। कहो तो चेक दे दूँ।

श्यामल—सचमुच ? भई, कमाल है तुम्हें ! पन्द्रह रोज़ में सवा लाख का मुनाफ़ा ! ग्रैन्ड !...(शराब पीता है) चेक रहने दो पीछे ले लूँगा।

राजाराम—तो फिर और हैशियन ख़रीद लूँ ?

श्यामल—ज़रूर ! ज़रूर ! अच्छा मैं चला, शाम को आना ज़रूर वर्ना चंचला नाराज़ हो जायगी···Cheerio ! (जाता है)

राजाराम—Cheerio Boy ! अंगूठी ! सब कुछ इस अंगूठ की ही बदौलत तो है। और जिस दिन दोनों अंगूठियाँ मेरे हाथ में होंगी और मेरे हृदय में होगी वह मणि उस दिन···ओह · दादाजी··· पूज्यवर दादाजी ! लो···ज़रा तुम भी लो (शराब देता है) जानते हो भविष्य क्या कह रहा है ?

कुबड़ा—(शराब हटाते हुए) अरे राजाराम, तेरा सत्यानाश हो···तेरी अंगूठी ?

राजाराम—मेरी अंगूठी ! देखो यह है और एक दिन एक दूसरी अंगूठी भी होगी और उसके साथ होगी एक मणि···और···

कुबड़ा—अरे मूर्ख ! ···तेरा सत्यानाश हो · यह हीरे की अंगूठी है ?

राजाराम—क्यों ?

कुबड़ा—कांच की अंगूठी को हीरे की कहता है ? ज़रा ग़ौर से देख तो···(राजाराम के हाथ से गिलास छूट कर गिर पड़ता है)

राजाराम—कांच की ? बुढ्‌डा बंदर ! ज़बान खींच लूँगा अगर फिर कहा तो…

कुबड़ा—तेरा सत्यानाश हो…तेरे मुँह में आग लगे… अंधा…देखता नहीं…नक़ली हीरा है !

राजाराम—(ग़ौर से अंगूठी को देखता है) अरे ! क्या सच-मुच ! (टेबुल पर से शीशे के गिलास फेंकता है । चाय की थाल से नोट निकलते हैं) ये नोट ! (गिनता है) पाँच हज़ार ! उफ़, तब क्या सचमुच यह दूसरी अंगूठी है ? नकली ? शंकरमल ! शंकरमल ! उसी का काम है…मेरी हीरे की अंगूठी…उफ़…मैं शूट कर दूँगा उसे…Devil ! ...Rogue !...(पिस्तौल निकाल कर झपट कर दरवाजे की ओर बढ़ता है । कुर्सी की ठोकर लगती है, जमीन पर गिरता है) ।

पटक्षेप





द्वितीय अंक

पहला दृश्य

(हिमालय का एक वन। पहाड़ की चोटियां बर्फ से लदी हैं, और उन पर सूर्य की किरणें चमक रही हैं। एक झरना झर रहा है, उसके पास ही एक कुटिया है और कुटिया के सामने गैरिक वस्त्र पहने कुछ संन्यासी बैठ कर हरिकीर्त्तन कर रहे हैं। संन्सासियों के बीच में सेठ मनोहरदास और सोना भी सादे कपड़े पहने बैठे हैं। कीर्तन समाप्त होने पर सभी संन्यासी मध्य में उच्चासन पर बैठे हुए एक वृद्ध संन्यासी के पैर छू कर चले जाते हैं। मनोहरदास और सोना बैठे रहते हैं।)

वृद्ध—(मनोहरदास से) वत्स, अब तुम्हारा शरीर कैसा है ?

मनोहर—गुरुदेव, आपकी पन्द्रह दिनों की चिकित्सा से ही मुझे जान पड़ता है, मानों मेरे शरीर में कभी कोई विकार था ही नहीं। मेरे सारे अंगों में नया जीवन और मन में नई स्फूर्त्ति फैल रही है। और अब तो मेरा दृढ़ संकल्प हो गया है कि इसी पवित्र स्थान में गुरुदेव के चरणों में ही सारा जीवन बिताऊँगा।

वृद्ध—पर यहाँ इन बहन को अच्छा न लगता होगा।

सोना—गुरुदेव! ···मेरे लिए तो जहाँ ये हैं, वहीं स्वर्ग है। हाँ, बच्चों की कभी-कभी याद आती है, सो गुरुदेव की आज्ञा होगी तो उन्हें भी मिलने के लिये यहीं बुला लिया करेंगे।

वृद्ध—हाँ, हाँ, यह तो भगवान का धाम है—बच्चे आयेंगे तो उनका भी कल्याण होगा······

मनोहर—और गुरुदेव, मेरी बच्ची कृष्णा यदि यहाँ आ जाय, तो फिर तो वह कलकत्ते लौटने का नाम ही न ले।

वृद्ध—वही जिसका गाना कभी-कभी तुम रेडियो पर सुनाया करते हो?

सोना—हाँ, वही गुरुदेव, और वह शायद आपकी उपासना में भी खलल डाला करे···क्योंकि वह दिन भर में इतना ही बोलती है जितना इस झरने में से पानी झरता है······

वृद्ध—तब तो वह बच्ची बड़ी प्यारी होगी !

मनोहर—और यदि मेरा बच्चा विमल आ जाय तो फिर दिन रात इसी के मंसूबे बाँधता रहे कि किस प्रकार आपकी इन हिमालय की जड़ी-बूटियों का प्रचार हिन्दुस्तान के कोने-कोने घर-घर में कराया जाय। वह दुनिया की भलाई के लिए जान देता रहता है।

वृद्ध—बड़ा ही भला लड़का है ! मैं तो वत्स, स्वयं चाहता हूँ कि सारा संसार हिमालय की इन दुर्लभ जड़ियों से लाभ उठाये। तुम एक बार उसे यहाँ अवश्य बुलाओ।

मनोहर—मैं उसे अवश्य बुलाऊँगा, गुरुदेव, और अत्यंत शीघ्र। बस, उसके आने की ही देर है कि फिर आप तुरत सुनेंगे कि हिंदुस्तान में आपकी आविष्कृत इन जड़ियों से लाखों-लाख मनुष्यों को नव-जीवन-दान मिल रहा है। मेरे विमल ने संसार की सेवा करने के लिए जितना बड़ा हृदय पाया है, उन सेवाओं की योजना खड़ी करने के लिए उतना ही बड़ा मस्तिष्क।

वृद्ध—तब तो वत्स, तुम धन्य हो कि तुमने ऐसा पुत्र पाया है। तुम जैसे किस पिता को अपने भाग्य पर गर्व न होगा ?

मनोहर—गुरुदेव, विमल के पिता तो कोई दूसरे ही थे, पर दुर्भाग्य ने उन्हें यह दिन देखने के लिए जीवित न रहने दिया। पर अब तो विमल मेरा ही पुत्र है और……

वृद्ध—अच्छा, तो विमल तुम्हारा पुत्र नहीं, पोष्यपुत्र है।

सोना—हाँ गुरुदेव, हमारे तो एक ही पुत्र है—श्यामल…

मनोहर—चुप रहो, उसका नाम न लो। उसकी याद दिला कर मेरे हृदय की शांति-भंग न करो।

वृद्ध—यह श्यामल कौन है वत्स ?

मनोहर—मेरा कलंक…दुर्भाग्य…त्याज्य पुत्र ! पर उसकी चर्चा से मैं इस आश्रम के पवित्र वातावरण को गन्दा करना नहीं चाहता। गुरुदेव, अब आपकी उपासना का समय हो गया। हमें आज्ञा दें। वे बाहर खड़े आश्रम के कुछ लोग रेडियो सुनना चाहते हैं।

वृद्ध—जाओ वत्स, कल्याण हो। (मनोहर और सोना जाते हैं। वृद्ध ध्यानमग्न होते हैं।)

* *

*

दूसरा दृश्य

(कृष्णा गाती हुई आती है 'पिया परदेस' वही जो पच्चीस वर्ष पहले सोना ने गाया था। दूसरी ओर से विमल आता है। विमल को देख कर कृष्णा गाना बन्द कर देती है)

विमल—क्यों, मुझे देख कर गाना बन्द क्यों कर दिया ?

कृष्णा—आज से पच्चीस वर्ष पहले यही प्रश्न बाबूजी ने माँ से पूछा था—

विमल—और तब उन्होंने क्या उत्तर दिया था ?

कृष्णा—उन्होंने जो उत्तर दिया था, उसके कारण बाबूजी को देश छोड़ कलकत्ते आना पड़ा था।

विमल—तब तो शायद तुम जो उत्तर दोगी, उससे मुझे कलकत्ता छोड़ हिमालय पर्वत पर जाना पड़ेगा।

कृष्णा—तुम हिमालय जाओगे ? यह तो बड़ा ही सुन्दर होगा। मैं यहाँ रेडियो पर गाऊँगी, तुम वहाँ बैठे हुए उसे सुनोगे, लेकिन तब एक बात बताओ। कल्पना करो, तुम एक अन्धेरी गुफा में पत्तों और फूलों की सेज पर सो रहे हो। बाहर बर्फ गिर रही है, बिजली रह रह कर तड़तड़ा उठती है, बादल घहरा पड़ते हैं। तुम्हारी गुफा के अधढके द्वार में से बर्फ की फुहारें आ-आ कर तुम्हारे प्राणों में सिहरन भर देती हैं, और तब उसी समय

तुम्हारे रेडियो में से किसी विरहिणी की वेदना की तान तुम्हारे अन्तर में आकर चुभ जाती है... उस समय तुम क्या सोचोगे ?

विमल—मेरा ख़याल है, मैं उठ कर गुफा का दरवाजा बंद कर भीतर आग जलाऊँगा और रेडियो बंद कर कोई ऐसा उपाय सोचूँगा, जिससे मुझे डबल निमोनिया न हो जाय।

कृष्णा—नहीं नहीं...फिर से कल्पना करो ! तुम प्रातः काल एक तुषारमंडित शैल-शिखर पर बैठे प्रभात किरणों के सुनहरे जाल से ढँकी हुई चोटियों की सुषमा देख रहे हो। उस समय वसन्त आ पहुँचा है और वन फूलों की मञ्जरियों के रस से छकी हुई दक्षिणी वायु चट्टानों में लड़खड़ाती फिरती है। और तब सहसा रेडियो में से निकल कर किसी उन्मादिनी का स्वर तुम्हारी चेतना के सामने उसके यौवन का निमन्त्रण बिखेर देता है...उस समय तुम्हारी भावना क्या होगी ?

विमल—उस समय मेरी भावना शायद यह होगी कि मैं रेडियो को बंद कर थोड़े-से फल तोड़ जल्दी-जल्दी खा जाऊँ, और शाम होने से पहले जितने फल हो सकें बिटोर लूँ, क्योंकि पहाड़ों पर खाने को तो कम मिलता है और भूख कड़ी लगती है...

कृष्णा—जाओ, तुम बड़े नीरस हो···मैं तुम से नहीं बोलती।

विमल—पर मैं इतना नीरस क्यों हूँ, यह तुमने नहीं पूछा ?

कृष्णा—अच्छा, बताओ क्यों हो ?

विमल—इस लिए कि वहाँ अंधेरी गुफा में या शिखर पर मैं अकेला तो रहूँगा नहीं, जो सिर्फ रेडियो में विरहिणियों और उन्मादिनियों के गाने सुनता रहूँ···वहाँ तो मेरे साथ तुम भी होगी !

कृष्णा—मैं क्यों होने लगी ?

विमल—क्योंकि अकेला तो मैं हिमालय क्या स्वर्ग में भी नहीं जा सकता और तुम्हारे साथ जंगल में भी मेरे लिए मंगल ही रहेगा। जिस तरह राम और सीता पञ्चवटी में पर्णकुटी बना कर रहते थे उसी तरह हम और तुम भी···(कृष्णा का हाथ पकड़ता है। शंकर का प्रवेश)

शंकर—शास्त्र की बात है···(दोनों एक दूसरे को छोड़ कर अलग अलग खड़े हो जाते हैं) पञ्चवटी में राम और सीता का जीवन बड़ा सुखमय रहता अगर राम को मूर्ख बना कर रावण सीता को हर न ले जाता। (कृष्णा लजाती हुई भाग जाती है) यहाँ भी राम को सतर्क रहना पड़ेगा कि कहीं कोई रावण सीता को हर न ले जाय।

विमल—यह कहने का आपका अभिप्राय ?

शंकर—यही कि सेठ मनोहरदास के कलकत्ते से चले जाने पर अब राजाराम की निगाह सिर्फ सेठ मनोहर दास की सम्पत्ति पर ही नहीं, उनकी इकलौती लड़की कृष्णा पर भी है।

विमल—यह असम्भव है……

शंकर—सोने का मृग होना भी असम्भव था, पर मूर्खतावश राम उसके पीछे दौड़े थे। वैसा ही असम्भव राजाराम भी इस वार सम्भव करना चाहता है और इसके लिए सबसे अधिक सतर्क रहना है तुम को।

विमल—जब तक मैं जीवित हूँ तब तक कृष्णा की छाया भी कोई नहीं छू सकता।

शंकर—यह तो राजाराम से अधिक और कोई नहीं समझता और इसी लिए उसका पहला आघात तुम्हारे ऊपर ही हुआ था।

विमल—राजाराम के आघातों की मुझे चिन्ता नहीं है, चिन्ता है केवल श्यामल की, जिसे मैं अब तक न समझा सका, कौन उसका दोस्त है कौन दुश्मन। काश मेरे शब्दों में उतना बल होता कि वे मेरे हृदय की भावनाओं को अपने में अटा सकते ··

शंकर—शब्दों का यह बल जब भगवान कृष्ण को न

मिला कि वे महाभारत को रोक सकते, तो तुम्हें कैसे मिलेगा ? और कौन दोस्त है कौन दुश्मन इसका ज्ञान जब महा पण्डित रावण को न हुआ, जिसने भलाई की सलाह देने के पुरस्कार में विभीषण को लात मार कर और हनूमान की पूँछ में आग लगा कर उन्हें लंका से वाहर निकाल दिया, तो फिर विचारे श्यामल को कैसे हो सकता है ? शास्त्र की बात है।

विमल—शंकर काका, इस समय आप शास्त्र की वात के बदले कोई काम की वात करें तो वेहतर हो।

शंकर—शास्त्र की ऐसी कोई वात होती ही नहीं, जो काम की न हो। रावण सीता से विवाह करना चाहता था, यह शास्त्र की बात है, राजाराम कृष्णा से विवाह करना चाहता है, यह काम की वात है। रावण ने राम के बल की परीक्षा के लिए खरदूषण और त्रिशिरा को भेजा था, यह शास्त्र की बात है, राजाराम ने विमल के बल की परीक्षा के लिए तीन गुण्डे भेजे थे, यह काम की वात है और…

विमल—अन्त में रावण का विनाश हुआ था, यह शास्त्र की वात है, राजाराम का भी विनाश होगा, यह काम की बात है। मुझे इससे अधिक न तो कुछ कहना है न सुनना (प्रस्थान)

शंकर—अभी लड़कपन है, नहीं तो यह बात नहीं भूल पाते कि रावण के विनाश के पहले राम के साथ और भी कुछ दुर्घटनाएँ हुई थीं जिनके कारण… दामोदर !…(दामोदर का प्रवेश)

दामोदर—इस कल कल के कत्ते में जो सब से बड़ी खूबी है, शंकर भैया, वह यह कि यहाँ सोने की खान नहीं, सोने की नदी है, सोना यहाँ इस हाथ से उस हाथ जाता नहीं, इधर से उधर बहता है… जानते हो क्या हुआ है ?

शंकर—श्यामल को फाटके में नुकसान हुआ है।

दामोदर—और नुकसान भी सात लाख का ! ज़रा सोचो तो सात लाख किसे कहते हैं ?

शंकर—अभी एक लाख की कमी है, पूरे आठ होने पर कंस की तरह राजाराम के पाप का घड़ा भरेगा… शास्त्र की बात है।

दामोदर—राजाराम…अच्छी याद दिलाई। (कान में कुछ कहता है)

शंकर—मेरी भी यही आशंका थी। पर देखो, अभी किसी से कहना मत…विमल से भी नहीं। डा० बागची के यहाँ तुम नौकर बने हो, यह बात अगर राजाराम को मालूम हो गई तो फिर…

दामोदर—पर राजाराम तो मुझे पहचानता नहीं।

शंकर—लेकिन श्यामल तो पहचानता है ?

दामोदर—इसकी चिन्ता नहीं। उस वेष में श्यामल तो क्या, मेरी लुगाई भी मुझे नहीं पहचान सकती।

शंकर—इसमें मुझे सन्देह है। तुम्हारी स्त्री पतिव्रता है और पतिव्रता स्त्री, अगर उसका स्वामी आदमी से गधा हो जाय, तब भी उसे पहचान सकती है···शास्त्र की बात है। लेकिन खैर, तुम्हें खतरा अपनी स्त्री से नहीं, श्यामल से है। उससे दूर ही रहना···अभी मेरे साथ आओ। (दोनों जाते हैं)



तीसरा दृश्य

(डाक्टर बागची की लेबोरेटरी। डाक्टर रबड़ के दस्ताने पहने हुए बड़े मनोयोग से केमिकलों को मिला कर एक दवा तैयार कर रहा है। फिर एक शीशी को हाथ में लेकर देखता है।)

डाक्टर—Ten Thousand...एक शीशी का वास्ते दस हजार !

(राजाराम का प्रवेश)

राजाराम—दस हजार नहीं डाक्टर, पन्द्रह हजार······ Fifteen Thousand !

डाक्टर—पन्द्रह हजार ?

राजाराम—हाँ, अगर कामयाबी हासिल हो गई तो तुम्हें पूरे पन्द्रह हजार दूँगा और नहीं अगर दवा ने फेल किया तो···

डाक्टर—फेल किस माफिक कोरेगा ? एई जोदि फेल कोरेगा ताहोले हाम आपना लेबोरेटरी ठो डाइ-नामाइट से उड़ा देगा।

राजाराम—उस दिन तुम अपनी लेबोरेटरी को उड़ाने के लिए जिंदा नहीं रहोगे डाक्टर! लेकिन ये तो नाकामयाबी की बातें हैं—मुझे आशा है तुम पन्द्रह हजार रुपये मुझ से लोगे। यह तैयार कब तक हो रही है ?

डाक्टर—Twenty four hours more...काल के एई टाइम······

राजाराम—बिल्कुल तैयार ?

डाक्टर—Quite ready ! O. K.... आप आयगा ?

राजाराम—हाँ, मैं आऊँगा और इस दवा को लेकर तुम्हें श्यामल के यहाँ चलना होगा। लेकिन एक बात का ध्यान रखना। इस दवा का असर क्या है यह या तो तुम जानते हो या मैं। लेकिन हम दो के अतिरिक्त और कोई न जानने पाये—समझते हो ?

डाक्टर—आमी बूझी···

राजाराम—और अगर किसी ने जान लिया तो फिर तुम्हारी ही दवा तुम्हारे ही खून में होगी। मेरे साथ रह कर न तो धोखेबाजी चल सकती है, न कोई ग़लती···आया खयाल में? और······और ये लो···(पांच हजार के नोट देता है) पांच हज़ार··· गिन लो (डाक्टर गिन कर पाकेट में रखता है)

डाक्टर—Thanks (राजाराम जाना चाहता है, फिर लौटता है)

राजाराम—एक बात तो पूछना मैं भूल ही गया डाक्टर, इस दवा के खून में मिलने के कितनी देर बाद मृत्यु होगी?

डाक्टर—Average Constitutions होने से डेढ सौ से दो सौ घण्टा का बीच में—

राजाराम—यानी छै दिन से लेकर नौ दिन के बीच में। इसमें तो कोई फर्क नहीं हो सकता?

डाक्टर—Never.. कोभी नेई!

राजाराम—और मृत्यु के लक्षण क्या होंगे?

डाक्टर—जैसा heart failure में होता है। दिल ठो बंद हो जायगा।

राजाराम—अगर ऐसी बात हो तो डाक्टर तुम आश्चर्य-जनक मनुष्य हो। शाबाश, मुझे तुम्हारी मित्रता का गर्व है (हाथ मिलाता है) अच्छा···(जाता है)

डाक्टर—Fifteen Thousand Rupees! (शीशी को देखता हुआ) पन्द्रह हजार

(नौकर के वेष में दामोदर का प्रवेश)

दामोदर—सरकार…

डाक्टर की हाय? आव किस का बिल ठो लाया हाय? बोल दो एक हाफ्ता का बाद आयेगा, हाम साव रूपिया ठो चुका देगा……

दामोदर—बिल ना ह सरकार…ऊ शंकरमलजी नइखन …सेठ मनोहरदासजी क मुनीम उनहीं क टेलीपून आइल वा—

डाक्टर—शांकरमोलजी का टेलीफोन? की वोलता हाय? वोल दो डाक्टर साहव वाड़ी में नेई हाय…अच्छा ‥ ठेरो हाम वात कोर लेगा (वह बाहर जाना चाहता है, दामोदर शीशी की ओर बढ़ता है। डाक्टर झपट कर उसे रोकता है) ऐ…की दारुण बोका तुमी हाय… जान ठो देगा की?

दामोदर—मेजवा साफ ना करीं हजूर?

डाक्टर—नेई, कोई दारकार नेई हाय……एई मेज को छूएगा तो जमलोक चला जायगा…बूझते पारता है—जाओ…

(दोनों जाते हैं)

चौथा दृश्य

(विमलदास के घर का एक बरामदा। विमल और उनके इञ्जिनियर बातें करते हुए आते हैं।)

विमल—इञ्जिनियर साहब, आप यह बात भूल रहे हैं कि कारखानों में अफ़सरों से अधिक संख्या मज़दूरों की होती है और काम भी मज़दूरों को ही ज्यादा करना पड़ता है. लेहाजा खर्च भी ज्यादा इन्हीं के आराम के लिए होना चाहिए।

इञ्जिनियर—लेकिन इससे अफ़सरों में असन्तोष फैल सकता है।

विमल—मुझे इसकी चिन्ता नहीं। अफ़सरों को इतना काफी रुपया मिलता है कि वे आराम का प्रबन्ध खुद कर सकते हैं। आपका यह नकशा मुझे पसन्द है, पर इसमें मज़दूरों के रहने के लिए जगह अच्छी नहीं है। तीस बीघे ज़मीन···मज़दूरों के लिए छोड़नी पड़ेगी।

इञ्जिनियर—लेकिन और कारख़ानों में तो—

विमल—और कारख़ानों की बात मैं नहीं चलाता। अपने कारख़ाने में मुझे मज़दूरों के लिए रहने की जगह, पानी, रोशनी, सफाई आदि सभी बातों का पूरा ख़याल रखना है।

इञ्जिनियर—लेकिन फिर खर्च···

विमल—उसकी आप चिंता न करें इञ्जिनियर साहब। उन मज़दूरों की खुशी ही मेरी सबसे बड़ी ताक़त और उनका स्वास्थ्य ही मेरी सब से बड़ी पूँजी होगी। मैं कारखाना बना रहा हूँ, कैदखाना नहीं।

इञ्जिनियर—लेकिन गुस्ताखी माफ करें···फिर आप और कारखानों के साथ मुक़ाबला कैसे कर सकेंगे ?

विमल—मुनाफे में शायद मुकाबला न कर सकूँ लेकिन माल तैयार करने में तो करूँगा ही, और अगर दो हज़ार मज़दूरों के जीवन में मैं थोड़ी-सी मिठास भी ला सका तो मैं अपने पहले मुनाफे को ही ईश्वर का वरदान समझूँगा (श्यामल का प्रवेश) कौन श्यामल ? अच्छा, इञ्जिनियर साहब, आप इस नकशे को दुरुस्त कर मुझे फिर दिखलाएँ···नमस्कार ! (इञ्जिनियर जाता है) तुम्हारा चेहरा उतरा जान पड़ता है, श्यामल, तबीयत तो ठीक है ?

श्यामल—आपकी दुआ से ! बात यह है कि मैं इधर जरा busy था।

विमल—किस काम में।

श्यामल—मैं एक कम्पनी फ्लोट कर रहा हूँ जिसका नाम

होगा Indian Film Federation Ltd. उसके मैनेजिंग डाइरेक्टर होंगे मि० राजाराम और मैंने उसके कुछ शेयर खरीद लिए हैं।

विमल—कितने के ?

श्यामल—यही ··करीव छः लाख के !

विमल—तुमने ?

श्यामल—जी हाँ···पर मैं व्यर्थ की बातों पर आपका और अपना बहुमूल्य समय नष्ट करना नहीं चाहता इसलिए और सारी बातें छोड़ कर आप सिर्फ यही जान लें कि मुझे तीन लाख रुपयों की अभी तुरत जरूरत है—कैश-डाउन, बाकी जैसे जैसे···

विमल—लेकिन श्यामल, यह तुमने अपने लिए व्यवसाय चुना है या व्यसन ?

श्यामल—मैं अपने लिए जो भी कुछ चुनता हूँ उसमें आप कृपया अपनी सलाह तब तक न दें, जब तक मैं उसे न मांगू और इस समय मैं आपकी सलाह नहीं अपने रुपये मांगने आया हूँ ।

विमल—तो ऐसी दशा में मुझे अफ़सोस है मैं तुम्हारी कोई सहायता नहीं कर सकूँगा···

श्यामल –मैं आपकी सहायता नहीं चाहता, महाशय, अपने पिता की सम्पत्ति चाहता हूँ, आपकी भीख नहीं, अपना अधिकार।

विमल—अधिकार तो कर्त्तव्य की छाया होती है, अधिकार मांगने के पहले कर्त्तव्य को क्यों ठुकराते हो ?

श्यामल—माफ़ कीजिए, आपकी तरह कर्त्तव्य और अकर्त्तव्य का ज्ञान अगर मुझे भी होता तो आज यह नौबत ही न आती और बाबूजी को मूर्ख बना, उन्हें हिमालय में गल कर मरने के लिए भेज कर सारी सम्पत्ति को आप इस तरह हजम न कर जाते।

विमल—श्यामल, तुम्हारी बहुत-सी बातें मैंने क्षमा की हैं...पर इसे नहीं करूँगा...

श्यामल—जी हाँ, चूंकि इससे दुखती हुई नस पर चोट लगती है।

विमल—तुम चाहे जो समझो, पर इसका परिणाम यह होगा कि...

श्यामल—कि मेरे ही घर से आप मुझे बाहर कर देंगे, पर मुझे चिन्ता नहीं। मैं केवल आख़िरी बार आपके मुँह से सुन लेना चाहता हूँ कि आप मेरा अधिकार मुझे देने को राज़ी हैं या नहीं।

विमल—श्यामल, तुम्हें शर्म आना चाहिए कि...

श्यामल—शर्म !...शर्म अपना अधिकार माँगने वाले से अधिक दूसरे का अधिकार रोक रखने वाले को आना चाहिए।

विमल—तो फिर तुम्हारा अधिकार कहाँ तक है और कहाँ तक मैंने उसे रोक रखा है, इसका उत्तर तुम्हें मेरा सॉलिसिटर देगा।

श्यामल—अच्छा, तो मेरा उत्तर भी आपको सॉलिसिटर ही देगा, किंतु याद रखियेगा। अधिकारों के लिए ही महाभारत हुआ था। जब दो नसों में एक ही खून दौड़ता है, तब संघर्ष होने पर वह दोनों को ही भस्म कर डालता है। अब तक श्यामल ने अपने अधिकार माँगे हैं, अब वह उनके लिए युद्ध करेगा (जाता है)

विमल—श्यामल !···श्यामल !···उफ, बाबूजी, इसी दिन के लिए आपने मुझे ऐसी कठोर आज्ञा दी थी ? (जाता है)

* *

*

पांचवाँ दृश्य

(चंचला का ड्राइंग रूम । एक ड्रेसिंग टेबुल के सामने बैठकर चंचला शृंगार कर रही है । एक मेज पर रखा हुआ रेडियो बज रहा है । ड्रेसिंग टेबुल के आईने में राजाराम की परछाँही आ पड़ती है । राजाराम आता है ।)

चञ्चला—(पीछे की ओर बिना घूमे ही) मैं अभी दासी को पुकारने वाली ही थी कि तुम आ गये, ज़रा देखना तो मेरी चोटी ठीक हुई ?

राजाराम—(पास आकर चंचला की चोटी को ठीक करता हुआ) तुम्हारी इस चोटी को छूते डर लगता है, चञ्चला, कहीं मैं भी इसमें उलझ न जाऊँ ।

चञ्चला—इसका डर नहीं है राजाराम, मैं उन लोगों को अपनी चोटी में उलझने की जगह नहीं देती, जो पहले से ही कहीं और उलझे पड़े हों । जरा वह रिबन सीधा कर दो तो, हाँ······

राजाराम—तुम्हारे कहने का अभिप्राय ?

चञ्चला—मेरा अभिप्राय समझना चाहते हो तो उस रेडियो को जरा कलकत्ते स्टेशन पर लगा दो ।

राजाराम—क्यों ?

चञ्चला—(हाथ की घड़ी देखती हुई) अभी पाँच मिनट में कुमारी कृष्णा का गाना होने वाला है ।

राजाराम—तुम्हारा खयाल गलत है चञ्चला। मैं कृष्णा से प्रेम नहीं करता···

चञ्चला—(उसकी ओर घूम कर) जानती हूं। तुम कृष्णा से प्रेम नहीं करते···इसलिये कि तुम संसार में किसी से प्रेम नहीं कर सकते। फिर भी कृष्णा से विवाह करना तो चाहते ही हो ?

राजाराम—विवाह···विवाह में क्या रखा है चंचला ? विवाह तो गुड़ियों का खेल है, जिसे समाज को फुसलाने के लिए किया जाता है। पर मैं कृष्णा से विवाह करना चाहता हूँ, यह तुम्हें कैसे मालूम हुआ ?

चञ्चला—मुझे चाहे जैसे भी मालूम हुआ हो, पर इतना मैं जानती हूँ कि कृष्णा से तुम विवाह नहीं कर सकोगे।

राजाराम—क्यों ?

चञ्चला—इसके दो कारण हैं। पहला तो यह कि तुम समाज को भले ही फुसला लो, ईश्वर को नहीं फुसला सकते, और यदि सचमुच ईश्वर है तो···

राजाराम—बिल्कुल ठीक !···और दूसरा कारण ?

चंचला—दूसरा कारण यह कि इस जीवन में यदि तुम्हारा विवाह कभी होगा तो चंचला से, क्योंकि···

राजाराम—क्योंकि चंचला मुझ से प्रेम करती है ?

चंचला—नहीं···क्योंकि चंचला तुम्हारे मरने पर तुम्हें लेकर सती होना चाहती है। जिसे तुमने अपने जीवन में अपने पापों का साथी बनाया, वह तुम्हें मरने पर अपना नरक का साथी भी बनाना चाहती है···समझे ? लाओ रुपये···आज तुमने देने को कहा था।

राजाराम—(रुपये निकालता हुआ) पगली ! मैं तुम्हारा नरक का नहीं, स्वर्ग का साथी बनूँगा। जिस चीज़ से स्वर्ग ख़रीदा, बनाया और सजाया जा सकता है, वह यह है (रुपये उसे देता है) और उसी के लिए मुझे कृष्णा से विवाह करना होगा··· श्यामल आ रहा है, मैं अभी टेलीफोन करके तुरत आता हूँ। जो कुछ मैंने कहा था याद रखना, फिर तो मैं और तुम और···स्वर्ग···(जाता है)

चंचला—स्वर्ग !···रुपये का स्वर्ग···रुपयेवालों का स्वर्ग··· हुँह···(रुपये गिनती है। श्यामल का प्रवेश)

श्यामल—(उसके पास आकर ठिठक कर खड़ा हो जाता है) मैं पूछता हूँ, क्या हाथ में रुपये होने के मानी ये ही होते हैं कि ग़रीबों की ओर नज़र तक न फेरी जाय ?

चंचला—(अकचका कर) श्यामल ?···ओह···क्षमा करना

में रुपये गिन रही थी···बैठो···कोई है ? (एक दासी का प्रवेश) मकानवाला नीचे बैठा है, उसे ये पाँच सौ रुपये देकर रसीद ले लो, कहना बाकी पाँच सौ रुपये परसों तक चुका दूँगी···देखो रसीद पर टिकट सटा लेना···जाओ···(दासी रुपये लेकर जाती है)

श्यामल—(बैठता हुआ) मकानवाले के लिए जितनी चिंता तुम्हें हो रही है चंचला, उससे मेरी तो इच्छा यह होती है कि यह मकान मैं ही खरीद लूँ, क्योंकि मकानवाला बन कर तो मैं कम से कम···अरे यह क्या ? चञ्चला, तुम रो रही हो ?

चंचला—नहीं, कुछ नहीं···(मुँह फेर लेती है)

श्यामल—कुछ तो ज़रूर है। तुम्हें मेरे सर की क़सम बताओ क्या बात है।

चञ्चला—तुम यह मकान ख़रीदो या न ख़रीदो, मुझ पर दया करके मेरे बाएँ कान का यह मोती तो गिरवी रख लो······

श्यामल—क्यों ? और तुम्हारे दाहने कान का मोती क्या हुआ ?

चञ्चला—उसे पाँच सौ में गिरवी रख कर यह आज मैंने मकानवाले का आधा किराया चुकाया है और अब पाँच सौ के लिए इसे भी गिरवी रखना होगा···अच्छा हो तुम्हीं रख लो···रखोगे ?

श्यामल—कैसी पगली हो चञ्चला ? इतना सब कुछ हो गया और मुझ से कहा तक नहीं ?

चञ्चला—(आँसू पोछती हुई) अब तो कह रही हूँ ।

श्यामल—(पाकेट से चेकबुक निकाल कर उस पर लिखता हुआ) तुम्हारे कानों के मोती गिरवी रखे जायँ इससे पहले मुझे अपने हृदय को गिरवी रख आना पड़ेगा । यह एक हज़ार का चेक लो और···

चञ्चला—लेकिन······लेकिन······मैं इस तरह कैसे ले सकती हूँ ?

श्यामल—अगर इस तरह नहीं ले सकती तो···(तश्तरी में से एक पान उठा कर चञ्चला के हाथ में पकड़ा कर उसे अपने मुँह में डाल लेता है) इस तरह ही सही । इस चेक की क़ीमत यह पान···हेलो राजाराम ! (राजाराम का प्रवेश) क्या ख़बर है ?

राजाराम—(बैठता हुआ) ख़बर अच्छी नहीं ! पाट का भाव लगातार गिरता जा रहा है । अब तक मैंने होल्डिंग को रोक रखा था, लेकिन नुकसान बहुत ज्यादा बढ़ जाने के डर से आख़िर बेच ही देना पड़ा । मुझे अफ़सोस है ।

श्यामल—(सिगरेट सुलगाता हुआ) कितने का नुक़सान है ?

राजाराम—अगर मैं फुर्ती न करता तो तीन लाख का नुकसान होता, अभी दो ही लाख का है ।

श्यामल—ख़बर तो बुरी ज़रूर है…लेकिन ख़ैर…फ़िल्म फेडरेशन के बोर्ड की मीटिंग आज ही है न? तुमने एकाउण्ट तैयार करा लिया?

राजाराम– सब कुछ तैयार है। एक लाख के लोन की जो बात है, वह तो तुमने मंजूर कर ही लिया है। अब रुपये की ज़रूरत होगी।

श्यामल—रुपये मेरे हाथ में तो इस समय हैं नहीं। अब विमल से रुपये निकालने का प्रबन्ध करना होगा।

राजाराम—प्रबन्ध तो ख़ैर कोई न कोई हो ही जायगा। लेकिन अब इस तरह यह सब कितने दिनों तक चल सकेगा? कुल मिला कर करीब सात लाख की ज़रूरत है। अब तो विमल के साथ कुछ कड़ाई से पेश आना पड़ेगा।

श्यामल—यह काम भी तो मैंने तुम्हारे ही सिपुर्द कर रखा है?

राजाराम—यह तो ठीक है……पर मुझे आशंका है कि शायद तुम…

श्यामल—शायद क्या?

राजाराम—इस सम्बन्ध में पहले मैं यह तुम्हें विश्वास दिला देना चाहता हूँ कि मैं जो कुछ करना चाहता हूँ तुम्हारी मित्रता के कारण और तुम्हारे कल्याण के लिए।

श्यामल—मुझे इसका विश्वास है।

राजाराम—तो फिर विमल का तुम्हारी बहिन कृष्णा के साथ विवाह न हो सके, सबसे पहले इसका प्रबन्ध करना आवश्यक है, और मुझे आशंका यह है कि तुम कहीं भावुकतावश मेरे प्रबन्धों में बाधाएँ डालना शुरू न कर दो।

श्यामल—ऐसी आशंका तुम्हें हुई क्यों ?

राजाराम—इस लिए कि चाहे विमल तुम्हारा कैसा भी दुश्मन हो और कृष्णा उसके साथ विवाह करना स्वीकार करके तुम्हारे साथ कितना भी द्रोह कर रही हो, तुम्हारे हृदय में अब भी···शायद अब भी उन दोनों के लिए कुछ ममता का भाव रह गया है। अगर ऐसी बात है तो···

श्यामल—राजाराम, तुम्हारी आशंका बिल्कुल ग़लत नहीं है। विमल के लिए अब भी जान पड़ता है मेरे हृदय का कोई कोना गीला है···और कृष्णा···वह तो मेरे हृदय का एक टुकड़ा ही है···लेकिन फिर भी मैं यह सब भूलना चाहता हूँ। तुम जो प्रबन्ध करना चाहो करो, मैं कुछ भी सुनना नहीं चाहता, जानना नहीं चाहता। मुझे तुम पर विश्वास है।

राजाराम—(उठता हुआ) मुझे इसकी खुशी है और यह

आशा भी है कि तुम बहुत शीघ्र सुनोगे कि विमल तुम्हारे रास्ते से दूर हो गया और कृष्णा…कृष्णा तुम्हारी इच्छा के अनुसार चलने को राजी हो गई…

चंचला—और तुम को उसने अपना…

राजाराम—अपना मित्र मान लिया। यह निश्चित बात है कि यदि मैं श्यामल का मित्र हूँ तो श्यामल के परिवार को भी मुझे किसी न किसी दिन अपना मित्र मानना ही पड़ेगा। और वह दिन…… चंचला, तुम विश्वास रखो…दूर नहीं है। अच्छा मैं चलूँ। (जाता है)।

चंचला—(श्यामल के पास बैठती हुई) श्यामल, राजाराम के ऊपर क्या सचमुच तुम्हारा बहुत बड़ा विश्वास है ?

श्यामल—अभी तक तो जरूर है…लेकिन तुम यह पूछ क्यों रही हो ?

चंचला—कुछ नहीं, मैं सोचती हूँ क्या यह सम्भव नहीं कि…कि राजाराम के साथ तुम्हारी बहन कृष्णा का विवाह हो सके ?

श्यामल—राजाराम के साथ कृष्णा का विवाह ? असंभव !

चंचला—क्यों ?

श्यामल—फूल को लोहे से नहीं बाँधा जा सकता,

चंचला ! ऐसी बात तुमने मुझ से कही तो कही, राजाराम से कहना भी मत, नहीं तो···

चंचला—नहीं तो क्या ?

श्यामल—वह समझेगा तुम पागल हो गई हो।

चंचला—सचमुच ? अच्छा सोचूँगी—मैं ही पागल हूँ या कोई और भी···लेकिन अभी तक तुम्हारे हजार रुपये के चेक के वदले मैंने तुम्हें धन्यवाद तक नहीं दिया···इधर आओ···

(दोनों जाते हैं)



छठाँ दृश्य

(डाक्टर बागची के घर का अग्र-भाग। डाक्टर बागची और राजाराम का प्रवेश। बागची के हाथ में एक छोटी हल्की शीशी है और रबड़ के दस्ताने हैं।)

राजाराम—यही है ? देखूँ। (शीशी की ओर हाथ बढ़ाता है।)

डाक्टर—की बूड़बक आप ठो हाय रे भाय···पहले एई ठो हाथ में डाल लो। (रबड़ के दस्ताने देता है। राजाराम दस्ताने पहनता है। फिर हाथ में शीशी लेता है)

डाक्टर—हाम आपको पहले ही ठो बोल देता है, जोदी आपका चामड़ा में एई दावा का एक बूंद ठो छुला जाने शोकेगा, ता होले विमल ठो तो जमलोक जायेगा नेई, बाकी आप ठो सीधा चोला जायगा।

राजाराम—बिल्कुल ठीक ! मैं इसका पूरा खयाल रखूँगा। अच्छा, इसकी सुई भी तैयार है ?

डाक्टर—(पाकेट से सुईं निकाल कर उसे ठीक करता हुआ) एई ठो लो···एई सुई में एक बून्द दावा डालना होगा, और ता होले एई सूई का नोक ठो चामड़ा में जरा सा छुला देगा। कुछ तो बुझायगा नेई, बाकी दावा तुरन्त खून में चला जायगा···बस !

राजाराम—शाबाश मित्र ! अपूर्व आविष्कार है तुम्हारा। इसके लिए तुम्हें मैं जितना भी इनाम दूँ थोड़ा है, जितनी भी तुम्हारी तारीफ करूँ कम है। यह लो अपने पाँच हजार···गिन लो।

डाक्टर—(गिन कर) ता होले ठीक हाय। आप ठो तो Gentleman हाय बाकी पाँच हजार ठो कोब देगा ?

राजाराम—काम पूरा हो जाने पर।

डाक्टर—ता होले हाम पूछने शोकता है, काम ठो कब पूरा होगा ?

राजाराम—काम पूरा होने की उद्विग्नता जितनी तुम्हें है,

उससे सौगुना अधिक मुझे है मित्र ! घबड़ाओ मत, विश्वास रखो, काम पूरा होगा और शीघ्र होगा।

डाक्टर—जब आप ठो काम आपना हाथ में लिया है, ता होले काम ठो शाला किस माफिक पूरा होने नेई शोकेगा ? काम ठो को तो पूरा होत्तेई होगा। बाकी राजाराम बाबू, हामारा ठो रूपिया···

राजाराम—बस, मैं ने कह दिया न तुम्हें ? काम पूरा हुआ और तुम्हें रुपये मिले। तुम्हें माँगना नहीं पड़ेगा, मैं रुपये स्वयं तुम्हारे पास पहुँचा जाऊँगा।

डाक्टर—शे तो हाम जानता हाय। आप ठो जेंटिलमैन है, आर हाम भी जेंटिलमैन हाय। हाम लोग जो कुछ कोरेगा, जेंटिलमैन का माफिक कोरेगा। ता होले आप रूपिया कखन पहुँचायगा···?

राजाराम—कल आधी रात को। तुम यहीं अपने घर पर रहना, मैं मिलूँगा।

डाक्टर—ता होले बेश······

राजाराम—और सुनो। अभी तुम्हें चलना होगा मेरे घर। श्यामल वहीं है। आज उसे शराब में मिला कर एक दवा देनी होगी, जिससे चौबीस घण्टे तक वह होश में न आ सके। काम को ख़ूबी से पूरा करने के लिए श्यामल को बेहोश रखना ज़रूरी है।

डाक्टर—ताई तो। हाम दावा ठो देगा।

राजाराम—लेकिन बेहोशी के मानी ये नहीं हैं कि वह अचेत हो जाय। बेहोशी में ही उससे बहुत-से कागजों पर दस्तखत कराने हैं, चिट्ठियां लिखवानी हैं, बिल पास कराने हैं।

डाक्टर—हें हें हें...राजाराम बाबू, हाम ठो जो दावा देगा उससे आप बेहोशी में श्यामल बाबू से उसका स्टेट भी लिखाने शोकता है...आर की बोलेगा?

राजाराम—मुझे इसका पूरा विश्वास है मित्र! अच्छा आओ। (दोनों जाते हैं। दूसरी ओर से दामोदर का झाड़ू लिये हुए नौकर के वेष में प्रवेश। इधर-उधर देख कर वह दीवार में लगी हुई रैक पर रखा हुआ टेलीफोन उठाता है और फोन करता है)

दामोदर—हेलो...कल कल का कत्ता...O, I am sorry ...कैलकटा डब्ल नाईन डब्ल सेवन...येस प्लीज़... कौन शंकर भैया? मैं डाक्टर बागची के यहाँ से फोन कर रहा हूँ। बहुत बुरी खबर है। अभी राजाराम आया था, डाक्टर को लेकर अपने घर गया है। वहाँ श्यामल भी है, उसको... तुम पहले से ही जानते हो? अच्छी बात है। हाँ...हाँ...ज़रूर। तुम्हें कैसे मालूम हुआ?

अच्छा, ठीक है। तो मैं यहीं रहूँ ? हाँ···हाँ··· हाँ···बहुत खूब! (फोन रख देता है। फिर झाड़ू से बुहारता हुआ चला जाता है।)



सातवाँ दृश्य

(शंकर और कृष्णा का प्रवेश)

शंकर—जिस समय हनूमान को लंका में भूख लगी, उस समय न तो उन्होंने सीता से नाश्ते के लिये नमकीन मिठाई की फरमाइश पेश की और न लंका नगरी के चौक पर के किसी हलवाई राक्षस की दूकान पर ही धावा किया, उन्होंने तो सिर्फ अशोकवन के दो-चार फलों से ही अपनी भूख बुझाई। इससे जान पड़ता है कि उन्हें डर यह था कि कहीं रावण किसी रूप में उन्हें ज़हर न दिलवा दे···शास्त्र की बात है—

कृष्णा—शंकर काका, आपके पाँव पड़ती हूँ, इस समय शास्त्र की बातें छोड़ कर सिर्फ सीधी-सादी बातें कीजिए।

शंकर—तो बेटी, सीधी बात तो यह है कि मुझे आशंका है कि कहीं विमल को ज़हर देने की कोशिश न की जाय, और ऐसी हालत में विमल की रक्षा एकमात्र तुम्हीं कर सकती हो।

कृष्णा—मैं इसका पूरा ध्यान रखूँगी और उन्हें ऐसी कोई चीज न खाने दूँगी जो मेरे सामने न बनी हो और जिसे पहले स्वयं मैं न खालूँ। लेकिन क्या आप कोई ऐसा उपाय नहीं कर सकते, जिससे यह आशंका ही दूर हो जाय ?

शंकर—इसका उपाय मनोहरदास के हाथों में था, उन्होंने नहीं किया, सोना कर सकती थी, पर वह उनके साथ चली गई। अब तो उपाय केवल तुम्हीं कर सकती हो।

कृष्णा—क्या ?

शंकर—देखो, श्यामल तुम्हारा भाई है। विमल तुम्हारा होनेवाला पति है। इन दोनों को फिर से आपस में स्नेह-बन्धन में मिला सकनेवाला कोई स्वर्ण-सूत्र अगर है तो तुम। तुम एक बार श्यामल के पास जाओ, उसे समझाओ, उसे यह विश्वास दिलाने की कोशिश करो कि विमल उसका सबसे बड़ा शुभचिन्तक मित्र है और वह जो कुछ कर रहा है उसी के कल्याण के लिए।

कृष्णा—शङ्कर काका, मैं यह सब कुछ करने को तैयार हूँ, पर फिर भी क्या श्यामल भैया मेरी बातों पर विश्वास करेंगे ?

शंकर—कृष्णा, श्यामल उतना बुरा नहीं है जितना ऊपर से दीखता है। आख़िर उसमें भी वही खून दौड़ रहा है, जो तुम्हारी नसों में है…अगर आज संसार में एक राजाराम न होता तो—

कृष्णा—यह राजाराम कौन है काकाजी ?

शंकर—तुम्हारे परिवार में आया हुआ एक दुःस्वप्न जो स्वप्न की तरह ही मिट भी जायगा। पर उसे भूल जाओ बेटी, उसका नाम लेकर अपनी जबान गंदी न करो। और तुम जाओ श्यामल के पास। मुझे विश्वास है, अपनी छोटी बहिन के सुख-सौभाग्य को कुचल दे—श्यामल इतना कठोर नहीं है।

कृष्णा - मैं आज ही जाऊँगी काकाजी (जाती है)

शंकर—राजाराम !…देखूँगा कितनी शक्ति, कितना कौशल तुम में है…

(दूसरी ओर से राजाराम का प्रवेश)

शंकर—अहा, राजारामजी ! आप तो उस हिडिम्बा-पुत्र घटोत्कच की तरह ही हैं, जो स्मरण करने से ही प्रकट हो जाता था…शास्त्र की बात है।

राजाराम—मुझे भी कभी-कभी आप स्मरण कर लिया करते हैं, यह तो मेरा अतिशय सौभाग्य है।

शंकर—कहिये, कैसे पधारे ?

राजाराम—मैं आप से यह पूछने आया था कि जिस दिन आप मेरे यहाँ गये थे, उस दिन आप अपनी कोई चीज वहाँ भूल तो नहीं आये ?

शंकर—नहीं तो !

राजाराम—तो फिर ये पाँच हजार रुपये के नोट आपके तो नहीं हैं ?

शंकर—राजारामजी, ये रुपये देख कर तो इच्छा होती है मैं कह दूँ—हाँ, मैं भूल आया था, लेकिन सचाई की बात तो यह है कि ऐसी भूल मैं कभी नहीं करता।

राजाराम—अच्छा, तो बस मैं यही पूछने आया था।

शंकर—यह तो आपकी सुजनता है, पर अब मुझे आशङ्का होती है कि दूसरी बार कभी जब आप पधारेंगे तो शायद यह पूछने के लिए तो नहीं कि कहीं भूल से मैं आपकी कोई चीज तो नहीं उठा लाया।

राजाराम—नहीं नहीं, इसकी तो मुझे आप से आशा नहीं है। हाँ, और एक बात और···सेठ मनोहर दासजी की कोई खबर आई, वे कब तक कलकत्ते लौट रहे हैं ?

शङ्कर—कोई खबर नहीं और उम्मीद भी नहीं कि वे जल्दी लौटेंगे। क्योंकि वे एक प्रकार से संन्यास धारण करके ही हिमालय गये हैं। क्यों, उनसे आप को कोई प्रयोजन है क्या ?

राजाराम—नहीं यों ही। मैंने सोचा है अगर मनोहर दासजी के शीघ्र लौटने की उम्मीद न हो तो फिर सेठ विमलदासजी से ही एक वार मिल कर मैं उनसे निवेदन करूँ कि वे श्यामलदास के साथ कोई समझौता कर लें, क्योंकि आपस का संघर्ष अच्छा नहीं होता।

शङ्कर—आप जैसे शुभचिन्तकों का यही तो कर्त्तव्य है। और फिर गौर कीजिए…रानी कैकेयी ने अयोध्या के राजमहल में और किसी से सलाह न लेकर मन्थरा दासी से सलाह ली, सिर्फ इसी लिए कि वह उसके मायके की थी और उसकी बचपन की दोस्त थी। आप और श्यामल एक स्कूल के पढ़े हैं यानी एक मायके के हैं और बचपन के दोस्त भी हैं, इसलिए श्यामल आप की ही सलाह सब से ज्यादा मानेगा। शास्त्र की बात है।

राजाराम—आपका शास्त्र-ज्ञान अद्वितीय है शङ्करमलजी, यह तो मुझे मानना होगा। अच्छा, विमलदासजी

तो अपने आफ़िस में ही होंगे, मैं आया ही हूँ तो ज़रा उनसे भी मिल क्यों न लूँ ?

शङ्कर—ज़रूर, ज़रूर !

(दोनों जाते हैं)



आठवाँ दृश्य

(विमल का ऑफिस। विमल और उनके सालिसिटर आमने-सामने बैठे हैं।)

विमल—सॉलिसिटर साहब, मुझे ऐसी आशंका न थी कि श्यामल के सर पर इतना शीघ्र इतना कर्ज लद जायगा।

सालिसिटर—जी हाँ, लेकिन दुनिया में अधिकतर वे ही बातें हुआ करती हैं, जिनकी कोई न आशा रहती है न आशंका। मैं जो आपसे कह रहा हूँ उसपर विश्वास कीजिए, इस एक महीने के अन्दर ही श्यामल एक लाख तेईस हजार रुपये कर्ज ले चुका है, जिसकी रजिस्टर्ड दस्तावेज़ मेरे एक मुअक्किल के पास रखी है।

विमल—अच्छा !

सालिसिटर—और जैसी रफ्तार चल रही है, उसके अनुसार इस दूसरे महीने के अन्दर ही श्यामल पर एक लाख का कर्ज और हो जायगा, जिसका एक बहुत बड़ा भाग जायगा राजाराम के पेट में और शेष वेश्याओं के पास।

विमल—लेकिन श्यामल के महाजन क्या यह नहीं सोचते कि ये रुपये वसूल कैसे होंगे ?

सालिसिटर—वे जानते हैं कि श्यामल का मूल्य उसके सोने के तौल से कम नहीं है। जिस दिन उसके हाथों में हथकड़ियाँ पड़ेंगी उस दिन···

विमल—लेकिन यह ग़लती है। वे धोखा खायेंगे।

सालिसिटर—हो सकता है, लेकिन यह भी तो एक Speculation है···फाटका। हो सकता है वे धोखा न भी खायँ और उस समय उनके आमों के साथ गुठली के दाम भी वसूल हो जायँगे।

विमल—हूँ······

सालिसिटर—तो क्या मैं जान सकता हूँ कि इन खबरों से आपके वसीयतनामें में कोई परिवर्तन हो सकता है ?

विमल—परिवर्तन ? जी नहीं सालिसिटर साहब, वसीयतनामा तो जो मैंने बताया है वही रहेगा, किंतु शर्तें कुछ ज्यादा कड़ी हो जायँगी।

सालिसिटर—मेरी अनधिकार-चर्चा को क्षमा कीजियेगा। सेठ मनोहरदासजी के वसीयतनामे के अनुसार उनकी सम्पत्ति आपको और कृष्णा को आधी-आधी मिली है। अब आप अपने हिस्से की सम्पत्ति इस वसीयतनामे के मुताबिक श्यामल को देने जा रहे हैं—बात यही है न?

विमल—मैं श्यामल को सम्पत्ति देने वाला हूँ ही कौन? यह सब उसी की तो है?

सालिसिटर—ठीक है...लेकिन मनोहरदासजी ने अपनी सम्पत्ति श्यामल को न देकर जो आपको दी तो किसी विशेष अभिप्राय से ही तो? फिर अगर आप अपना हिस्सा उसे दे डालें, तो क्या मनोहर दासजी को यह सुन कर खुशी होगी?

विमल—उन्हें खुशी होगी या नहीं यह तो मैं नहीं जानता, लेकिन इतना समझता हूँ कि मुझे अपनी सम्पत्ति देकर बाबूजी ने अपनी आत्मा का आदेश पालन किया, और अब श्यामल को वही सम्पत्ति देकर मैं अपनी आत्मा का आदेश-पालन कर रहा हूँ। फिर भी इतना ध्यान में रखूँगा कि श्यामल इस सम्पत्ति का भोग करे, इसे नष्ट न कर सके।

सालिसिटर—ख़ैर, जो आप समझें...तो फिर मैं आफिस चलूँ और आप वहीं तशरीफ़ लावें।

विमल—अच्छी बात, नमस्कार ! (सालिसिटर साहब जाते हैं। दूसरी ओर से श्यामल का प्रवेश। श्यामल शराब के नशे में एक बार लड़खड़ा जाता है, फिर सँभल जाता है।)

श्यामल –Good Morning Dear !

विमल—श्यामल ! मैं ने तुम्हें एक बड़े ज़रूरी काम से बुलाया है। मुझे खुशी हुई तुम वक़्त से आ गये। बात यह है कि…

श्यामल—आपकी बातें सुनने से पहले मैं खुद दो-एक बातें अर्ज़ कर लूँ (सिगरेट निकाल कर) लीजिए, शौक़ फ़र्माइए Oh, sorry…आप स्मोक नहीं करते ….खैर, with your permission… (सिगरेट पीता है) हाँ, तो मैं आपसे यह निवेदन कर रहा था कि मेरे ऊपर भी कुछ…अ… financial botheration आ गई हैं। बिज़नेस में हो ही जाता है। वह तो कहिए मेरे कुछ दोस्त ऐसे हैं कि वे मुझे महसूस नहीं होने देते, फिर भी किसी का obligation सर पर क्यों रखा जाय ?… (सिगरेट पीता है)

विमल—अपनी बात खत्म करो !

श्यामल—हाँ, तो आपको याद होगा उस रोज़ मैंने आपसे कुछ रुपये मांगे थे…ज्यादा नहीं, यही

महज़ तीन लाख। लेकिन उस वक़्त आप मुझ पर कृपा नहीं कर सके···ख़ैर, कोई बात नहीं। लेकिन फिर बिज़नेस तो चलता ही है। मैंने हथफेर ले लिया···

विमल—किससे ?

श्यामल—यह जानने से आपको कोई फ़ायदा नहीं।

विमल—और लिया कितना ?

श्यामल—ज्यादा नहीं···यही कोई डेढ़ लाख···और मैं सोचता हूँ, जब रुपये घर में हैं हीं तो सूद बढ़ाने से फ़ायदा क्या। अब इसी बात को मद्दे-नज़र रख कर जो कुछ आपको फ़र्माना हो आप शौक़ से फ़र्माएँ !

विमल—श्यामल, मैंने तुम्हें यही कहने के लिए बुलाया है कि तुम्हारे ऊपर जितना भी कर्ज है मैं सब चुका दूँगा, और एक साथ···

श्यामल—So kind of you !

विमल—और इसके अतिरिक्त यह जो अपना नया कार-खाना खुला है, मैं तुम्हें उसका मैनिजिंग डाइरेक्टर भी बना दूँगा।

श्यामल— Thanks ! मैं सोचूँगा ··

विमल—लेकिन तुम्हें मुझ से एक प्रतिज्ञा करनी होगी।

श्यामल—प्रतिज्ञा ? क्या ? कैसी ?

विमल—पहली तो यह कि तुम कभी शराब नहीं पियोगे। और दूसरी यह कि…

श्यामल—Rubbish !…मैं ऐसे मर्ज नहीं पालता। शराब नहीं, संगीत नहीं, सौन्दर्य्य नहीं तो फिर…… what remains ? मैं किसी स्त्री से प्रेम न करूँ, क्या आप मुझ से यह प्रतिज्ञा भी कराना चाहते हैं ?

विमल—श्यामल, मैं फिर कहता हूँ, यह प्रतिज्ञा करके तुम अपने से अधिक मेरे ऊपर एहसान करोगे…तुम कहो कि तुम यह प्रतिज्ञा कर रहे हो…

श्यामल—महानुभाव ! आपको मालूम होना चाहिए कि मैं यहाँ प्रतिज्ञा करने नहीं, अपने अधिकार माँगने आया हूँ। इन चिकनी-चुपड़ी बातों में छिपी हुई आपकी सारी जहरीली चालों को मैं पहचानता हूँ। अगर आपने मुझे रुपये नहीं दिये तो जानते हैं इसका परिणाम क्या होगा ?

विमल—शायद तुम्हें जेल जाना पड़ेगा।

श्यामल—और तुम्हें जहन्नुम…शायद तुम इस ख़याल में हो कि कृष्णा से विवाह करके तुम सारी सम्पत्ति हज़म कर जाओगे और मैं दूध में की मक्खी की तरह निकाल फेंका जाऊँगा, लेकिन मुँह धो रखो, न तो तुम्हें कृष्णा मिलेगी, न यह…

विमल—श्यामल, अभी तुम होश में नहीं हो। कुछ देर बाद बातें करना, जरा आराम करलो······ए··· कौन है ?

श्यामल—Damn it ! मैं आज तुम्हें अल्टीमेटम देने आया हूँ। अगर आज शाम तक मुझे तीन लाख रुपये न मिले तो फिर मैं इसका बदला लूँगा ! भीषण प्रतिशोध !···Terrible revenge !··· और तब फिर यह न कहना, मैंने तुम्हें चेतावनी न दी थी।

(नौकर का प्रवेश)

विमल—देखो, बाबू को ले जाओ कमरे में सुलाओ···

श्यामल—खबरदार ! याद रखना कृष्णा की शादी एक बन्दर से होगी, पर तुमसे नहीं। यह सम्पत्ति धूल में मिल जायगी, पर तुम्हें न मिलेगी। यह श्यामल नहीं तुम्हारा विनाश बोल रहा है ! (जाता है।)

विमल—ईश्वर, इस नासमझ लड़के को विवेक दो, यह नहीं जानता किसे दोस्त कहते हैं, किसे दुश्मन। इसे क्षमा करो प्रभो ! यह नहीं समझता कि··· (तश्तरी में एक कार्ड लिये हुए एक बेहरे का प्रवेश। विमल कार्ड लेकर देखता है।) जाओ खातिर से अन्दर बुला लाओ। (बेहरा जाता है। विमल कार्ड को फिर से देखता है) राजाराम बगड़····· मुझ से मिलने ?

हूँ...(राजाराम का प्रवेश) नमस्कार राजारामजी ! पधारिए...कैसे कष्ट करना हुआ ?

राजाराम—नमस्कार, सेठ विमलदासजी ! (कुर्सी पर बैठता हुआ) आपको पूर्व सूचना दिये विना ही मैं अकस्मात् चला आया। मुझे भय है आपको शायद असुविधा......

विमल—नहीं, नहीं ! मुझे तो आपके दर्शनों से प्रसन्नता हुई। कहिए, क्या सेवा मैं कर सकता हूँ ?

राजाराम—अजी नहीं, मैं किस योग्य हूँ ? मैंने तो केवल आपसे दो वातें पूछने के लिए आपको कष्ट दिया।

विमल—फर्माइए !

राजाराम—पहली बात यह कि मैं जानना चाहता हूँ, सेठ मनोहरदासजी का स्वास्थ्य हिमालय के उन महात्मा की चिकित्सा में अब कैसा है ?

विमल—उन्होंने अपना जो चित्र भेजा है, उससे जान पड़ता है कि उनके स्वास्थ्य में आश्चर्यजनक परिवर्त्तन हुआ है। जो सुधार यहाँ की वर्षों की चिकित्सा से नहीं हो सका था, वह वहाँ महीने भर में ही हुआ है।

राजाराम—ऐसा ? तब तो मानना होगा कि वे महात्मा अत्यन्त चमत्कारपूर्ण हैं। मेरी इच्छा हो रही है

कि कुछ दिनों तक मैं भी अपनी चिकित्सा उन्हीं से कराऊँ।

विमल—क्यों ? आपका स्वास्थ्य तो देखने में कुछ बुरा नहीं जान पड़ता।

राजाराम—वह तो इसलिए कि मैं कभी किसी प्रकार की चिंता अपने पास फटकने नहीं देता, वर्ना पूछिए मत, मुझे तो ऐसा मर्ज़ है कि इन गरमियों में भी गरम कपड़े पहने रहना पड़ता है।

विमल—और शायद यही कारण है कि आपने हाथों में ये ऊनी दस्ताने पहन रखे हैं। मुझे आश्चर्य हो रहा था कि……

राजाराम—आश्चर्य होना स्वाभाविक ही है। पर अब मेरा विचार है मैं भी इन हिमालयनिवासी महात्मा की चिकित्सा को एक बार आजमाऊँ।

विमल—इस विषय में मैं जो कुछ सहायता आपको दे सकूँगा, खुशी से दूँगा।

राजाराम—धन्यवाद ! अच्छा, एक बात और पूछनी थी…आप मेरी अनधिकार-चर्चा को क्षमा करेंगे …श्यामल आपका स्वकुटुम्बी है और मेरा मित्र, इसलिए मैं यह जानना चाहता था कि यह जो संघर्ष……

विमल—राजारामजी, केवल आप ही नहीं और भी

कितने ही व्यक्ति, जो श्यामल के शुभचिंतक हैं, यह जानना चाहते हैं कि मेरे साथ उसका जो यह संघर्ष है वह क्यों चल रहा है और उसका किस प्रकार अन्त हो सकता है। इसका उत्तर जो मैंने सब को दिया है वही आपको भी दे रहा हूँ, और वह यह कि मैं समझता हूँ श्यामल आवश्यकता से अधिक भला और भोला है, इस लिए वह इस योग्य नहीं कि सेठ मनोहरदासजी की इस विशाल सम्पत्ति का सम्पूर्ण स्वत्व उसके हाथों में रख दिया जाय, और जिस दिन मैं समझ जाऊंगा कि श्यामल···

राजाराम—लेकिन विमलदासजी, क्षमा कीजिएगा, आप श्यामल को इतना भला और भोला समझते हैं, क्या श्यामल भी इस बात को समझता है ?

विमल—श्यामल नहीं समझता, इसी से तो मेरी धारणा और भी पुष्ट होती है। बच्चा उस दिन बच्चा नहीं रह जाता है, जिस दिन वह समझ जाता है, संसार उसे बच्चा क्यों समझता है। जिस दिन श्यामल समझ जायगा कि मैं उसे क्या समझता हूँ, उसी दिन इस संघर्ष का अन्त हो जायगा।

राजाराम—और आप उसकी सम्पत्ति उसे लौटा देंगे ?

विमल—उसकी सम्पत्ति ;जब मैंने ली ही नहीं है, तो

लौटाने के क्या मानी होते हैं? हाँ, जो अधिकार आज मेरे हाथों में है, वह उस दिन उसके हाथों में हो जायेगा।

राजाराम—विमलदासजी, अब तक मेरी व्यक्तिगत घनिष्ठता श्यामल से ही रही है, और मेरी स्पष्टवादिता क्षमा करेंगे···श्यामल से आपके विषय में मुझे जो कुछ विवरण सुनने को मिले थे, वे कुछ अधिक··· अ···अ···

विमल—प्रशंसात्मक नहीं थे।

राजाराम—जी हाँ! लेकिन आपकी बातों से मैं आज अत्यन्त प्रभावित हुआ हूँ और मुझे आशा है कि वह शुभ दिन निकट है, जब श्यामल आपकी दृष्टि में इस सम्पत्ति का अधिकार ग्रहण करने के योग्य हो जायगा। पर तब श्यामल के एक मित्र के नाते क्या मैं यह जान सकता हूँ कि श्यामल इस योग्य हुआ या नहीं, इसका निश्चय करने की आपकी शर्तें क्या हैं?

विमल—शर्तें बहुत थोड़ी ही हैं और उनमें एक प्रमुख यह है कि उन व्यक्तियों के विरुद्ध उसके हृदय में शत्रुवत् भावनाएँ हो जायँ, जो आज मित्रता की मिठास में लपेट कर उसे दुर्व्यसनों का ज़हर पिला रहे हैं और···

राजाराम—शायद आपका संकेत उन लोगों की ओर है जो...

विमल—जो पहले श्यामल को यह सिखाते थे कि अपनी सम्पत्ति मनमाना लुटाने का तुम्हें अधिकार है और अब उसे यह बता रहे हैं कि अपनी सम्पत्ति को लुटाने का अधिकार प्राप्त करना तुम्हारा कर्त्तव्य है।

राजाराम—अच्छा !...तो क्या ऐसे भी व्यक्ति श्यामल के मित्र हैं ?

विमल—जी हाँ, जिन्हों ने किसी समय उसके रुपये खाये, और अब उसी के रुपये उसी को कर्ज दे रहे हैं... श्यामल के ऐसे भी मित्र हैं राजारामजी !

राजाराम—मुझे यह सुन कर आश्चर्य हो रहा है और उससे भी अधिक अफ़सोस। विश्वास रखिए विमलदासजी, यदि इस सम्बन्ध में मैं आपकी कोई भी सेवा कर सका तो मुझ से अधिक सुखी कोई न होगा। अच्छा, अब मुझे इजाज़त दें। (उठता है)

विमल—बड़ी कृपा की आपने...(विमल भी कुर्सी पर से उठता है। राजाराम दस्ताने से ढँका हुआ अपना हाथ विमल की ओर शेक-हैण्ड के लिए बढ़ाता है, इतने में हो वेग से शंकर का प्रवेश। शंकर के हाथों में भी दस्ताने

हैं। वह झपट कर राजाराम के हाथ पकड़ता है और झोंके के साथ शेक-हैण्ड करता है।)

शंकर—शास्त्र की बात है राजारामजी! रामचन्द्र के पैरों के स्पर्श से पत्थर भी आदमी हो जाता था, इसलिए वे जंगलों-पहाड़ों में भी बिना जूते के ही घूमते थे। आपके हाथों के स्पर्श से आदमी पत्थर बन जा सकता है, इसलिए आप हाथों में दस्ताने पहन कर घूमते हैं—क्यों?

राजाराम—मैं आपका अभिप्राय नहीं समझा।

शंकर—अपना अभिप्राय मैं केवल अपनी ज़बान से ही आपको समझा रहा हूँ, पैरों से नहीं, इसके लिए आप अपने ग्रहों को धन्यवाद दीजिए।

विमल—शंकर काका!···

राजाराम—क्या आप मेरा अपमान करना चाहते हैं?

शंकर—इसे आप अपना सम्मान समझिए!

राजाराम—विमलदासजी!···

विमल—(आगे बढ़ता हुआ) शंकर काका!···

शंकर—चुप रहो विमल!···राजारामजी! आप मेरे घर आये हैं, इसलिये इससे ज्यादा मैं और कुछ नहीं कहना चाहता कि अब आप तशरीफ़ ले जायँ·· और अपने वे नकाबपोश हाथ पाकेट से बाहर ही रखें···(पिस्तौल निकालता हुआ) जी हाँ···

आपका ऐसा आतिथ्य-सत्कार करने को मजबूर होने के लिए मुझे खेद है, पर शायद आपको याद होगा कि रामचन्द्र ने शूर्पणखा का आतिथ्य-सत्कार इससे भी बुरा किया था···शास्त्र की बात है...

राजाराम—शंकरमलजी !···

शंकर—चुप !···बाहर जाओ !···(राजाराम जाता है)

विमल—शंकर काका !···यह···यह···

शंकर—जो मैं करता हूँ, ठीक करता हूँ! तुम्हें इसमें दखल देने की कोई ज़रूरत नहीं। तुम अपना काम देखो। (जाता है। विमल हत-बुद्धि सा खड़ा रह जाता है। पटक्षेप।)

* *

*

नवाँ दृश्य

(आगे-आगे कृष्णा और पीछे-पीछे एक दासी का प्रवेश)

कृष्णा—(हाथ में एक कार्ड ले देखती हुई) लेकिन यह मिस चंचला हैं कौन ?

दासी—यह तो उन्होंने नहीं बताया।

कृष्णा—तो फिर कह दो उनसे अभी मुझे फ़ुरसत नहीं है, फिर कभी · (चंचला का प्रवेश)

चंचला—नमस्कार कृष्णा देवी ! बिना बुलाये चली आने की मेरी इस असभ्यता को क्षमा करेंगी। मेरा प्रयोजन ही ऐसा है कि···

कृष्णा—(दासी को संकेत करती है, दासी जाती है) मैं आपका परिचय जान सकती हूं ?

चञ्चला—क्या आप सत्य सुनना चाहती हैं ?

कृष्णा—यदि आप कह सकें तो।

चञ्चला—संसार के सामने मैं मैं वेश्या हूँ, पर आपके सामने मैं स्त्री बन कर आई हूँ।

कृष्णा—मैं···मैं आपकी क्या सेवा कर सकती हूँ ?

चञ्चला—यही कि आप एक नर-पिशाच के चंगुल से अपनी रक्षा करें।

कृष्णा—मैं···अपनी·· रक्षा···क्या आप स्पष्ट कहेंगी ?

चञ्चला—इससे अधिक स्पष्ट मैं और कुछ नहीं कह सकती कि आपके भावी पति विमलदासजी की हत्या करके और आपके भाई श्यामलदास को आजीवन अपनी मुट्ठी में रख कर एक नीच नराधम आपसे विवाह करने का षड़यन्त्र रच रहा है, और मैं यही कहने आई हूँ कि आप अपनी रक्षा करें।

कृष्णा—पर वह है कौन? राजाराम?

चञ्चला—हाँ...मेरा भावी पति।

कृष्णा—भावी पति?

चञ्चला—क्यों, आपको आश्चर्य क्यों होता है? क्या वेश्या के कोई पति नहीं हो सकता?

कृष्णा—नहीं, मुझे आश्चर्य होता है कि एक ऐसे नीच नराधम को आप अपना पति बनाना क्यों चाहती हैं?

चञ्चला—वह दूसरी बात है कृष्णा देवी, जिसे मैं शायद... समझा नहीं सकूँगी। अच्छा, तो मैं चलूँ।

कृष्णा—पर मुझे क्या करने की सलाह देने आप आई थीं?

चञ्चला—यदि आप मिल सकें तो आज ही श्यामलदास से मिल लें। यदि आपकी बात उनकी समझ में आ गई तो अब भी आशा है कि राजाराम

की चालें निष्फल की जा सकेंगी। अच्छा…
(जाना चाहती है)

कृष्णा—आपके इस कष्ट के लिये मैं आपको किन शब्दों में धन्यवाद दूँ ?

चञ्चला—आप भूल रही हैं कृष्णा देवी, कि राजाराम आप से विवाह न कर सके, इसमें मेरा अपना भी कोई स्वार्थ है। पर मुझे लौटने की शीघ्रता है। कार्ड पर मेरा टेलीफोन नम्बर है। आवश्यकता होने पर आप बातें कर सकती हैं। नमस्कार!
(जाती है। दूसरी ओर से विमल का प्रवेश)

विमल—अभी यह कौन आई थी कृष्णा ?

कृष्णा—एक स्त्री।

विमल—पर उसका परिचय ?

कृष्णा—क्या किसी का स्त्री होना ही काफी परिचय नहीं है ? मैंने अभी तुम्हें बुलाया था यह कहने के लिए कि…कि मैं ज़रा बाहर जा रही हूँ।

विमल—तो इसमें मुझ से कहना क्या है ?

कृष्णा—यही कि जब तक मैं न लौटूँ, तुम्हें मेरे सर की कसम, कहीं घर से बाहर न जाना।

विमल—शंकर काका की तरह तुम्हारा दिमाग़ भी क्या बिल्कुल ही फिर गया है कृष्णा ?

कृष्णा—ईश्वर करे मेरा दिमाग सचमुच फिरा हुआ हो,

पर तुम वचन दो, जब तक मैं न लौटूँ, तुम कहीं बाहर जाओगे तो नहीं ?

विमल—इसमें वचन देना क्या है ? तुम्हारा हुक्म ही काफी है। पर तुम कहाँ जा रही हो ?

कृष्णा—अभी नहीं बताऊँगी तुम्हें, पर जो कुछ करने में जा रही हूँ, यदि मुझे उसमें सफलता मिल गई तो, सच कहती हूँ···

विमल—कि मैं तुम्हारा भक्त बन जाऊँगा, पर तुम्हारा तो मैं ऐसे भी हूँ।

कृष्णा—चुप रहो, यह मज़ाक करने का समय नहीं है। मुझे तुरत जाना है, और तुम इस काबिल नहीं हो कि तुम्हारा विश्वास किया जाय। चलो, तुम्हें तुम्हारे कमरे में बन्द कर आऊँ।

विमल—भई, वचन मैंने सिर्फ कहीं बाहर न जाने का ही दिया है, कमरे में बन्द रहने का नहीं।

कृष्णा—तुमने वचन नहीं दिया है, पर मेरा हुक्म तो है ? चलो !

(दोनों जाते हैं)





दसवाँ दृश्य

(राजाराम के घर का वह भाग जिसे उसने श्यामल को दे रखा है। श्यामल एक मसनद के सहारे अधलेटा-सा शराब पी रहा है। बगल में बैठा डाक्टर बागची उसे शराब ढाल कर दे रहा है। चंचला नाच रही है। श्यामल नशे में झूमता हुआ ताल दे रहा है, इतने में ही एकाएक उसे उबकाई आ जाती है। चंचला नाचना बन्द कर उसके पास आ जाती है और उसका सर सहलाती है।)

चंचला—कितना कहती हूँ, ज्यादा शराब पीना छोड़ दो, पर तुम मानते नहीं।

श्यामल—शिः, अभी मैंने पी ही कहाँ? क्यों डाक्टर, क्या मैंने शराब ज़्यादा पी है?

डाक्टर—नेई रे भाय, एई की शराब हाय? एई ठो तो सोडा हाय।

चंचला—चुप रह मुँहझौंसे! तू ही तो सारे पाप की जड़ है।

डाक्टर—हाम ठो मुँहझौंसा हाय? बेश···बेश very good! अच्छा इसका मीनिंग की होता हाय?

चंचला—मीनिंग तब समझ में आयेगा, जब मैं तुम्हारे मुँह में आग लगा दूँगी, समझे?

डाक्टर—ओह, भीषण!···दारुण! हाम ठो मीनिंग जानना नेई चाहता···(शराब पीता है।)

श्यामल—चञ्चला, तुमने नाचना बन्द कर दिया? नाचो!

चञ्चला—नहीं, तुम्हारी तबियत अच्छी नहीं, अब मैं नहीं नाचूँगी।

श्यामल—नहीं नाचोगी? बड़ी अच्छी बात। तुम यहाँ बैठो···मैं नाचूँगा (श्यामल उठ कर नाचता है चञ्चला उसे रोकना चाहती है। श्यामला नाचता-नाचता गिर पड़ता है—राजाराम का प्रवेश। चञ्चला जाती है)

राजाराम—(श्यामल को उठाता हुआ) उठो श्यामल, यह शराब पीकर नाचने का वख्त नहीं काम करने का वख्त है···होश में आओ!

श्यामल—तो मैं क्या वेहोश हूँ? क्यों वागची, तुम तो डाक्टर हो, तुम्हीं बताओ···(उसे एक तमाचा जोर से मारता है) वेहोश आदमी किसी को तमाचा मार सकता है?

डाक्टर—(गाल सहलाता हुआ) नेई रे भाय, आप ठो तो पूरा होश में है···बाकी हाम ठो एक टी दूरे बोशेगा (खिसक कर बैठता है)

राजाराम—श्यामल, इन कागज़ों पर तुम्हें दस्तख़त करना है, यह लो···(कागज़ देता है)

श्यामल—कैसे कागज़ हैं ये?

राजाराम—पहले दस्तख़त कर दो, पीछे पूछना।

श्यामल—(दस्तख़त करता हुआ) और कुछ ?

राजाराम—हाँ, तुम जानते हो डेढ़ लाख का कर्ज़ थोड़ा नहीं होता, जो इस वक्त तुम्हारे सर पर है। इसके अलावा एक लाख का जो फाटके में तुम्हें नुकसान हुआ है, उसे चुकाना ही होगा। इसके लिये ज़रूरी है कि विमल को रास्ते से हटा कर सेठ मनोहरदास की सम्पत्ति तुम अपने हाथ में ले लो···और फौरन!

श्यामल—लेकिन यह सब तो तुम्हारी ही सहायता से हो सकेगा राजाराम!

राजाराम—तो मैं कब कहता हूँ कि नहीं, लेकिन यह सब बच्चों का खेल नहीं है। यह एक संग्राम है, जिसमें मुझे अपनी जान तक पर खेलना पड़ेगा और यह सब मैं तुम्हारे लिये तभी कर सकता हूँ, जब तुम मेरे लिए कम से कम उतना करो, जितना तुम आसानी से कर सकते हो।

श्यामल—तुम मुझ से क्या चाहते हो ?

राजाराम—आज तुम्हारी बहन कृष्णा तुम से मिलने आने वाली है। तुम उसे राजी कर लो कि वह विमल के बदले···मुझ से विवाह कर ले···

श्यामल—तुम से कृष्णा का विवाह ?

(हाथ से गिलास छूट पड़ता है)

राजाराम—क्यों नहीं ? क्या मैं कृष्णा से विवाह करने योग्य नहीं हूँ ?

श्यामल—पर···पर यह तो असम्भव है कि···

राजाराम—असम्भव एक इतना बड़ा शब्द है श्यामल, जिसे अपने कानों में अँटाना आज तक मैंने नहीं सीखा है। अगर यह सम्भव है कि विमल की हत्या की जाय, अगर यह सम्भव है कि तुम्हें अपनी खोई हुई सम्पत्ति फिर से वापस मिले, तो फिर यह क्यों सम्भव नहीं है कि कृष्णा के साथ मेरा विवाह हो ?

श्यामल—तो क्या तुम विमल की हत्या करना चाहते हो ?

राजाराम—(पाकेट से शीशी निकालता है) और नहीं तो क्या उसे अमृत पिलाना चाहता हूँ ? पन्द्रह हजार रुपये खर्च कर यह क्या विमल के लिए सञ्जीवनी खरीदी गई है ? (डाक्टर को इशारा करता है, वह श्यामल को शराब देता है ।)

श्यामल – लेकिन मुझे तो तुमने कहा था राजाराम, कि ··

राजाराम—मैंने तुम से क्या कहा था और क्या नहीं, इसकी सफाई अभी मुझे नहीं देनी है। और मैं यह भी बता दूँ कि जो चीज विमल को दी जा सकती है, कोई वजह नहीं वह तुम्हें भी जरूरत पड़ने पर क्यों न दी जाय। (शीशी उसकी ओर बढ़ाता है ।)

श्यामल—मुझे ? मेरी हत्या करोगे ?

राजाराम—नहीं मित्र, मैं तुम्हारी हत्या नहीं करूँगा, अपनी हत्या तुम स्वयं करोगे। मैं तो चाहता हूँ तुम अपनी सम्पत्ति के स्वामी बनो, उस सम्पत्ति को भोगने के लिए बहुत दिनों तक जियो और जब तक जियो सुख से जियो, लेकिन यह सब सम्भव तभी है जब कि कृष्णा के साथ मेरा विवाह सम्भव हो। यदि मेरा विवाह असम्भव है तो तुम्हारा जीवन भी असम्भव है, इसे याद रखो! (कृष्णा का प्रवेश।)

कृष्णा—श्यामल भैया!

श्यामल—कृष्णा!

कृष्णा—भैया, कल सुबह रेडियो पर मेरा प्रोग्राम है। हिमालय पर मेरा भाषण होगा और गाना भी··· तुम सुनोगे तो ?

श्यामल—ज़रूर सुनूँगा बहन!

कृष्णा—नहीं, कल नहीं, मैं तो तुम्हें आज ही अभी सुनाने आई हूँ···लेकिन मैं शायद···मैं आप लोगों का समय नष्ट कर रही हूँ। आप लोगों की तारीफ़ ?

राजाराम—कृष्णा बाई, मेरा नाम राजाराम और ये डाक्टर बागची। आपकी प्रशंसा बहुत सुनी थी, दर्शन आज ही हुए। श्यामल बाबू तो आपकी

प्रशंसा करते फूले नहीं समाते। अच्छा, आप इन्हें अपना भाषण सुनायें, जब तक हम लोग चलें, नमस्कार ! श्यामल, ध्यान रखना ! (राजाराम और बागची जाते हैं)

* *

*

ग्यारहवाँ दृश्य

(अकलू, मंगरू और जयराम का प्रवेश)

अकलू – सरकार का क्या हुक्म है, मालूम है न ?

मंगरू—मालूम है।

अकलू—अच्छा तो पूरी निगरानी रखना। श्यामल बाबू या कृष्णा बाई को किसी तरह की तकलीफ न हो, लेकिन वे लोग किसी से भी मिलने न पावें और न इस मकान से कहीं बाहर ही जाने पावें, समझा ?

जयराम—बहुत अच्छा !

अकलू—मैं बाहर के फाटक पर बैठता हूँ, तुम लोग यहीं रहो। कहीं जाना मत।

मंगरू—बहुत अच्छा !

अकलू—और देखो, अगर श्यामल बाबू किसी तरह की जबर्दस्ती करना चाहें, तो डरना मत। इन्हें गिरफ्तार कर रखना—हाँ !

जयराम—बहुत अच्छा ! (तीनों जाते हैं। कृष्णा और श्यामल का प्रवेश)

श्यामल—कृष्णा, इस पाप का बीज मेरा बोया हुआ है और अब फल भी मुझे ही भुगतना होगा···अगर विमल की हत्या हुई तो श्यामल भी मरेगा।

कृष्णा—भैया, ऐसा न कहो। तुम्हारा दोष नहीं, तुम अन्धकार में थे। तुम नहीं जानते थे विमल तुम्हारा कितना कल्याण कर रहे हैं, तुम नहीं जानते थे मैं उनसे कितना प्रेम करती हूँ और तुम नहीं जानते थे कि राजाराम उनकी हत्या करना चाहता है। फिर भी···अब उन्हें बचाओ··· मुझे विधवा होने से बचाओ···

श्यामल—उफ़···अभी पूरे चौबीस घण्टे भी नहीं हुए कि मैं विमल से लड़ाई कर, उसे धमकी देकर, उसके विनाश की भविष्यद्वाणी करके आया हूँ और अब राजाराम सचमुच उन बातों को पूरा कर डालना चाहता है। कृष्णा, विमल किस तरह विश्वास कर सकेगा कि सचमुच अपराधी श्यामल नहीं है ?

कृष्णा—भैया, तुम सच मानो, अगर विमल अपनी आँखों से भी तुम्हें अपनी हत्या का प्रयत्न करते हुये देख लें, तो अपनी आँखों पर भी अविश्वास करके वह तुम्हारे ऊपर ही विश्वास करेंगे।

श्यामल—कितना महान हृदय है! किन्तु मैंने उसे तब पहचाना जब अवसर बीत रहा है। पर कृष्णा, तुम तो उसे पहचानती थी, तुमने मुझ से पहले क्यों नहीं कहा?

कृष्णा—मैं उन्हें तो पहचानती थी भैया, पर तुम्हें नहीं पहचानती थी। मुझे विश्वास नहीं था कि तुम···

श्यामल—मुझ पर तुम्हें विश्वास नहीं था, बाबूजी को नहीं था, किसी को नहीं था, केवल एक विमल को था और···और उसकी बात मैंने नहीं सुनी, उसका अपमान किया···और अब उसकी मृत्यु का कारण बनने जा रहा हूँ···उफ़, जान पड़ता है मैं पागल हो जाऊँगा···

कृष्णा—भैया, धैर्य से काम लो। शायद उपाय करने से अभी भी······

श्यामल—उपाय···उपाय इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं कि एक बार इन पत्थर की दीवारों से सर टकरा कर मैं देखूँ कि ये टूटती हैं या नहीं। मेरी आत्मा दुर्बल हो गई है, दिमाग़ चक्कर खा रहा है, शरीर

काँप रहा है और मैं जानता हूँ इन दीवारों के भीतर मैं नज़रबन्द हूँ। फिर भी उपाय करना ही पड़ेगा···उपाय···उपाय···ए···कोई है ?

कृष्णा—भैया, अच्छा हो तुम थोड़ी देर विश्राम कर लो।

श्यामल—चुप रहो, यह विश्राम नहीं बलिदान का समय है। मैं जो कहता हूँ, वह सुनो—(कृष्णा के कान में कुछ कहता है। मंगरू का प्रवेश) जाओ, एक गिलास पानी लाओ। (मंगरू लौटता है, इतने में ही श्यामल बिजली की तरह उस पर टूटता है। मंगरू चिल्लाता है और जयराम आता है। श्यामल दोनों से एक साथ युद्ध करता है। दोनों घायल होते हैं। श्यामल कृष्णा को संकेत करता है, कृष्णा भागना चाहती है, तब तक अकलू आकर उसे पकड़ लेता है। मंगरू और जयराम उठ कर श्यामल पर फिर से आक्रमण करते हैं। पिस्तौल लिए हुए चंचला का प्रवेश।)

चंचला—खबरदार! छोड़ दो कृष्णादेवी को !

अकलू—बाईजी, आप क्या···

चंचला—सुनते नहीं ? छोड़ दो! और जहाँ हो वहीं खड़े रहो! श्यामल, इन्हें बांध दो उस खंभे से।

श्यामल—चंचला···तुम ?

चंचला—हाँ···मैं! वेश्या पर क्या विश्वास नहीं होता ?

श्यामल—पर यह असंभव-सा जान पड़ता है चञ्चला, कि तुम राजाराम के विरुद्ध मुझे सहायता दोगी।

चंचला—तुम्हें असंभव जान पड़ता है, इस लिए कि तुम नहीं समझते कि वेश्या भी स्त्री है···इन्हें ले जाकर बाँध दो। (श्यामल तीनों को बाँध कर ले जाता है। कृष्णा चंचला के गले से लग जाती है)

कृष्णा—बहन, यह ऋण मैं कभी नहीं चुका सकूँगी।

चञ्चला—काश, तुम समझ पाती कृष्णा देवी, कि स्वयं आज मैं कौन-सा ऋण चुका रही हूँ···लेकिन अव समय नहीं। तुम शीघ्र जाओ। आधी रात हो रही है और राजाराम इसी समय की प्रतीक्षा में है। (दोनों जाती हैं)

* *

*

बारहवाँ दृश्य

(रात का समय। विमल अपने कमरे में सो रहा है। गहरा सन्नाटा छाया हुआ है। धीमा प्रकाश छा रहा है। इतने में ही एक खिड़की के जरिये काले कपड़े पहने राजाराम का प्रवेश। धीरे से वह आगे बढ़ता है। विमल गाढ़ी नींद में सो रहा है। वह उसके सिरहाने से सेफ की चाभी निकालता है, फिर सेफ खोलता है, इतने में ही घड़ी टन-टन करके बज उठती है। राजाराम छिप जाता है। घड़ी के बन्द होने पर वह सेफ में से खोज कर कुछ कागज निकालता है। कुछ कागज वहीं छोड़कर बाकी अपने पाकेट में रखता है। फिर वह सेफ को छोड़ कर विमल की ओर बढ़ता है। विमल के पास खड़ा होकर वह पाकेट में से एक सुई निकालता है; और उसे विमल की ओर बढ़ाता है। विमल करवट बदलता है। वह फिर छिप जाता है। इसके बाद झुक कर वह सुई उसके शरीर में चुभो देता है। विमल जरा-सा हिलता है। राजाराम झट खिड़की की ओर से बाहर चला जाता है। दूसरी ओर से कृष्णा का प्रवेश। वह पहले सेफ को खुला देख कर चौंक उठती है, फिर विमल की ओर बढ़ती है)

कृष्णा—विमल!···विमल!··· (विमल उठता है)

विमल—कृष्णा! यहाँ···इस समय?

कृष्णा—विमल···देखूँ···देखूँ······(उसका बदन चारों ओर

देखती है) तुम्हें कहीं कुछ हुआ तो नहीं, उसने···
कुछ किया तो नहीं···?

विमल—पगली हो गई हो कृष्णा ? मुझे क्या होनेवाला है ? कौन क्या करने वाला है ? और वह सेफ किसने खोला ?

कृष्णा—उसीने···उसी राजाराम ने······जो तुम्हें···तुम्हें··· देखूँ तो उसने तुम्हें कुछ किया तो नहीं ?

विमल—मुझे वह क्या-कर सकता है ? (सेफ की ओर बढ़ता है) जान पड़ता है वह कुछ चुराने के लिये आया था

कृष्णा—ठहरो ! ठहरो !···यह···यह तुम्हारे हाथ में क्या हुआ है ? यह लाल सा क्या है ?

विमल—कुछ तो नहीं, मच्छर ने काट खाया होगा···

कृष्णा—मच्छर ने ? उफ़···सर्वनाश ! विमल !···विमल !···

(बिछावन पर मूर्च्छित हो गिरती है, शंकर का प्रवेश)

विमल—शंकर काका, क्या हो गया है कृष्णा को, देखो तो ? इसने कोई सपना देखा है क्या ?

शंकर—सपना नहीं विमल, उसने प्रलय देखा है···(गला रूँध जाता है) मैंने सब कुछ जाना लेकिन ज़रा देर से···और·· और···

विमल—शंकर काका, तुम रो रहे हो ? बात क्या है ? मुझे क्या हुआ है ? कुछ तो नहीं ? सब पागल

हो गये हैं, या मैं ही कोई सपना देख रहा हूँ ? कृष्णा !

शंकर—विमल, तुम ज़रा बाहर जाकर पुलिस को फोन करो और यह पता लगाने की कोशिश करो कि चोर किधर गया, मैं कृष्णा को होश में लाता हूँ। (विमल जाता है। शंकर कृष्णा को उठाता है) कृष्णा, उठो होश में आओ !

कृष्णा—(होश में आती हुई) विमल !··· विमल !···

शंकर—इस समय विमल को पुकारने की ज़रूरत नहीं, ईश्वर को पुकारने की ज़रूरत है, मेरी बात सुनो !

कृष्णा—पर आप नहीं जानते शंकर काका···

शंकर—मैं सब कुछ जानता हूँ और इसलिए कहता हूँ कि तुम वीर भारत की वीर कन्या हो, इस तरह कायरता न दिखाओ। जो संकट आया है उसका सामना करो और याद रखो, सावित्री सत्यवान को यम के हाथों से वापस लाई थी।

कृष्णा—मैं क्या कर सकती हूँ शंकर काका···अब कोई क्या कर सकता है ?

शंकर—ऐसी बातें तुम्हें शोभा नहीं देती कृष्णा, यदि और कुछ नहीं तो तुम हँसते-हँसते सती तो हो सकती हो ! कम से कम यह तो दिखा सकती हो कि वीर रमणी अपने प्रियतम की रक्षा के लिए

जान दे सकती है, लेकिन रोकर नहीं गाकर ! क्या तुम भूल गई हो कि कल सुबह तुम्हारा रेडियो पर प्रोग्राम है ?

कृष्णा—आप मुझे क्या करने को कहते हैं ?

शंकर—मैं कहता हूँ—उठो ! हँसो ! गाओ ! और संसार को एक बार चकित कर दो ! ईश्वर महान् है, पृथ्वी बड़ी है और तुम नहीं जानती तुम क्या कर सकती हो। मेरे साथ आओ !

(दोनों जाते हैं)





तेरहवाँ दृश्य

(स्थान सड़क। आधी रात। कुत्ते भूँक रहे हैं। सियार बोल रहे हैं। बीच-बीच में उल्लू बोल उठता है। डाक्टर बागची अपने घर के दरवाजे की सड़क पर खड़ा एक हाथ में शराब की बोतल लिए पीता हुआ टहल रहा है।)

डाक्टर—(पीता हुआ) विमल ठो मोरेगा······श्यामल ठो मोरेगा···शाला शब ठो मोरेगा···मोरने दो शाला लोग को···शाला हाम ठो मौज करेगा···

(राजाराम का प्रवेश)

राजाराम—इस में क्या शक है मित्र ! विमल का मरना अव निश्चित है, श्यामल के सरपर मौत मड़रा रहा है…यह सव तुम्हारा ही तो प्रताप है डाक्टर !

डाक्टर—आप ठो आ गिया…काम हुआ ?

राजाराम—विल्कुल सोलहो आने सम्पूर्ण !

डाक्टर—Congratulations ! ता होले रूपिया ?

राजाराम—रुपया…तुम्हें रुपया चाहिए डाक्टर बागची ?

डाक्टर—हाँ…शेई तो बाकी हाय।

राजाराम—और कुछ नहीं लोगे ?

डाक्टर—हे…हे…हे…ता होले आप ठो perfect gentleman आर हाम भी gentleman हाय, ता होले जो कुछ देगा हम खुशी खुशी लेने शोकेगा।

राजाराम—शाबाश ! तो मैं तुम्हें एक वरदान देने आया हूँ मित्र !

डाक्टर—Thanks...ता होले की ठो देगा ?

राजाराम—मौत !

डाक्टर—की ?…

राजाराम—मौत ! इस घृणित जीवन से छुटकारा ! जव तक तुम जीते हो तव तक यह रहस्य जीता है, तुम मरोगे तो साथ साथ यह भी मरेगा…(पिस्तौल निकालता है)

डाक्टर—ता होले···आप ठो हाम को मारेगा ? नेई···नेई···हम ठो gentleman हाय···आर आप भी gentleman हाय···

राजाराम—घबराओ नहीं मित्र ! मैं तुम्हें ठीक वैसे ही मारूँगा, जैसे एक gentleman को दूसरे gentleman को मारना चाहिए। तुम अपनी शराब की यह बोतल खत्म करलो···पियो !

डाक्टर—(पीने की कोशिश करता हुआ) वाकी आप ठो हम को मारेगा तो नेई ? हाम···हाम आपका रूपिया नई लेगा···

राजाराम—और पियो ··

डाक्टर—(पीकर बोतल फेंकता है) बाकी हाम को दया···दया···

राजाराम—दया···मूर्ख ! (गोली मारता है। डाक्टर गिरता है, राजाराम उसकी लाश को उठा कर बाहर फेंक आता है)

राजाराम—(लौट कर पिस्तौल को पाकेट में रखता हुआ) बागची मर गया कुत्ते की तरह। इसी तरह और भी सब मरेंगे और अब देखता हूँ, कृष्णा को मुझ से कौन बचाता है···(श्यामल का प्रवेश)

श्यामल—मैं !

राजाराम—श्यामल !

श्यामल—(पिस्तौल निकाल कर) श्यामल नहीं, तुम्हारी मौत! Hands up.!

राजाराम—(हाथ ऊपर उठाता हुआ) तुम्हें ख़ुशी होगी मित्र, कि अब विमल काँटा बन कर तुम्हारे रास्ते में खड़ा न रह सकेगा। मैंने उसे कुचल दिया··· सदा के लिए···और तुम···(आगे बढ़ता है)

श्यामल—Shut up! वहीं खड़े रहो! पाँच सेकेण्ड में मैं तुम्हें गोली मार दूँगा, तब तक तुम अपने ईश्वर का, यदि तुम्हारा कोई ईश्वर हो तो, स्मरण कर लो। एक···

राजाराम—लेकिन···लेकिन श्यामल···तुम भूलते हो, मैंने जो भी कुछ किया है तुम्हारे लिए किया और···

श्यामल—दो···

राजाराम—मैंने तुम्हें रुपये दिये···अपना घर दिया··· तुम्हारे लिए इतना संकट उठाया···सब कुछ किया···

श्यामल—तीन···

राजाराम—और अगर कृष्णा मुझ से विवाह न करना चाहे तो कोई भी हर्ज नहीं, वह तुम्हारी बहन है तो मेरी भी बहन है, क्योंकि···

श्यामल—चार···

राजाराम—श्यामल! श्यामल। सोचो फिर से सोचो··· दया करो···दया···(एकाएक वह श्यामल पर झपटता

है। श्यामल की पिस्तौल छूट कर गिर पड़ती है। राजाराम अपना छूरा निकालता है। श्यामल उसे पकड़ता है। लड़ाई होती है। अन्त में श्यामल राजाराम को पटक कर उसका गला दबाता है। चञ्चला का प्रवेश)

चञ्चला—(श्यामल की गिरी हुई पिस्तौल उठा कर) श्यामल, Hands up! (श्यामल अकचका कर उठता है। चंचला राजाराम की छाती पर हाथ रख कर देखती है) राजाराम !···राजाराम !···

राजाराम—चं···च···ला···तुम आगई···मैं···तो चला···

चंचला—तो फिर मैं किस लिए इस संसार में रह जाऊँगी राजाराम? मुझे भी लेते चलो, मैं भी चलूँगी !

राजाराम—नहीं···न···हीं···तुम जियो···सु··ख···से···

चञ्चला—पगले, पति के साथ मरने में जो सुख मिलेगा, वह मिलेगा वेश्या बन कर जीने में? तुम चलो, मैं भी चलूँ, स्वर्ग में, नरक में, जहाँ भी हम रहेंगे साथ रहेंगे···साथ कर्मों का फल भोगेंगे···साथ···

राजाराम—प···ग···ली···श्यामल···इसे रो···को और क्ष···मा ··(मरता है। चंचला पिस्तौल से आत्महत्या करना चाहती है। श्यामल झपट कर पिस्तौल छीन लेता है)

चञ्चला—नीच! कापुरुष! पति को मार कर पत्नी को उसके साथ मरने से रोकता है? भारत की संतान

होकर सती बन मरनेवाली को वेश्या बन जीने के लिए कहता है ?

श्यामल—चञ्चला !···

चञ्चला—चुप रहो ! आग की ज्वाला, नदी की लहर, तूफ़ान के झोंके को इन कमज़ोर हाथों से रोकने की कोशिश मत करो ! मेरे और मेरे पति के बीच में खड़ा रह सके ऐसा कोई नहीं···न जीवन···न मृत्यु···(जाना चाहती है)

श्यामल—(रोकता हुआ) पर तुम समझती नहीं चञ्चला !

चञ्चला—मैं समझती हूँ या नहीं, यह पूछो भारत की इस जमीन से जो सतियों की राख से ढँकी है, पूछो इस आकाश से जो उनकी चिताओं के धुएँ से भरा है, या नहीं तो जाकर पूछो अपनी कृष्णा से जो समझती है क्या है भारत का स्त्रीत्व··· हट जाओ !···(वेग से जाती है)

श्यामल—चञ्चला ! चञ्चला !···(पीछे दौड़ता है ।)

(परदा गिरता है, फिर उठता है)



चौदहवाँ दृश्य

(स्थान हिमालय के पर्वत-शिखर। संन्यासी लोग हवन कर रहे हैं। हवन समाप्त होता है। मनोहरदास और सोना का प्रवेश। सभी संन्यासी जाते हैं)

मनोहर—(चरण छू कर) गुरुदेव, आज मेरी बच्ची कृष्णा का रेडियो पर भाषण और गान है, आप सुनेंगे तो ?

वृद्ध—अवश्य सुनूँगा वत्स, समय हो गया ?

मनोहर—अभी कुछ विलम्ब है गुरुदेव। तब तक मैं यह अपना अलबम आपको दिखाने के लिए लाया हूँ। आप देखेंगे ?

वृद्ध—इसमें तुम्हारी कृष्णा और विमल के भी चित्र हैं क्या ?

सोना—हाँ, हाँ, उनके भी हैं।

वृद्ध—तब तो अवश्य देखूँगा।

मनोहर—गुरुदेव, यह है कृष्णा···(चित्र दिखाता है)

वृद्ध—वाह, कितनी सौम्यमूर्त्ति है, मानो सजीव कविता हो।

मनोहर—और यह है मेरा विमल।

वृद्ध—विमल···कितना तेजस्वी और फिर भी आँखों में कितना विनय है ! ऐसा पुत्र पाकर किस पिता को गर्व न होगा ?

सोना—इसके बाद श्यामल की तस्वीर है···

मनोहर—रहने दो श्यामल की तस्वीर! गुरुदेव, यह देखिए मेरा चित्र, जब मैं युवक था और पहले पहल कलकत्ते आया था।

वृद्ध—यह चित्र! यह तुम्हारा चित्र है? लेकिन कितना अन्तर है तुममें और इसमें? देखूँ तो··· (गौर से देखता है) ठीक ऐसा ही कोई मनुष्य मैंने कहीं देखा है, ऐसा भ्रम हो रहा है······ठीक ऐसा ही···

मनोहर—हो सकता है गुरुदेव, ऐसा भ्रम तो प्रायः हो जाया करता है···और यह देखिए संसार में जो मेरे लिए सब से अधिक वन्दनीय थे, जिनके कारण मैं करोड़पती बना, वे सेठ हरदत्तराय, जिन्हें डाकुओं ने मार डाला···

वृद्ध—सेठ···क्या कहा?

मनोहर—सेठ हरदत्तराय···

वृद्ध—हरदत्तराय!···हरदत्तराय को तुम जानते थे?

मनोहर—वे मेरे गुरु थे, गुरु से भी बड़े और उन्हीं का लड़का तो है यह विमल···

वृद्ध—विमल सेठ हरदत्तराय का ही लड़का है?

मनोहर—उनका लड़का था गुरुदेव, अब वह मेरा लड़का है।

वृद्ध—तो सेठ हरदत्तराय का लड़का विमल अभी जी रहा है और अब वही तुम्हारा पोष्यपुत्र बना है ?

मनोहर—पर क्या गुरुदेव सेठ हरदत्तराय को जानते थे ?

वृद्ध—हरदत्तराय को ? लेकिन तुम अभी क्या कह रहे थे ? हरदत्तराय से तुम्हारा क्या सम्बन्ध था ?

मनोहर—गुरुदेव, उन्होंने ही मुझे सर्वप्रथम कलकत्ते में व्यापार करने की प्रेरणा दी थी और उन्हीं के साथ मैं ने कलकत्ते की यात्रा की, जब रास्ते में वे मारे गये और···

वृद्ध—मैं समझ गया···हाँ···तो यह विमल उन्हीं का लड़का है, जो अब सयाना होकर ऐसा सुन्दर और सुशील हुआ है ? ऐसा···ऐसा···

मनोहर—हाँ, गुरुदेव, जब वह यहाँ आपके दर्शनों के लिए आयेगा, तो आप उसे देख कर अत्यन्त प्रसन्न होंगे···

सोना—रेडियो का समय हो गया—शुरू करूँ ?

वृद्ध—हाँ !···हाँ ! (मनोहर रेडियो खोलता है । पहले शहनाई की आवाज़ आती है । फिर शहनाई बन्द होती है । आवाज़ आती है—यह है कलकत्ता । अब कुमारी कृष्णा भैरवी में गाएँगी और आपके गाने का विषय है—हिमालय ।)

मनोहर—गुरुदेव, कृष्णा गा रही है !

(वाद्य-संगीत प्रारम्भ होता है। सब तल्लीन हो सुनते हैं। तबतक एकाएक रेडियो में से आवाज़ आती है—

बाबूजी ! बाबूजी ! बाबूजी !···

मैं कृष्णा कलकत्ते से बोल रही हूँ इस खयाल से कि तुम जहाँ भी होगे सुन रहे होगे। विमल को राजाराम ने ज़हर दे दिया है खतरा है कि नौ दिन के अन्दर उनकी मृत्यु हो जायगी···अगर उन्हें देखना चाहते हो तो जल्द आओ··· आवाज़ बन्द हो जाती है)

मनोहर—यह क्या ?

सोना—क्या कहा ?

(रेडियो में से फिर आवाज़ आती है—कलकत्ते का कोई डाक्टर विमल को नहीं बचा सकता···तुम बचा सको तो बचाओ···नहीं तो·· नहीं तो···रेडियो बन्द हो जाता है।)

मनोहर—यह क्या है ? विमल को ज़हर दे दिया राजाराम ने ?···

वृद्ध—लेकिन क्या यह सच है या कोई मज़ाक ?

मनोहर—यह कृष्णा की आवाज़ थी और कृष्णा झूठ नहीं बोल सकती···हाय विमल मेरा बचा !

(बेहोश होता है। वृद्ध पकड़ता है)

* *

*

पन्द्रहवां दृश्य

(स्थान—विमल के मकान का अग्र-भाग । कर्नल सरकार, मेजर गुप्ता और डाक्टर चटर्जी खड़े हैं ।)

सरकार—(अपने औजारों को बक्स में रखते हुए) यह तो सीधा-सादा हार्ट फेलियोर का केस है। क्यों मेजर गुप्ता ?

गुप्ता—लेकिन कर्नल सरकार, मुझे बड़ा आश्चर्य है कि सेठ विमलदासजी को मैं बचपन से देखता आ रहा हूँ, लेकिन आज तक उन्हें दिल की बीमारी कभी हुई ही नहीं। एक बार भी कभी इन्हों ने इस बात की शिकायत नहीं की…और आज अकस्मात इस तरह……डाक्टर चटर्जी आप क्या समझते हैं कि……

चटर्जी—भई, अगर दिल की कोई बीमारी न होती तो आज आठ रोज से ये लोग इतने परेशान क्यों होते और इतने डाक्टरों को दिन-रात घर पर बिठाये क्यों रखते ?

सरकार—भई, जो भी हो मुझे इस घटना का सख्त अफसोस है। सेठ विमलदास कलकत्ते के अमीरों में बस एक ही थे…Very sad indeed !

गुप्ता—लेकिन कर्नल सरकार, आप जो भी कहें, मुझे कुछ और भी संदेह हो रहा है। मेरा खयाल है, कृष्णा देवी ने उस दिन जो रेडियो पर चिल्ला कर कहा था…जहर…

सरकार—कैसी बात आप भी इतने बड़े डाक्टर होकर कहते हैं मेजर गुप्ता? हम लोगों ने एक्सरे किया, खून की जाँच की, अँतड़ी साफ की और क्या-क्या नहीं किया? यह क्या ज़हर का केस हो सकता है? कभी नहीं!

चटर्जी—मैं कहता हूँ, कृष्णा का दिमाग़ ख़राब हो गया है। अगर यह जहर का मामला हो, तो मैं आज से डाक्टरी करना छोड़ दूँ।

सरकार—और मैं कहता हूँ, अगर ऐसा ज़हर भी दुनिया में हो, तो उसकी दवा नहीं। बात सीधी-सादी है। विमलदासजी के मन में संदेह हो गया था कि उन्हें जहर दिया गया है और इसी डर से उनका हार्ट फेल कर गया। इसके सिवा और कोई बात हो ही नहीं सकती…मिस्टर श्यामल!

(श्यामल का प्रवेश। सर में पट्टी बँधी है।)

श्यामल—क्यों डाक्टर?

सरकार—We are very sorry! अब कुछ नहीं किया जा सकता…हम लोगों को इजाजत दीजिये…

चटर्जी—जहाँ तक कोशिश की जा सकती थी की गई···
लेकिन ईश्वर की इच्छा यही थी तो कोई क्या कर सकता है ?

गुप्ता—श्यामल बाबू, हम लोगों को कितना दुःख है, वह हम जाहिर नहीं कर सकते। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति दे···अब चलें···(सब जाना चाहते हैं)

श्यामल—तो क्या आखिर सब कुछ समाप्त ही हो गया ? अब कोई आशा नहीं ?

सरकार—श्यामल बाबू, कोई आशा होती तो क्या हम लोग कुछ उठा रखते ?

चटर्जी—जीवन में बहुत कुछ सहना होता है श्यामल बाबू ! अब आप अपना हृदय कड़ा कर कृष्णा देवी को साहस दिलाइए, नहीं तो उनका क्या हाल होगा ?

गुप्ता—श्यामल बाबू, मरनेवाले को जिलाने वाला अगर कोई दुनिया में होता तो फिर ईश्वर ईश्वर किस लिए होता ? अब बीते हुए को भूल कर आप आनेवाले की सुध लीजिए—अच्छा···(श्यामल फीस के रुपये बढ़ाता है। लेकिन सभी डाक्टर उसे लेने से इन्कार करते हैं। डाक्टर चले जाते हैं। श्यामल उन नोटों को फेंक देता है।)

श्यामल—विमल···एक रोज़ तुमने मुझ से कहा था—तुम प्रतिज्ञा करो, उस रोज़ मैं ने प्रतिज्ञा नहीं की, तुमसे लड़ कर चला आया···और आज मैं कोई

भी प्रतिज्ञा करने को तैयार हूँ, लेकिन तुम रूठ कर चले गये। पर ऐसा नहीं हो सकता···जब मैं लड़ता था, तब तुम मुझे मनाते थे और आज तुम रूठे हो, मैं तुम्हें मनाऊँगा···अगर तुम मेरे पास नहीं आ सकते, तो मैं ही तुम्हारे पास आऊँगा। मैं ने कृष्णा से प्रतिज्ञा की है और उसका पालन करूँगा। अगर विमल की हत्या हुई, तो श्यामल मरेगा और विमल···(पिस्तौल निकाल कर आत्महत्या करना चाहता है। शंकर का प्रवेश। शंकर झपट कर उसका हाथ पकड़ लेता है)

शंकर—श्यामल! विमल की हत्या नहीं हुई है, श्यामल भी नहीं मरेगा···

श्यामल—क्या?

शंकर—ये डाक्टर मूर्ख हैं। विमल अभी मरा नहीं है और देखो उसे बचानेवाला यह आ रहा है,

(मनोहरदास, सोना और वृद्ध संन्यासी का प्रवेश)

श्यामल—बाबूजी!···बाबूजी!···(पैरों पर गिरता है)

मनोहर—उठो बेटा! इन्हें प्रणाम करो। ये हैं मेरे गुरूदेव, सेठ हरदत्तरायजी।

श्यामल—सेठ हरदत्तरायजी?

मनोहर—हाँ, और इनकी जड़ी-बूटियों से ही मेरे ख़ून में से पच्चीस वर्ष का जमा हुआ वह ज़हर निकला,

जिसे कलकत्ते का कोई डाक्टर नहीं निकाल सका और...

श्यामल—और तब विमल को ?

मनोहर—विमल को भी इनकी ही जड़ी-बूटी दी जा रही है...और जिसे ये सभी डाक्टर मुर्दा कह रहे थे, वह अब होश में आकर हँस-बोल रहा है। चलो तुम भी देखलो...

श्यामल—सचमुच ? तब तो आप ही विमल के भगवान हैं! (सेठ हरदत्तराय के पैरों पर गिरता है)

हरदत्तराय—(उसे उठाते हुए) बेटा, मैं तो विमल का पिता हूँ, उसके भगवान तो ये हैं...

श्यामल—लेकिन बाबूजी, आप तो कहा करते थे कि विमल के पिता सेठ हरदत्तरायजी को डाकुओं ने मार कर...

मनोहर—वह लम्बी कहानी है बेटा, पीछे सुनना। अभी चलो विमल के पास। (सब जाते हैं)

(परदे पर लिखा है)

'दूसरे दिन'

(परदा बदलता है।)



सोलहवाँ दृश्य

(स्थान विमल के सोने का कमरा । विमल मसनदों के सहारे लेटा है । बगल में नर्स खड़ी दवा तैयार कर रही है । कृष्णा विमल के पास खड़ी थर्मामीटर देख रही है ।)

विमल—(कृष्णा का हाथ पकड़ कर) कृष्णा, मुझ पर तुम्हारे दो ऋण हैं—एक तो मुझे मृत्यु के द्वार से लौटा लाने का और दूसरे मेरे पच्चीस वर्ष से बिछुड़े हुए पिता को मुझ से ला मिलाने का । क्या जीवन में तुम्हारे इन ऋणों को किसी तरह चुका सकूँगा ?

कृष्णा—हाँ···चुका सकोगे अगर इच्छा हो तो ।

विमल—पर किस तरह कृष्णा ? मेरे पास है ही क्या ?

कृष्णा—तुम्हारे पास···तुम अपने-आप जो हो !

विमल—पर अपने-आपको तो मैं तुम्हें कभी का दे चुका हूँ कृष्णा ! (शंकर का प्रवेश)

शंकर—हाँ, दे तो तुम चुके थे, पर रजिस्ट्री नहीं हुई थी, अब रजिस्ट्री भी हो जायगी । जिस चीज़ को क़ानून रजिस्ट्री कहता है उसी को शास्त्र विवाह कहता है । रजिस्ट्रार के सामने रजिस्ट्री होती है, अग्नि देवता के सामने विवाह, इसमें वकील होते हैं, उसमें पुरोहित, इसमें फ़ीस लगती है, उसमें

दक्षिणा…शास्त्र की बात है। सो कृष्णा बाई, अब तो रजिस्ट्री कराने में बिलम्ब करना मूर्खता है…

कृष्णा—शंकर काका, मुझे ऐसी बातें अच्छी नहीं लगतीं।

शंकर—बेटी, मैं जानता हूँ। हिमालय की लड़की पार्वती भी हिमालय से ऐसे ही कहा करती थी। लेकिन वह होशियार थी। उसने शिव के नाम वारंट कटाया और तीनों लोक छान कर अंत में कैलाश की कंदरा में छिपे हुए शिव को ढूँढ निकाला और फिर विष्णु के इजलास में उन्हें पेश किया और तब इस के बाद तुरत ही रजिस्ट्री हो गई… शास्त्र की बात है। (हरदत्तराय और मनोहरदास का प्रवेश)

मनोहर—शंकर, अपने शास्त्र को अभी बंद करो और विमल और कृष्णा की सगाई की तैयारियाँ करो (कृष्णा जाना चाहती है) बेटी, इधर आओ… (विमल उठना चाहता है) नहीं विमल, अभी उठने की जरूरत नहीं, अभी तुम कमजोर हो।

विमल—(उठता हुआ) नहीं बाबूजी, अब मैं कमज़ोर नहीं रहा और जो थोड़ी कमज़ोरी थी भी वह आपके दर्शनों से दूर हो गई।

मनोहर—(विमल के हाथों में कृष्णा का हाथ देते हुए) विमल, आज पचीस वर्षों की मेरी अभिलाषा पूरी हुई।

उस विराट सत्य के ऊपर बहती हुई प्रकाश की एक पुञ्जीभूत रेखा है, जिस में अपनी आत्मा की किरण को मिला देना ही जीवन की चरम सार्थकता है। संसार के सारे शास्त्र यही कहते हैं और यही···

मनोहर—शंकर, तुमने अपने जीवन में पहली बार एक बात कही, जो सचमुच शास्त्र की बात है, बधाई !

(दोनों गले से लगाते हैं)

(यवनिका-पतन)

* *

*